हिंदू धर्म अथाह सागर की तरह है, जो अनमोल रत्नों से भरा है। आप जितना गहरा गोता लगाएंगे, उतने ही ज्यादा मोती मिलेंगे। - महात्मा गांधी

ऐसे वक्त में, जब वैश्विक शक्ति संतुलन तेजी से बदल रहा है, चीन व अमेरिका की प्रतिस्पर्धा हिंद-प्रशांत क्षेत्र को अनिश्चित बना रही है और आपूर्ति शृंखलाओं के पुनर्गठन की होड़ मची है, तब प्रधानमंत्री मोदी का मलयेशिया दौरा द्विपक्षीय सहयोग की नई संभावनाएं जगाता है।

मलयेशिया में मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मलयेशिया यात्रा केवल एक द्विपक्षीय दौरा नहीं, बल्कि इसे भारत की एक्ट ईस्ट नीति को नए सिरे से गति देने की कोशिश के रूप में देखा जाना चाहिए। ऐसे वक्त में, जब वैश्विक शक्ति संतुलन तेजी से बदल रहा है, चीन व अमेरिका की प्रतिस्पर्धा हिंद-प्रशांत क्षेत्र को अनिश्चित बना रही है और आपूर्ति शृंखलाओं के पुनर्गठन की होड़ मची है, तब मलयेशिया जैसे देश भारत के लिए रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण हो जाते हैं। खास बात यह है कि मलयेशियाई प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम के निमंत्रण पर हुई यह यात्रा 2024 में दोनों देशों के बीच संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक उन्नत करने के बाद पहली उच्च-स्तरीय यात्रा थी, जिसमें न केवल द्विपक्षीय व्यापार, रक्षा, सेमीकंडक्टर और डिजिटल सहयोग को नई गति दी गई है, बल्कि आतंकवाद विरोधी संकल्प और क्षेत्रीय स्थिरता पर भी साझा प्रतिबद्धता रेखांकित हुई है। भारत और मलयेशिया के संबंध ऐतिहासिक रूप से गहरे रहे हैं। प्राचीन काल में समुद्री व्यापार, बौद्ध व हिंदू सांस्कृतिक प्रभाव और कालांतर में औपनिवेशिक दौर में भारतीय प्रवासियों की बड़ी उपस्थिति ने इन रिश्तों की नींव रखी। आज मलयेशिया में करीब 29 लाख भारतीय मूल के लोग रहते हैं, जो वहां की अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इनके लिए ओसीआई (ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया) कार्ड की पात्रता बढ़ाए जाने और जल्द ही भारतीय यूपीआई सिस्टम मलयेशिया में शुरू होने की घोषणाएं अहम हैं। नहीं भूलना चाहिए कि मलयेशिया आसियान का एक प्रभावशाली सदस्य है। भारत इस समय आसियान के साथ अपने मुक्त व्यापार समझौते में कुछ बदलाव लाने की कोशिश कर रहा है, जिसके लिए मलयेशिया का समर्थन अहम साबित हो सकता है। भारत लंबे समय से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नियम-आधारित व्यवस्था, समुद्री सुरक्षा और स्वतंत्र नौवहन का समर्थक रहा है। मलयेशिया के साथ रक्षा सहयोग और खुफिया साझेदारी मजबूत करना इसी रणनीति का हिस्सा है, जो चीन को सीधी चुनौती देने के बजाय संतुलन बनाने की भारतीय सोच को भी दर्शाता है। भारत और मलयेशिया के बीच 2025 में द्विपक्षीय व्यापार 18.59 डॉलर तक पहुंच गया, जिसे और आगे बढ़ाने पर सहमति बनना अहम है। स्थानीय मुद्राओं में व्यापार पर बनी सहमति वैश्विक स्तर पर डॉलर पर निर्भरता घटाने की व्यापक रणनीति का हिस्सा है। सेमीकंडक्टर क्षेत्र, जिसमें मलयेशिया पहले से ही एक मजबूत आधार रखता है, में सहयोग भारत की मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया पहल को और सशक्त बना सकता है। जरूरी है कि प्रधानमंत्री मोदी के दौरे से निकले समझौते और संदेशों का समयबद्ध क्रियान्वयन हो, ताकि ये महज प्रतीकात्मक बनकर न रह जाएं।

अंततः सनातन के आदर्श क्या हैं

यह कोई कठोर नियमावली नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है, जो व्यक्ति को स्वतंत्रता देता है कि वह अपने स्वभाव, समय और परिस्थिति के अनुसार अपना मार्ग चुन सके। भक्ति, ज्ञान, कर्म या योग-कोई भी रास्ता चुना जा सकता है।

आचारः प्रथमो धर्मः इत्येतद् विदुषां वचः।
तस्माद् रक्षेत् सदाचारं प्राणेभ्योऽपि विशेषतः॥

हमारी सनातन सभ्यता-संस्कृति में आचरण को प्रथम स्थान दिया गया है। आचरण के अभाव में बड़े नाम वाले व्यक्ति या संस्थाएं ही नहीं, देवराज इंद्र से लेकर रावण तक की भी सत्ता चली गई।

सनातन-सनातन के नाम का नारा लगाने से हिंदू धर्म को कितना लाभ हुआ है, इसका सर्वमान्य निष्कर्ष अभी नहीं निकला है। विशेष रूप से, जब हम सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों को ही न जानते हों और सनातन-सनातन के नारे लगते रहें, पर हमारा व्यक्ति, व्यवस्था व सत्ता के आचरण से कोई लेना-देना नहीं हो, तो ये थोथी नारेबाजी ही होगी। इसका सनातन धर्म से दूर-दूर तक कोई नाता नहीं होगा।

विनीत नारायण
पत्रकार व सामाजिक कार्यकर्ता

सनातन धर्म ही हिंदू धर्म है। इसके मूल सिद्धांत गहन और सार्वभौमिक हैं। ये सिद्धांत वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, मनुस्मृति और अन्य शास्त्रों से निकले हैं। सनातन धर्म कोई एक किताब या संस्थापक पर आधारित नहीं है, बल्कि यह शाश्वत सत्य की खोज के लिए समर्पित वैयक्तिक और सामाजिक उत्कर्ष को प्राप्त करने के लिए जीवन जीने की व्यवस्था है। यह जाति, वर्ण, भौगोलिक परिस्थिति और देशकाल के आधार पर किसी से भेद नहीं करता।

सनातन धर्म के सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत मूल पहला सिद्धांत है : ब्रह्म सत्यं यानी केवल एक परम सत्य है – ब्रह्म या परमात्मा, जो निराकार रूप में सर्वव्यापी चेतना है और जीवात्मा से अभिन्न है। यह अद्वैत दर्शन है और द्वैतवाद में परमात्मा साकार रूप में है और वह जीव से एक होकर भी भिन्न है।

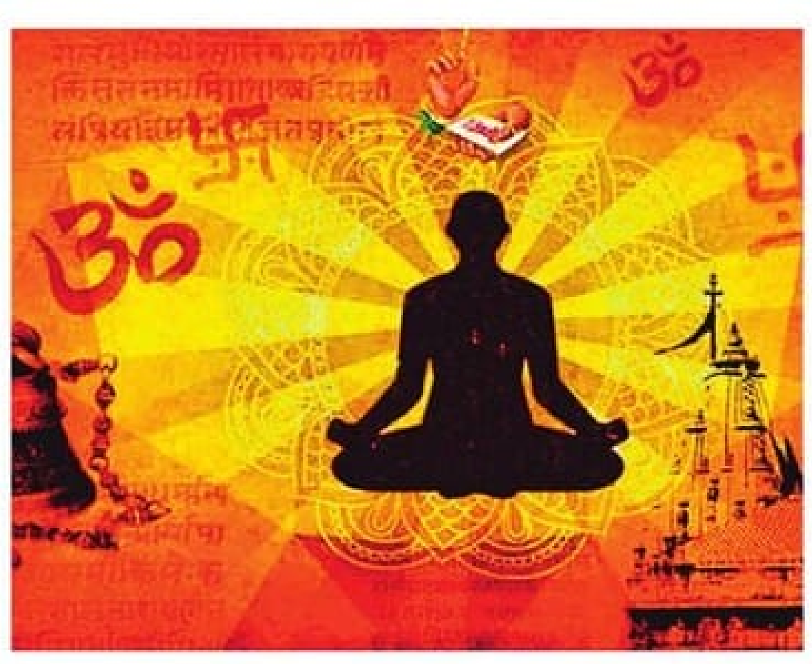

जैसे नमी वायु में सर्वत्र व्याप्त है, लेकिन दिखाई नहीं देती। यह उसका निराकार स्वरूप है। जब तापक्रम बहुत गिर जाता है, तो यही नमी सघन होकर ओस, वर्षा, धुंध या बर्फ बनकर दिखने लगती है। यह उसका साकार रूप है।

भक्त की भावना जब इतनी प्रबल हो जाती है कि उसे अपने आराध्य को देखे बिना चैन नहीं पड़ता, तब निराकार ब्रह्म साकार रूप धारण करके अपने भक्त को दर्शन देते हैं।

सनातन धर्म का दूसरा सिद्धांत है : आत्मा अजर-अमर अविनाशी, शाश्वत और जन्म-मृत्यु से परे है। शरीर नश्वर है, आत्मा नहीं। *"नैनं छिन्दंति शस्त्राणि"* (गीता 2.20)

तीसरा कर्म का सिद्धांत है : जैसा कर्म करोगे, वैसा फल मिलेगा (कारण-कार्य का नियम)। अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा-जोखा जीवन-दर-जीवन चलता है।

चौथा है पुनर्जन्म का सिद्धांत यानी संसार चक्र। आत्मा कर्मों के अनुसार बार-बार नए शरीरों में आती रहती है। जन्म-मरण का यह चक्र तब तक चलता है, जब तक मोक्ष न मिले।

पांचवां है मोक्ष या मुक्ति का सिद्धांत : जन्म-मृत्यु के चक्र से पूर्ण मुक्ति। ब्रह्म में लीन होना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है। चार पुरुषार्थों में सबसे ऊंचा लक्ष्य है: मोक्ष, शेष हैं धर्म, अर्थ व काम।

छठा सिद्धांत है *अहिंसा परमो धर्मः* यानी अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। मन, वचन, कर्म से सभी प्राणियों में एक ही आत्मा को देखना और किसी के प्रति हिंसा न करना।

सातवां है: *सत्यं वद, धर्मं चर* यानी सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो। यह महावाक्य *'तैत्तिरीय उपनिषद'* से लिया गया है।

आठवां सिद्धांत है अपने-अपने धर्म का आचरण करना। धर्म क्या है? कर्तव्य, नैतिकता, न्याय। सामाजिक व्यवस्था के आधार हैं : व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व।

नौवां सिद्धात है *'वसुधैव कुटुंबकम्'* यानी समस्त विश्व एक परिवार है। इसलिए सर्व प्राणियों में एकत्व की भावना।

दसवां सिद्धांत है : *'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'*। सत्य एक है, विद्वान उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। इसलिए शैव, वैष्णव, शाक्त, गाणपत्य, सौर अथवा स्मार्त आदि एक ही सत्य की ओर ले जाते हैं।

सनातन धर्म के अन्य महत्वपूर्ण सहायक सिद्धांत हैं : पंच महायज्ञ– देव, पितृ, भूत, मनुष्य और ब्रह्म यज्ञ- ये दैनिक जीवन के कर्तव्य हैं यम-नियम, जो पतंजलि योग सूत्र के अनुसार हैं : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि। फिर हैं त्रिगुण यानी : सत्त्व, रज, तम। प्रकृति के ये तीन गुण, जो जीवन को प्रभावित करते हैं।

संक्षेप में कहें, तो सनातन धर्म का सार है : एक परम सत्य की खोज, आत्मा की अमरता को समझना, कर्मों के अनुसार जीवन जीना और अंत में उस सत्य में लीन हो जाना या मोक्ष प्राप्त करना।

यह कोई कठोर नियमावली नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है, जो व्यक्ति को स्वतंत्रता देता है कि वह अपने स्वभाव, समय और परिस्थिति के अनुसार अपना मार्ग चुन सके। भक्ति, ज्ञान, कर्म या योग-कोई भी रास्ता चुना जा सकता है।

सनातन धर्म को मानने वालों को मार्गदर्शन देने के लिए आदि शंकराचार्य ने भारत में चार पीठों की स्थापना की थी। ये चारों शंकराचार्य सनातन धर्म के सर्वोच्च धर्माचार्य हैं। इन्हें हजारों वर्षों से भगवान शंकर के रूप में पूजा जाता है।

सभी संप्रदाय के आचार्य व अनुयायी सदियों से इन्हें अपने गुरु के रूप में सम्मान देते आए हैं। किंतु आज कई ऐसे भी मिल जाएंगे, जो स्वघोषित रूप से अपने नाम के पहले शंकराचार्य लगा लेते हैं, हालांकि उन्हें कोई शास्त्रीय मान्यता प्राप्त नहीं है। यह दुर्भाग्य है। किंतु सच यह भी है कि भारत की जनता ने सदैव आचरण को ही स्वीकार किया है। मुखौटा अधिक समय तक नहीं रहता है। यही नैतिकता की सर्वमान्य शक्ति है।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

हेनरी फोर्ड

उत्साह जीवन की वह आधारशिला है, जिस पर आशाएं टिकती हैं और सपने आकार लेते हैं। जब तक जीवन में उत्साह जीवित है, तब तक संघर्ष अर्थपूर्ण और भविष्य संभावनाओं से भरा हुआ है।

उत्साह संभावनाओं का संचार करता है

उत्साह मनुष्य की चेतना में प्रवाहित होने वाली वह सजीव शक्ति है, जो उसके विचारों को दिशा देती है और उसके संकल्पों को गति प्रदान करती है। यह वही तत्व है, जो साधारण इच्छाओं को महान स्वप्नों में और सामान्य प्रयासों को ऐतिहासिक उपलब्धियों में परिवर्तित कर देता है। उत्साह मनुष्य के व्यक्तित्व में भीतर से प्रकट होता है। यह आंखों की चमक में, वाणी की दृढ़ता में और चाल की स्वाभाविक आत्मविश्वासपूर्ण लय में झलकता है। जब कोई व्यक्ति उत्साह से परिपूर्ण होता है, तो उसके शब्द केवल ध्वनि नहीं रहते, वे प्रभाव बन जाते हैं।

उसके हाथों की पकड़ केवल शारीरिक बल नहीं दर्शाती, बल्कि निश्चय की अडिगता का संकेत देती है। ऐसा व्यक्ति परिस्थितियों को अपने संकल्प के अनुसार ढालने का साहस रखता है। सामान्य जीवन में उत्साह का महत्व और भी अधिक है, क्योंकि अधिकांश लोग असाधारण परिस्थितियों में नहीं, बल्कि साधारण संघर्षों के बीच अपने सपनों को साकार करने का प्रयास करते हैं। रोजमर्रा की जिम्मेदारियां, आर्थिक दबाव, सामाजिक अपेक्षाएं और बार-बार मिलने वाली विफलताएं व्यक्ति के मन को थका देती हैं। ऐसे में यदि उत्साह न हो, तो मनुष्य भीतर से टूटने लगता है। उत्साह ही वह शक्ति है, जो उसे यह विश्वास दिलाती है कि कठिनाइयां स्थायी नहीं होतीं और प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाते। उत्साह केवल सफलता के क्षणों में नहीं, बल्कि विफलता के समय भी अपनी वास्तविक परीक्षा देता है।

परिश्रम का प्रतिफल तुरंत दिखाई नहीं देता, तो आत्मविश्वास डगमगाने लगता है, तब उत्साह ही मनुष्य को पुनः खड़ा करता है। यह उसे सिखाता है कि गिरना कमजोरी नहीं है, बल्कि गिरकर उठने का साहस ही जीवन की वास्तविक विजय है। उत्साह के बिना ज्ञान निष्क्रिय हो जाता है और अनुभव बोझ में बदल जाता है। समाज में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहां साधारण पृष्ठभूमि से आए लोगों ने केवल अपने उत्साह के बल पर असाधारण उपलब्धियां प्राप्त कीं। उनके पास न तो विशेष संसाधन थे और न ही अनुकूल परिस्थितियां, परंतु उनके भीतर सीखने की तीव्र इच्छा और आगे बढ़ने की जिद थी। यही उत्साह उन्हें बार-बार प्रयास करने, स्वयं को सुधारने और अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान बने रहने की प्रेरणा देता रहा। उत्साही व्यक्ति हर जगह परिवर्तन की शुरुआत करता है। यह हमें भय से मुक्त करता है और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की शक्ति देता है। उत्साह से किया गया छोटा-सा प्रयास भी समय के साथ बड़ा परिणाम दे सकता है, क्योंकि उसमें निरंतरता और समर्पण निहित होता है। उत्साह जीवन की वह आधारशिला है, जिस पर आशाएं टिकती हैं और सपने आकार लेते हैं। यही वह खमीर है, जो विचारों को उठान देता है और मनुष्य को उसकी सीमाओं से आगे जाने का साहस प्रदान करता है। जब तक जीवन में उत्साह जीवित है, तब तक संघर्ष अर्थपूर्ण है और भविष्य संभावनाओं से भरा हुआ है।

संघर्षों को अवसर में बदलें

सूत्र

उत्साह साधारण मनुष्य को भी असाधारण बना सकता है। यह कठिन परिस्थितियों में आशा का दीप जलाए रखता है और निराशा के क्षणों में भी आगे बढ़ने का साहस देता है। जो व्यक्ति अपने भीतर उत्साह बनाए रखता है, वही संघर्षों को अवसर में बदलकर जीवन में सच्ची सफलता प्राप्त करता है।

दूसरा पहलू

फरवरी के पहले सप्ताह में मनाया जाने वाला इम्बोल्क दुनिया के सबसे प्राचीन वसंत-स्वागत उत्सवों में से एक है।

फरवरी में वसंत और प्राचीन सेल्टिक उत्सव

जैसे-जैसे दिन लंबे होने लगते हैं और अंधेरी सर्द रातें पीछे छूटती हैं, आयरलैंड और स्कॉटलैंड में हजारों लोग प्रकाश की वापसी का जश्न मनाने के लिए इकट्ठा होते हैं। फरवरी के पहले सप्ताह में मनाया जाने वाला इम्बोल्क दुनिया के सबसे प्राचीन वसंत-स्वागत उत्सवों में से एक है। यह सेल्टिक परंपरा नवीकरण, जन्म और प्रकृति के पुनर्जागरण का प्रतीक माना जाता है, जिसमें आग और रोशनी को शुद्धिकरण, उर्वरता और नई शुरुआत के संकेत के रूप में देखा जाता है।

इम्बोल्क शीत अयनांत (यूल) और वसंत विषुव (ओस्टारा) के बीच पड़ता है। यह वह कालखंड है, जब ठंड की पकड़ ढीली होने लगती है और धरती में जीवन के पहले संकेत उभरते हैं। इम्बोल्क का सबसे पुराना उल्लेख आयरिश साहित्य में मिलता है, जिसे आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के बीच लिखित रूप दिया गया माना जाता है। यह मूलतः मौखिक कथाओं का संकलन था, जिन्हें मध्ययुगीन लिपिकों ने दर्ज किया। इन कथाओं में इम्बोल्क को वसंत के आरंभ और पशुपालन से जुड़े संकेतों, जैसे भेड़ों के दूध देने से जोड़ा गया है। नियो-पैगन कैलेंडर के व्हील ऑफ द ईयर में कुल आठ पर्व होते हैं। इनमें चार ऋतु परिवर्तन से जुड़े हैं और चार क्रॉस-क्वार्टर या अग्नि उत्सव इम्बोल्क, बेल्टेन, लुगनसाध और सैम्हेन हैं। ये हर अयनांत और विषुव के बीच के मध्य बिंदु को चिह्नित करते हैं।

इम्बोल्क याद दिलाता है कि लंबी सर्दी के बाद जीवन फिर से करवट लेता है और हर साल की तरह, वसंत की उम्मीद लौट आती है।

इम्बोल्क शीत अयनांत (यूल) और वसंत विषुव (ओस्टारा) के बीच पड़ता है। यह वह कालखंड है, जब ठंड की पकड़ ढीली होने लगती है और धरती में जीवन के पहले संकेत उभरते हैं।

इम्बोल्क इन्हीं में से पहला अग्नि उत्सव है, जो वसंत की दस्तक का संकेत है। इम्बोल्क का केंद्र देवी ब्रिजिड हैं। देवताओं के प्रमुख डाग्डा की पुत्री। उन्हें ट्रिपल गॉडेस के रूप में जाना जाता है। समय के साथ देवी ब्रिजिड का रूपांतरण सेंट ब्रिजिड के रूप में हुआ, जो सेंट पैट्रिक और सेंट कोलंबा के साथ आयरलैंड के संरक्षक संतों में गिने जाते हैं। सेंट ब्रिजिड्स डे भी फरवरी के पहले सप्ताह में ही मनाया जाता है। आज आयरलैंड में इम्बोल्क और सेंट ब्रिजिड्स डे के कई आयोजन आपस में घुल-मिल गए हैं। आयरलैंड और स्कॉटलैंड के बाहर भी इम्बोल्क विक्कन, ड्रुइड और अन्य आध्यात्मिक समुदायों में मनाया जाता है।

आधुनिक परंपराओं में आत्म-चिंतन, नवीकरण और वर्ष के लिए संकल्प तय करना केंद्रीय विषय हैं। लोग यूल पर तय किए गए इरादों के प्रतीक रूप में बीज बोते हैं और पौधे की वृद्धि के साथ अपने संकल्पों को संजोने का संकल्प लेते हैं। इम्बोल्क से जुड़ा सबसे बड़ा उत्सव आयरलैंड के काउंटी किल्डेयर में होता है, जहां सेंट ब्रिजिड ने अपनी नगरी स्थापित की थी। आग, प्रकाश और प्रकृति के संकेतों से बुना इम्बोल्क आज भी याद दिलाता है कि लंबी सर्दी के बाद जीवन फिर से करवट लेता है और हर साल की तरह, वसंत की उम्मीद लौट आती है।

-संजय पांडे

आंकड़े

दुग्ध उत्पादन में अव्वल

आज दूध केवल पोषण का स्रोत ही नहीं, बल्कि कई देशों की अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी बन चुका है। दुग्ध उत्पादन में भारत विश्व का नेतृत्व कर रहा है।

भारत	25
अमेरिका	10
पाकिस्तान	7
चीन	5
ब्राजील	4

आंकड़े दुग्ध उत्पादन करने वाले देशों के प्रतिशत में। | स्रोत : FAO

भक्त को भक्ति में लीन देखकर साक्षात भगवान विष्णु ने नाई का रूप धारण किया और हाथ में हजामत का झोला लेकर महल पहुंचे। भक्त चकित रह गया।

चतुर्भुज रूप की झलक

भक्त सेन जी महाराज रीवा नरेश के राज्य में शाही नाई थे। वे जितने कुशल अपने कार्य में थे, उससे कहीं अधिक उनकी निष्ठा ईश्वर की भक्ति में थी। वह प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में उठकर सत्संग और भजन-कीर्तन करते थे, इसके बाद ही राजकार्य के लिए प्रस्थान करते थे।

एक दिन जब सेन जी प्रभु की भक्ति में पूरी तरह लीन थे, उन्हें समय का भान ही नहीं रहा। उधर राजा उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। भक्त को भक्ति में लीन देखकर साक्षात भगवान विष्णु ने सेन नाई का रूप धारण किया और हाथ में हजामत का झोला लेकर महल पहुंच गए। 'छद्म' सेन ने राजा के केश बनाए और उनके शरीर की मालिश की। भगवान के स्पर्श से राजा को एक अलौकिक आनंद की अनुभूति हुई।

जब भजन समाप्त हुआ, तो भक्त सेन को अपनी भूल का एहसास हुआ। वह क्षमा मांगने के उद्देश्य से दौड़ते हुए दरबार पहुंचे। राजा ने उन्हें देखते ही प्रसन्नता से गले लगा लिया और कहा, 'सेन! आज तुमने जो मालिश की, उससे मेरा मन हल्का हो गया और चिंता मुक्त महसूस कर रहा हूं।'

अंतर्यात्रा
संकलित

सेन जी चकित रह गए। जब उन्होंने तेल के पात्र में भगवान के चतुर्भुज रूप की झलक देखी, तो समझ गए कि उनके आराध्य ने उनकी लाज रखने के लिए स्वयं नाई का काम किया। ईश्वर अपने भक्त के योग-क्षेम का वहन स्वयं करते हैं और प्रेम के वशीभूत होकर छोटे से छोटा कार्य करने में भी संकोच नहीं करते।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 10 फरवरी, 1964

पाकिस्तान में बसे हिंदुओं की रक्षा व पुनर्वास की मांग

पाकिस्तान में बसे हिन्दुओं की रक्षा व शरणार्थियों के पुनर्वास की मांग
जनसंघ ने पूर्व बंगाल दिवस मनाया

जनसंघ द्वारा 'पूर्व बंगाल दिवस' के उपलक्ष्य में कहा गया कि भारत सरकार पूर्वी पाकिस्तान में रहने वाले हिंदुओं की सुरक्षा के लिए कदम उठाए। यदि सरकार उनकी रक्षा नहीं कर सकती, तो उन्हें भारत में बसने के लिए भूमि दे।

रेपो दर पर महंगाई का साया

चूंकि अभी अर्थव्यवस्था मजबूत है, इस लिहाज से रेपो दर को यथावत रखने का निर्णय पूरी तरह से सही है।

सतीश सिंह

मुद्दा

महंगाई को चार फीसदी के लक्ष्य पर स्थिर रखने की प्रतिबद्धता, खाद्य कीमतों में उतार-चढ़ाव और अनिश्चित वैश्विक आर्थिक माहौल के कारण और विकास की रफ्तार को बनाए रखने के लिए सतर्क रुख अपनाते हुए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने छह फरवरी, 2026 को नीतिगत ब्याज दर को 5.25 फीसदी के स्तर पर अपरिवर्तित रखा। रिजर्व बैंक का प्राथमिक लक्ष्य महंगाई को नियंत्रित करना है। इसलिए रिजर्व बैंक ने फिलहाल दरों को कम न करने का निर्णय लिया, ताकि महंगाई और न बढ़े।

दुनिया भर में आर्थिक अस्थिरता और भू-राजनीतिक तनावों के कारण अर्थव्यवस्था पर लगातार दबाव बना हुआ है। डॉलर के मुकाबले रुपये की अस्थिरता और बॉन्ड यील्ड के दबाव के कारण भी केंद्रीय बैंक ने रेपो दर में कटौती करने से गुरेज किया।

दिसंबर, 2025 में रिजर्व बैंक ने रेपो दर में 0.25 फीसदी की कटौती की थी। वैसे, 2025 की शुरुआत से

रिजर्व बैंक नीतिगत दरों में 125 आधार अंकों की कटौती कर चुका है, लेकिन अब तक बैंकों ने इसका पूरा फायदा ग्राहकों को नहीं दिया है, क्योंकि अब भी नए ऋणों में आधार अंकों की कटौती करना शेष है। रिजर्व बैंक द्वारा नीतिगत दरों को यथावत रखने के बाद भी उधारी दरों में कटौती की गुंजाइश बनी हुई है। नीतिगत दरों में कटौती नहीं करने के बावजूद जरूरत पड़ने पर रिजर्व बैंक नकद आरक्षित अनुपात (सीआरआर) में कटौती करके और ओपन मार्केट ऑपरेशंस (ओएमओ) के जरिये बैंकिंग प्रणाली की तरलता बढ़ा सकता है। उल्लेखनीय है कि केंद्रीय बैंक 29 जनवरी, 2026 को हुई नीलामी सहित, ओएमओ के जरिये रिजर्व बैंक बैंकिंग प्रणाली में लगभग 1.5 लाख करोड़ रुपये डाल चुका है। भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास की गति अच्छी है। केंद्रीय बैंक ने मौद्रिक समीक्षा के दौरान वित्त वर्ष 2026 के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के वृद्धि अनुमान को 7.3 फीसदी से बढ़ाकर 7.4 फीसदी कर दिया है, जबकि वित्त वर्ष 2027 की पहली तिमाही में इसके 6.9 फीसदी रहने का अनुमान जताया है, जो इसके पहले 6.7 फीसदी था, वहीं, वित्त वर्ष 2027 की दूसरी तिमाही में जीडीपी के सात फीसदी रहने का अनुमान जताया है, जो पहले 6.8 फीसदी था। इसके अलावा, हाल ही में अमेरिकी सरकार ने टैरिफ को घटाकर 18 फीसदी कर दिया है, जिससे निर्यात में इजाफा, आर्थिक गतिविधियों में तेजी, व्यापार घाटे में कमी आने, विदेशी मुद्रा में इजाफा होने की उम्मीद है, जिससे अर्थव्यवस्था में और मजबूती आएगी।

रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2026 के दौरान महंगाई दर के 2.1 फीसदी रहने का अनुमान जताया है, जो पहले दो फीसदी थी। वहीं, वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में इसके 3.2 फीसदी रहने का अनुमान जताया है, और वित्त वर्ष 2027 की पहली तिमाही के दौरान महंगाई के चार फीसदी रहने का अनुमान जताया गया है।

महंगाई के कारण लोगों की क्रय शक्ति में कमी, जीवनयापन की लागत में वृद्धि, और बचत के वास्तविक मूल्य में गिरावट आती है। इसका सबसे अधिक असर गरीबों पर पड़ता है, क्योंकि उन्हें बुनियादी जरूरतों, जैसे भोजन और स्वास्थ्य के मद में ज्यादा खर्च करना पड़ता है। यह आर्थिक विकास को भी बाधित करती है और कंपनियों के मुनाफे को भी कम करती है। महंगाई दर के जमा दर से अधिक होने पर बैंक में जमा पैसों की वास्तविक कीमत घट जाती है और भविष्य के लिए जमा की गई पूंजी कम हो सकती है और बुढ़ापे में वित्तीय संकट पैदा हो सकता है।

रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, जनवरी, 2026 में, भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की ऋण वृद्धि दर धीमी होकर वर्ष-दर-वर्ष के आधार पर 13.1 फीसदी रह गई, जो दिसंबर, 2025 में 14.5 फीसदी थी। वहीं, पांच जनवरी, 2026 को खत्म हुए पखवाड़े तक जमा वृद्धि दर कम होकर वर्ष-दर-वर्ष के आधार पर 10.6 फीसदी रह गई। इस तरह, इस अवधि में बैंक जमा में लगभग 3 लाख 57 हजार करोड़ रुपये की कमी आई, जिससे क्रेडिट-डिपॉजिट (सीडी) अनुपात रिकॉर्ड 82.2 फीसदी के उच्च स्तर पर पहुंच गया। इसलिए अभी बैंक तरलता की कमी का सामना कर रहे हैं और उन्हें जरूरतमंदों को ऋण देने में मुश्किलें आ रही हैं।

कुल मिलाकर, महंगाई आमजन और विकास की राह में एक बहुत बड़ी बाधा है। चूंकि, आगामी महीनों में इसमें तेजी आने की आशंका है, इसलिए, रिजर्व बैंक ने रेपो दर को यथावत रखा है। बैंक जमा में लगातार कमी आने के कारण बैंक पूंजी की भारी कमी का सामना कर रहे हैं। इसलिए ऋण वृद्धि दर में भी कमी आई है। अभी भले ही, केंद्रीय बैंक ने रेपो दर में कटौती नहीं की है, पर दूसरे विकल्पों यानी सीआरआर और ओएमओ के जरिये वह बैंकिंग प्रणाली में तरलता बढ़ा सकता है। चूंकि अभी अर्थव्यवस्था मजबूत है, इसलिए, महंगाई और विकास दर के बीच संतुलन बनाकर रखा जा सकता है। इस लिहाज से रिजर्व बैंक के रेपो दर को यथावत रखने के निर्णय को पूरी तरह से सही कहा जा सकता है।

60 फीसदी कामगारों को उम्मीद...नई श्रम संहिता से सुधरेंगी कार्य स्थितियां

सर्वे में दावा...एक अप्रैल से लागू होने वाली नई व्यवस्था से काम के घंटों के नियमन में होगा सुधार

अमर उजाला ब्यूरो/एजेंसी

नई दिल्ली। देश में चार नए श्रम कानून के लागू होने से श्रमिकों को मजबूत संरक्षण, नियमों के सरल अनुपालन और कामकाज की स्थितियां बेहतर होने की उम्मीद है। एक सर्वे में दावा किया गया है कि करीब 60 फीसदी श्रमिकों का मानना है कि नए श्रम कानूनों से कार्यस्थलों पर कामकाज की स्थितियां पूरी तरह सुधरेंगी। वहीं, 63 फीसदी श्रमिकों को उम्मीद है कि काम के घंटों के नियमन में सुधार आएगा।

यह सर्वे नोएडा स्थित वीवी गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान (वीवीजीएनएलआई) ने किया है, जो श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के तहत आने वाला स्वायत्त संस्थान है। मंत्रालय ने कहा, श्रम संहिताओं का कार्यान्वयन : धारणा आधारित विश्लेषण शीर्षक वाले इस सर्वे से पता चलता है कि इन सुधारों को लेकर श्रमिकों एवं नियोक्ताओं के बीच विश्वास और सकारात्मकता बढ़ी है।

केंद्र सरकार ने पिछले वर्ष 21 नवंबर को चार श्रम कानूनों को अधिसूचित किया था और 31 दिसंबर, 2025 को नियमों के मसौदे पर सुझाव मांगे थे। सरकार का इरादा एक अप्रैल, 2026 से इन चारों कानूनों को पूरी तरह प्रभावी बनाने का है। सर्वे 5,720 श्रमिकों और 715 नियोक्ताओं से बातचीत पर आधारित है।

64% श्रमिकों को वेतन में पारदर्शिता आने की उम्मीद

आय सुरक्षा के मोर्चे पर 64 फीसदी श्रमिकों को वेतन में पारदर्शिता और 54 फीसदी को समय पर भुगतान की उम्मीद है। ***सामाजिक सुरक्षा के संबंध में 68 फीसदी कामगारों ने ई-श्रम और कल्याण बोर्ड के माध्यम से सुविधाओं तक आसान पहुंच की सराहना की है।***

- 63 फीसदी श्रमिक मानते हैं कि नए श्रम कानूनों से अनुबंध, प्रवासी एवं गिग या अस्थायी कर्मचारियों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ उठाना और भी आसान हो जाएगा।

नियोक्ताओं ने भी माना...कारोबार के लिए महत्वपूर्ण

सर्वे के मुताबिक, नए श्रम कानून से श्रमिकों के साथ नियोक्ताओं को भी बेहतरी की उम्मीद है। 76 फीसदी नियोक्ताओं ने कहा, इससे कार्यबल में लचीलापन आएगा, जो कारोबार के लिए महत्वपूर्ण है। नियोक्ताओं के दृष्टिकोण से करीब 64 फीसदी का मानना है कि निश्चित अवधि का रोजगार उनके कारोबारी मॉडल के लिए उपयुक्त है। 64 फीसदी को उम्मीद है कि वेतन भुगतान के समयबद्ध नियम कार्यस्थल पर अनुशासन को बढ़ावा देंगे।

- **73 फीसदी नियोक्ताओं** ने लंबी अवधि में नियमों के अनुपालन के सरल होने का अनुमान जताया है। 62 फीसदी इस बात पर सहमत हैं कि नई व्यवस्था से श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा का दायरा बढ़ेगा।
- **करीब 73 फीसदी नियोक्ताओं** का मानना है कि नए कानून से नियमों के अनुपालन की जटिलताएं कम होंगी और प्रक्रियाएं सरल हो जाएंगी।

महिला कर्मचारियों को संरक्षण

संस्थान के सर्वे में दावा किया गया है कि एक अप्रैल, 2026 से लागू होने वाले चार नए श्रम कानूनों से 60 फीसदी श्रमिकों के लिए छुट्टियों के प्रावधानों में सुधार होगा। साथ ही, करीब 66 फीसदी कामगारों का मानना है कि सुरक्षा और परिवहन से जुड़ी अनिवार्यताओं की वजह से महिला कर्मचारियों को कार्यस्थल पर बेहतर संरक्षण मिल सकेगा।

समावेशी विकास को बढ़ावा देना है लक्ष्य : ये निष्कर्ष श्रम संहिताओं के उस उद्देश्य को रेखांकित करते हैं, जिसका लक्ष्य सभी के लिए सामाजिक सुरक्षा, सम्मानजनक कार्य और समावेशी विकास को बढ़ावा देना है। **-मनसुख मांडविया, केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री**

एमएसई : गारंटीमुक्त ऋण की सीमा 25 लाख रुपये तक बढ़ी

आरबीआई ने कर्ज सीमा बढ़ाने के लिए नियमों में किया संशोधन एक अप्रैल, 2026 से होंगे लागू

नई दिल्ली। आरबीआई ने सोमवार को कहा, बैंक बेहतर पृष्ठभूमि और मजबूत वित्तीय स्थिति वाली सूक्ष्म एवं लघु इकाइयों (एमएसई) को 25 लाख रुपये तक का गारंटीमुक्त ऋण दे सकते हैं। इसके अलावा, बैंक जहां लागू हो वहां, क्रेडिट गारंटी योजना के कवर का लाभ भी उठा सकते हैं।

केंद्रीय बैंक ने इसके लिए सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र को ऋण से संबंधित निर्देशों में संशोधन किया है। ये संशोधित निर्देश एक अप्रैल, 2026 से प्रभावी होंगे।

आरबीआई ने बताया, मौजूदा नियमों में संशोधन कर सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसई) के लिए बिना गारंटी वाले ऋण की अनिवार्य सीमा को बढ़ाकर 20 लाख रुपये कर दिया गया है। संशोधित निर्देशों में यह भी स्पष्ट किया गया है कि अगर ऋण लेने वाला व्यक्ति बिना गारंटी वाली सीमा तक के कर्ज के लिए अपनी मर्जी से सोना या चांदी गिरवी रखता है, तो इसे उपरोक्त नियमों का उल्लंघन नहीं माना जाएगा। नियमों में इन संशोधनों की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए आरबीआई ने कहा, इसका उद्देश्य उन सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों के लिए ऋण वितरण की अंतिम कड़ी को मजबूत करना है, जिनके पास गारंटी के तौर पर गिरवी रखने के लिए सीमित संपत्ति है। एजेंसी

न्यूज डायरी

बैंक ऑफ बड़ौदा : कार लोन 0.30 फीसदी सस्ता

नई दिल्ली। बैंक ऑफ बड़ौदा (बॉब) ने सोमवार को कार लोन पर ब्याज दरों में 0.30 फीसदी की कटौती करने की घोषणा की। नई दरें तत्काल प्रभाव से लागू हो गई हैं। बैंक ने कहा, उसकी परिवर्तनशील (फ्लोटिंग) ब्याज दर अब 7.6 फीसदी सालाना से शुरू होगी। इसके अलावा, वह बड़ौदा कार लोन पर आकर्षक निश्चित ब्याज दर की भी पेशकश कर रहा है, जो 8.5 फीसदी सालाना से शुरू होती है। एजेंसी

देश का खाद्य तेल उत्पादन 96 लाख टन

नई दिल्ली। विपणन वर्ष 2025-26 में देश में खाद्य तेल उत्पादन 96 लाख टन होने का अनुमान है। भारतीय वनस्पति तेल उत्पादक संघ (आईवीपीए) के अध्यक्ष सुधाकर देसाई ने कहा, कुल उत्पादन भारतीय जरूरतों का करीब 40 फीसदी है। घरेलू मांग को पूरा करने के लिए करीब 1.67 करोड़ टन खाद्य तेल का आयात करना होगा। उन्होंने कहा, 2024-25 में 1.6 करोड़ टन खाद्य तेलों का आयात किया गया था। एजेंसी

मारुति ने रेलवे से रिकॉर्ड 5.85 लाख वाहन भेजे

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी इंडिया ने रेलवे के माध्यम से 2025 में 5.85 लाख से अधिक वाहनों को भेजा। यह 2024 की तुलना में 18 फीसदी अधिक है। कंपनी ने कहा, आपूर्ति में रेल परिवहन की उसकी हिस्सेदारी तेजी से बढ़ी है। यह 2016 के 5.1 फीसदी से बढ़कर 2025 में 26 फीसदी हो गई है। इससे कार्बन उत्सर्जन और देश के तेल आयात में उल्लेखनीय कमी आई है। सड़क पर लगने वाला जाम भी कम हुआ है। एजेंसी

यूलर मोटर्स का चार्जिंग इन्फ्रा के लिए जियो-बीपी से करार

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक वाणिज्यिक वाहन बनाने वाली कंपनी यूलर मोटर्स ने सोमवार को कहा, उसने भारत में उच्च मांग वाले लॉजिस्टिक केंद्र में ईवी चार्जिंग बुनियादी ढांचे के लिए जियो-बीपी के साथ समझौता किया है। इस रणनीतिक साझेदारी का मकसद देश में फ्लीट परिचालकों और उपयोगकर्ताओं के लिए चार्जिंग की पहुंच में सुधार करके ई-वाणिज्यिक वाहनों को बढ़ावा देना है। एजेंसी

बजाज इलेक्ट्रिकल्स को 34.1 करोड़ का घाटा

नई दिल्ली। बजाज इलेक्ट्रिकल्स को चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में 34.10 करोड़ रुपये का एकीकृत शुद्ध घाटा हुआ है। सकल लाभ मार्जिन में कमी और नई श्रम संहिताओं के प्रभाव के कारण उसे यह घाटा उठाना पड़ा। कंपनी ने बताया, इस दौरान उसका परिचालन राजस्व 18.5 फीसदी घटकर 1,050.91 करोड़ रह गया। एजेंसी

एक अप्रैल से लागू होगा नया आयकर कानून, बढ़ सकती है पैन की थ्रेसहोल्ड सीमा

नए आयकर कानून में पैन कार्ड के जरिये वाहन खरीद और बैंक जमा की बढ़ेगी सीमा

अमर उजाला ब्यूरो/एजेंसी

नई दिल्ली। अगले वित्त वर्ष 2026-27 से लागू होने वाले नए आयकर कानून में करदाताओं को राहत देते हुए बैंकों में नकद जमा/निकासी, वाहन एवं संपत्ति खरीदने और होटल बिल के भुगतान के लिए पैन की जानकारी देने को लेकर लेनदेन सीमा (थ्रेसहोल्ड) को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाए जाने का प्रस्ताव है।

प्रस्तावित आयकर नियम-2026 के मुताबिक, अगर कोई व्यक्ति एक या ज्यादा खातों में एक वित्त वर्ष में कुल 10 लाख रुपये या उससे अधिक नकद जमा करता है या निकालता है, तो उसे अपने स्थायी खाता संख्या (पैन) की जानकारी देनी होगी। वर्तमान में किसी बैंक, कंपनी या सहकारी बैंक में किसी भी एक दिन में 50,000 रुपये से ज्यादा नकद जमा करने के लिए पैन अनिवार्य है।

वाहनों के संबंध में आयकर कानून के मसौदे में प्रस्ताव है कि गाड़ी (मोटरसाइकिल सहित) खरीदने के मामले में अगर कीमत पांच लाख रुपये से ज्यादा है, तो खरीदार को अपना पैन बताना होगा। **मौजूदा आयकर नियम-1962** में दोपहिया वाहन खरीदने पर पैन की जानकारी देने का नियम नहीं है, लेकिन मोटर वाहनों के लिए कीमत चाहे जो भी हो, इसकी जानकारी देना जरूरी है।

बढ़ेगी एक्सचेंज की जिम्मेदारी

क्रिप्टोकरेंसी

मसौदे में क्रिप्टोकरेंसी एक्सचेंज के लिए आयकर विभाग के साथ जानकारी साझा करना अनिवार्य करने का भी प्रस्ताव है। क्रिप्टोकरेंसी-संपत्ति सेवा प्रदाताओं के लिए विस्तृत रिपोर्टिंग और जांच-पड़ताल की जिम्मेदारियों को अनिवार्य बनाने का प्रस्ताव किया गया है।

- केंद्रीय बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) को इलेक्ट्रॉनिक भुगतान के स्वीकृत तरीके के तौर पर भी शामिल किया गया है।

इन मामलों में भी जानकारी देना अनिवार्य

होटल/रेस्तरां बिल

प्रस्तावित आयकर नियम-2026 के तहत, होटल/रेस्तरां बिल, सम्मेलन केंद्र या बैंक्वेट हॉल या इवेंट मैनेजमेंट में लगे किसी व्यक्ति को किया गया भुगतान अगर एक लाख रुपये से ज्यादा है, तो पैन की जानकारी देना अनिवार्य है।

- **मौजूदा आयकर नियमों के मुताबिक, होटल/रेस्तरां बिल के मामले में पैन बताने के लिए 50,000 रुपये की सीमा तय है।**

संपत्ति की खरीद/बिक्री

मसौदा प्रस्ताव के तहत, किसी भी अचल संपत्ति की खरीद/बिक्री या गिफ्ट या संयुक्त विकास समझौते के मामले में अगर सौदे की लागत 20 लाख रुपये से ज्यादा है, तो पैन जरूरी होगा। वर्तमान में यह सीमा 10 लाख रुपये है।

जीवन बीमा प्रीमियम

मसौदा प्रस्ताव में बीमा कंपनी के साथ खाता आधारित संबंध की शुरुआत करने के लिए पैन की जानकारी देना जरूरी होगा। अभी, एक वित्त वर्ष में जीवन बीमा प्रीमियम के तौर पर 50,000 रुपये से अधिक के भुगतान के लिए पैन अनिवार्य है।

नियोक्ता सुविधाओं का बढ़ सकता है मूल्य दायरा

बाजार की मौजूदा वास्तविकताओं को देखते हुए सरकारी गाड़ियों और निशुल्क खाने के लिए करमुक्त सुविधाओं का मूल्य बढ़ाने का प्रस्ताव है।

- **मोटर कार के लिए** 1.6 लीटर से कम इंजन क्षमता वाली कार का भत्ता 8,000 रुपये प्रति महीना होगा, जबकि दूसरों के लिए यह 10,000 रुपये प्रति महीना होगा। इनमें चालकों के लिए भत्ता भी होगा।
- नियोक्ता अगर किसी कर्मचारी को मुफ्त खाना और गैर-अल्कोहलिक ड्रिंक्स देता है, तो प्रति मील मूल्य 200 रुपये तय किया गया है।

एचआरए : शहर सूची का विस्तार

मसौदा नियम में आवास किराया भत्ते (एचआरए) का दावा करने के मकसद से बंगलूरू, पुणे, अहमदाबाद और हैदराबाद को शामिल करने के लिए श्रेणी-1 महानगरों की सूची का विस्तार किया गया है। वर्तमान में इस सूची में दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई शामिल हैं।

- **मार्च के पहले सप्ताह में अधिसूचित होगा नया कानून :** वित्त मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि पैन की थ्रेसहोल्ड सीमा को सही करने के पीछे मकसद सिर्फ जरूरी जानकारी लेना है। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) संबंधित पक्षों से सलाह के बाद प्रस्तावित नियमों को अंतिम रूप देगा और मार्च के पहले सप्ताह तक उन्हें अधिसूचित करेगा।

जी-20 देशों में सबसे तेज रहेगी भारतीय जीडीपी की गति : मूडीज

- मजबूत बैंकिंग प्रणाली, खपत और नीतिगत उपायों से समर्थन

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के बावजूद घरेलू खपत में मजबूती, नीतिगत उपायों और स्थिर बैंकिंग प्रणाली के दम पर भारतीय अर्थव्यवस्था अगले वित्त वर्ष 2026-27 में 6.4 फीसदी की रफ्तार से आगे बढ़ेगी। मूडीज रेटिंग्स ने एक रिपोर्ट में कहा, भारत की आर्थिक वृद्धि की यह रफ्तार जी-20 अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज है। हालांकि, रेटिंग एजेंसी का यह अनुमान आर्थिक समीक्षा में जताई गई 6.8-7.2 फीसदी की सीमा से कम है।

मूडीज रेटिंग्स ने सोमवार को बैंकिंग प्रणाली परिदृश्य रिपोर्ट में कहा, मजबूत व्यापक आर्थिक स्थितियों और संरचनात्मक सुधारों के समर्थन से 2026 में बैंकों के लिए परिचालन माहौल मजबूत बना रहेगा। परिसंपत्ति गुणवत्ता मजबूत बनी रहेगी। हालांकि सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों में कुछ दबाव देखने को मिल सकता है। इसके बावजूद, बैंकों के पास कर्ज नुकसान को झेलने के लिए पर्याप्त भंडार मौजूद है।

मूडीज ने कहा, सितंबर, 2025 में जीएसटी दरों में कटौती और इससे पहले व्यक्तिगत आयकर सीमा बढ़ाए जाने से उपभोक्ताओं की खरीद क्षमता में सुधार होगा, जिससे खपत आधारित वृद्धि को समर्थन मिलेगा। आधिकारिक अनुमानों के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष में भारत की वृद्धि दर 7.4 फीसदी रह सकती है, जो 2024-25 के 6.5 फीसदी से अधिक है।

6.4% की रफ्तार से बढ़ेगी घरेलू जीडीपी 2026-27 में

रेपो दर : कटौती तभी संभव जब आर्थिक सुस्ती के संकेत

रेटिंग एजेंसी ने कहा, महंगाई के नियंत्रण में रहने एवं वृद्धि की रफ्तार मजबूत बने रहने से आरबीआई नए वित्त वर्ष 2026-27 में मौद्रिक नीति में और ढील तभी देगा, जब आर्थिक गतिविधियों में सुस्ती के संकेत मिलेंगे। यानी रेपो दर में कटौती अब तभी संभव है, जब अर्थव्यवस्था की रफ्तार धीमी होगी।

- आरबीआई ने फरवरी, 2025 से अब तक रेपो दर में कुल 1.25 फीसदी की कटौती कर इसे 5.25 फीसदी कर दिया है। मौद्रिक नीति समिति की हालिया बैठक में रेपो दर को अपरिवर्तित रखा गया है।

बड़ी कंपनियों की बैलेंस शीट मजबूत अच्छी बनी रहेगी कर्ज की गुणवत्ता

बैंकिंग प्रणाली में कर्ज वृद्धि 2026-27 में मामूली बढ़कर 11-13 फीसदी रह सकती है। 2025-26 में अब तक बैंकों की कर्ज वृद्धि 10.6 फीसदी रही है।

- बड़ी कंपनियों की मजबूत बैलेंस शीट और बेहतर मुनाफे के चलते कॉरपोरेट लोन की गुणवत्ता अच्छी बनी रहेगी। सुधार कम होगा, क्योंकि बैंकों ने बड़ी कंपनियों के जोखिम वाले कर्ज को सुलझा लिया है।

चांदी की कीमत 17,000 रुपये बढ़ी, सोने में भी उछाल

मजबूत वैश्विक रुख और डॉलर में कमजोरी से बहुमूल्य धातुओं में उछाल, 1,300 रुपये बढ़े सोने के दाम

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। मजबूत वैश्विक रुख और डॉलर में कमजोरी के कारण सोमवार को दिल्ली सराफा बाजार में चांदी 17,000 रुपये या 6.66 फीसदी महंगी होकर 2,72,000 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव बंद हुई। सोने की कीमतों में भी 1,300 रुपये या 0.83 फीसदी की तेजी दर्ज की गई और यह 1,58,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव बंद हुआ।

चांदी शुक्रवार को 2,55,000 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव बंद हुई थी, जबकि सोना 1,57,200 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर रहा था। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक (जिंस) सौमिल गांधी ने कहा, सोमवार को डॉलर में गिरावट और सटोरिया लिवाली के कारण सोने में तेजी रही। डॉलर इंडेक्स करीब 0.30 फीसदी के नुकसान के साथ 97 के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इससे सराफा कीमतों को समर्थन मिल रहा है। उन्होंने कहा कि व्यापक वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भू-राजनीतिक एवं शुल्क से संबंधित मुद्दों पर बार-बार और अप्रत्याशित बयानबाजी कीमती धातुओं के लिए सुरक्षित-निवेश परिसंपत्ति के रूप में मांग को बढ़ावा देती है। निवेशक बुधवार को जारी होने वाले अमेरिका के मासिक रोजगार आंकड़े (नॉनफार्म पेरोल और बेरोजगारी दर) का भी इंतजार कर रहे हैं।

विदेशी बाजार में भी बढ़त

अंतरराष्ट्रीय बाजार में हाजिर चांदी 2.19 डॉलर या 2.81 फीसदी बढ़कर 80.21 डॉलर प्रति औंस के स्तर पर पहुंच गई। वहीं, सोना एक फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 5,012.94 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था।

- **गांधी ने कहा,** कीमती धातुओं में निवेशकों की भावना को चीन से आए सप्ताहांत के आंकड़ों से और बढ़ावा मिला। **इसमें दिखाया गया कि पीपल्स बैंक ऑफ चाइना ने ऊंची कीमतों के बावजूद जनवरी में लगातार 15वें महीने सोने की खरीदारी जारी रखी।** इससे पिछले सप्ताह सोने की कीमतों में चार फीसदी की तेजी देखने को मिली।

सेंसेक्स 485 अंक चढ़कर 84,000 के पार 6.03 लाख करोड़ बढ़ी निवेशकों की संपत्ति

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को लेकर उत्साह और सरकारी बैंकों, टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं एवं रियल्टी शेयरों में जोरदार लिवाली से घरेलू शेयर बाजार में सोमवार को लगातार दूसरे सत्र में तेजी रही।

सेंसेक्स 485.35 अंक बढ़कर 84,065.75 पर बंद हुआ। दिन के कारोबार में एक समय यह 734.28 अंक तक चढ़कर 84,314.68 के उच्चस्तर पर पहुंच गया था। निफ्टी 173.60 अंक उछलकर 25,867.30 पर बंद हुआ। दिन में एक समय यह 228.55 अंक की तेजी के साथ 25,922.25 अंक के उच्च स्तर पर पहुंच गया था। बाजार में तेजी से बीएसई पर सूचीबद्ध कंपनियों की पूंजी 6.03 लाख करोड़ बढ़कर 473.34 लाख करोड़ रुपये पहुंच गई। सेंसेक्स की 30 में से 22 कंपनियों के शेयर बढ़त में रहे। एसबीआई सर्वाधिक 6.03 फीसदी लाभ में बंद हुआ। पावरग्रिड समेत आठ शेयरों में 1.11 फीसदी तक गिरावट रही।

विदेशी संस्थागत निवेशकों ने शुद्ध रूप से 2,254.64 करोड़ रुपये की खरीदारी की। वहीं, घरेलू संस्थागत निवेशकों ने घरेलू बाजार में सिर्फ 4.15 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे।

आईओसी-एचपीसीएल ने वेनेजुएला से खरीदा क्रूड

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसी) और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि. (एचपीसीएल) ने संयुक्त रूप से वेनेजुएला से 20 लाख बैरल कच्चे तेल की खरीद की है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में वेनेजुएला के तेल की आपूर्ति दोबारा शुरू होने के बाद भारतीय रिफाइनरी कंपनियों की ओर से किया गया यह दूसरा बड़ा सौदा है।

सूत्रों ने बताया, दोनों कंपनियों ने अप्रैल के दूसरे पखवाड़े में आपूर्ति के लिए ट्रैफिगुरा से 20 लाख बैरल मेरे क्रूड खरीदा है। इसमें से 15 लाख बैरल तेल ओडिशा में आईओसी की पारादीप तेल रिफाइनरी को और शेष 5,00,000 बैरल तेल आंध्रप्रदेश में एचपीसीएल की विशाखापत्तनम इकाई को दिया जाएगा। एजेंसी

एसबीआई की अगुवाई में सरकारी बैंकों को रिकॉर्ड 52,603 करोड़ का मुनाफा

एसबीआई की अगुवाई में सभी सरकारी बैंकों ने चालू वित्त वर्ष 2025-26 की तीसरी तिमाही में रिकॉर्ड 52,603 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया है। यह सालाना आधार पर 18 फीसदी अधिक है। सभी सरकारी बैंकों ने 2024-25 की समान तिमाही में 44,473 करोड़ का लाभ कमाया था। इस तरह, मुनाफा एक साल में 8,130 करोड़ बढ़ा है। ब्यूरो

एसबीआई का योगदान

40% का योगदान रहा एसबीआई का सरकारी बैंकों के कुल लाभ में

21,028 करोड़ का फायदा हुआ बैंक को तीसरी तिमाही में

- सालाना आधार पर 24 फीसदी अधिक

फीसदी के हिसाब से

32% बढ़कर 1,263 करोड़ पहुंचा सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया का मुनाफा

इंडियन ओवरसीज बैंक का लाभ सर्वाधिक 56% बढ़कर 1,365 करोड़

अप्रैल-दिसंबर में

1,45,000 करोड़ के पार पहुंच गया सरकारी बैंकों का मुनाफा पहली बार

सालाना आधार पर 13 फीसदी की रही बढ़ोतरी

1,29,994 करोड़ का फायदा हुआ था 2024-25 की अप्रैल-दिसंबर अवधि में

इनका लाभ दहाई अंकों में बढ़ा

बैंक	मुनाफा
बैंक ऑफ महाराष्ट्र	27%
केनरा बैंक	26%
एसबीआई	24%
पंजाब एंड सिंध बैंक	19%
यूको बैंक	16%
पंजाब नेशनल बैंक	13%

पीएलआई 1.2 : विशेष इस्पात क्षेत्र में 11,887 करोड़ रुपये का कुल निवेश करेंगी 55 कंपनियां

नई दिल्ली। केंद्रीय इस्पात मंत्री एच डी कुमारस्वामी ने सोमवार को विशेष इस्पात के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना (पीएलआई) का तीसरा चरण पेश किया। इसका मकसद उन्नत अलॉय स्टील की क्षमता 87 लाख टन बढ़ाना है। पीएलआई 1.2 के तहत सार्वजनिक क्षेत्र की सेल के सलेम स्टील संयंत्र समेत 55 कंपनियों और मंत्रालय के बीच करीब 85 समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इसमें कंपनियों ने 11,887 करोड़ रुपये के निवेश की प्रतिबद्धता जताई है।

कुमारस्वामी ने कहा, पीएलआई 1.2 प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण के साथ एक मजबूत और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी विशेष इस्पात परिवेश बनाने की दिशा में एक अहम कदम है। यह योजना उन्नत और रणनीतिक इस्पात उत्पाद में घरेलू क्षमता बनाने को बढ़ावा देकर मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत की दो प्राथमिकताओं को मजबूती से आगे बढ़ाती है।

मंत्री ने कहा, इन परियोजनाओं से 2030-31 तक 87 लाख टन विशेषीकृत इस्पात क्षमता जुड़ने की उम्मीद है। इससे इलेक्ट्रिकल स्टील, अलॉय एवं स्टेनलेस स्टील, कोटेड उत्पादों जैसे महंगे इस्पात श्रेणी में और रणनीतिक क्षेत्र के लिए जरूरी इस्पात ग्रेड खंड में देश की क्षमता में काफी बढ़ेगी।

मंत्री ने कहा, पीएलआई योजना का तीसरा चरण उद्योग की मजबूत मांग और विशेषीकृत इस्पात में लगातार क्षमता बढ़ाने की जरूरत को देखते हुए शुरू किया गया है। यह वाहन, रेलवे, रक्षा, इलेक्ट्रिकल उपकरण और वैमानिकी जैसे क्षेत्र के लिए जरूरी है। पांच साल के समय में चार से 15 फीसदी तक की प्रोत्साहन दर के साथ यह योजना निवेश, प्रौद्योगिकी उन्नयन और मूल्यवर्धन को बढ़ावा देगी। एजेंसी

म्यूचुअल फंड | निवेश पोर्टफोलियो में विविधता और संतुलन लाते हैं मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स, जोखिम भी कम

सोने-चांदी में गिरावट से मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स की ओर मुड़े निवेशक

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। पिछले कुछ महीनों में तिहरे अंकों में रिटर्न एवं आगे और तेजी की उम्मीद से निवेशकों ने चांदी में जमकर निवेश किया। लेकिन, हाल के दिनों में चांदी की कीमतों में एक ही दिन में आई 25 फीसदी की भारी गिरावट से निवेशकों में दहशत फैल गई। चांदी से सावधान रहने वाले निवेशकों ने सोने को चुना, जिसकी कीमतों में भी पिछले कुछ कारोबारी सत्रों में भारी गिरावट देखने को मिली है।

सोने और चांदी की कीमतों में भारी गिरावट के बीच निवेशकों ने मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स का विकल्प चुना। विश्लेषकों का कहना है कि निवेशकों को ऐसे म्यूचुअल फंड्स का विकल्प चुनना चाहिए, जो कमोडिटी और इक्विटी में निवेश का मिश्रण प्रदान करते हैं। इससे पोर्टफोलियो में विविधता और संतुलन आती है और जोखिम कम होता है...**जैसे मल्टी एसेट एलोकेशन म्यूचुअल फंड्स।**

मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स कम से कम तीन अलग-अलग परिसंपत्ति वर्गों इक्विटी, ऋण और कमोडिटीज में निवेश करते हैं। इसमें सोना और चांदी भी शामिल हैं, जिनमें हाल के दिनों में भारी उतार-चढ़ाव दिखा है।

सेबी के निर्देश की भी बाध्यता

सेबी के तय निर्देशों के मुताबिक, मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स के लिए कम से कम 10 फीसदी निवेश तीन एसेट क्लास में करना अनिवार्य है। फंड मैनेजरों को किसी भी समय एसेट क्लास के प्रदर्शन के आधार पर निवेश मिश्रण तय करने की स्वतंत्रता होती है।

- मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स ने निवेशकों को ऐसे समय में विविधीकरण का अवसर दिया, जब इक्विटी बाजार अस्थिर थे और डेट इंस्ट्रूमेंट्स में रिटर्न अपेक्षाकृत कम था। **मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स ने हाइब्रिड फंड्स से भी बेहतर प्रदर्शन किया है।**

निवेशकों को 23.97 फीसदी तक मिला रिटर्न

मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स ने पिछले कुछ वर्षों में शानदार रिटर्न दिया है। इनमें निप्पॉन इंडिया मल्टी एसेट एलोकेशन फंड सबसे आगे है। फंड ने एक, दो और तीन वर्षों में क्रमशः 23.97 फीसदी, 20.47 फीसदी और 22.62 फीसदी का रिटर्न दिया है।

- वास्तव में, शीर्ष-10 मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स ने पिछले एक वर्ष में औसतन 20.26 फीसदी और तीन वर्षों में 21.01 फीसदी की सीएजीआर से वृद्धि दर्ज की है। **इसकी तुलना में, शीर्ष-10 इक्विटी फंड्स का रिटर्न एक वर्ष में मात्र 16.62 फीसदी रहा है।**

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

संसद में तल्खी

भारतीय संसद में सियासी दलों के बीच बढ़ती तल्खी दुखद और चिंताजनक है। पक्ष और विपक्ष के बीच बढ़ती खींचतान के चलते बजट सत्र का समय बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। सदन ठीक से न चल पाने के लिए दोनों पक्षों ने एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराया है। संसद में हंगामा या गतिरोध 2 फरवरी से ही जारी है। तब विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने धन्यवाद प्रस्ताव पर बहस के दौरान पूर्व सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे के संस्मरण से उद्धरण देने का प्रयास किया था। सरकार की ओर से यह आपत्ति जताई गई कि एक अप्रकाशित पुस्तक का हवाला देना संसदीय नियमों का उल्लंघन है। चूंकि राहुल गांधी को चीन या राष्ट्रीय सुरक्षा पर बोलने नहीं दिया गया, तो लोकसभा में प्रधानमंत्री भी धन्यवाद भाषण पेश नहीं कर पाए। विपक्ष ने साफ कह दिया कि अगर नेता प्रतिपक्ष को बोलने नहीं दिया जाएगा, तो प्रधानमंत्री को भी बोलने नहीं दिया जाएगा। अब विपक्ष भारत-अमेरिका अंतरिम व्यापार समझौते के ढांचे पर चर्चा चाहता है, तो क्या सरकार इसके लिए तैयार होगी? ध्यान देने की बात है कि अभी इस समझौते पर बहुत स्पष्टता नहीं है, इसलिए भी विपक्षी दलों को विरोध का मौका मिल रहा है।

सत्ता पक्ष का आरोप है कि विपक्षी दल सदन की कार्यवाही में बेवजह बाधा डाल रहे हैं, तो कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने सोमवार को एनडीए सरकार और लोकसभा अध्यक्ष पर सदन चलाने में रुचि न होने का आरोप लगाया है। थरूर ही नहीं, अनेक सांसद बजट पर बोलना चाहते हैं, पर दुर्भाग्य से हंगामे की वजह से ऐसा संभव नहीं हो पा रहा है। निस्संदेह, आज देश में व्यापार संबंधी नीतियों, फैसलों को सुलझाने और आगे बढ़ने का समय है, इसके लिए बजट पर चर्चा अनिवार्य है। आर्थिक विषयों पर अगर यथोचित चर्चा नहीं होगी, तो जाहिर है, इससे सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच तनाव व अविश्वास बढ़ता ही जाएगा। यह कहना ही चाहिए कि देश की तेज तरक्की के लिए आर्थिक मसलों पर सियासी एकजुटता होनी चाहिए। जब किसी देश की पूरी सियासत मिलकर संपन्नता को लक्ष्य बनाती है, तब अमेरिका और चीन जैसी कामयाबी हासिल होती है। विकसित देशों की सियासत को समझना और सीखना हमारे लिए जरूरी है। वैसे, नई बात नहीं, भारत द्वारा किए गए व्यापार समझौते सियासी मोर्चे पर अक्सर विवादित रहे हैं, अब इस परिपाटी से उबरना होगा।

अब वह दौर आ गया है, जब ऐसे व्यापार समझौतों पर पेशेवर ढंग से काम किया जाए। यहां जरूरत भारतीय राजनीति की नहीं, भारतीय रणनीति की है।

बहरहाल, तल्खी इतनी बढ़ गई है कि वर्तमान लोकसभा अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव की चर्चा चल रही है। सत्ता पक्ष के संख्या बल को देखें, तो यह अविश्वास प्रस्ताव समय की बर्बादी के अलावा कुछ नहीं होगा। ध्यान रहे, लोकसभा में विपक्ष के नेता ने दावा किया है कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से आश्वासन दिया गया था कि बजट पर चर्चा शुरू होने से पहले सदन में कुछ मुद्दे उठाने की अनुमति दी जाएगी, पर ऐसा नहीं किया गया। हालांकि, संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने ऐसे किसी आश्वासन से इनकार किया है। अतः यह भ्रम बढ़ गया है कि कौन सही बोल रहा है और कौन गलत। ध्यान रहे, अमेरिका के साथ हुआ समझौता अंतरिम है, इसे अंतिम रूप दिया जाना है। अतः संसद में न सही, संबंधित संसदीय समितियों में समझौते पर विस्तृत चर्चा होनी चाहिए। सभी दलों के आर्थिक विशेषज्ञों को मिलकर सुनिश्चित करना चाहिए कि व्यापार समझौता हर हाल में भारत के अनुकूल हो। अब वह दौर आ गया है, जब ऐसे समझौतों पर पेशेवर ढंग से काम किया जाए। यहां जरूरत भारतीय राजनीति की नहीं, भारतीय रणनीति की है।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 10 फरवरी, 1951

नई जनगणना

पिछले कुछ समय से हर दसवें वर्ष हमारे देश में जनगणना की जाती है। पिछली जनगणना को, जो सन् 1941 में हुई थी, दस वर्ष हो चुके हैं और इसलिए ताजा जनगणना का काम शुरू कर दिया गया है। हमारा देश क्षेत्रफल और आबादी के लिहाज से बहुत विशाल है।

पिछली जनगणना के अनुसार, उसमें 35 करोड़ व्यक्ति निवास करते हैं। उनके संबंध में तरह-तरह के तथ्य मालूम करना और उन्हें सिलसिलेवार संग्रह करना आसान काम नहीं है। शिक्षा के अभाव में लोग जनगणना के उद्देश्यों को अभी भी ठीक तरह नहीं समझ पाये हैं। इस कारण यह काम और भी कठिन हो जाता है। किन्तु राष्ट्रीय दृष्टि से यह काम बड़े महत्व का है। उसके जरिये यह मालूम किया जा सकेगा कि हमारे देश में कितने व्यक्ति रहते हैं, उनमें कितने पुरुष, कितनी स्त्रियां और कितने बच्चे हैं, कितने उनमें साक्षर और शिक्षित हैं, वे किस जाति के हैं और किस धर्म को मानते हैं, उनकी मातृभाषा क्या है आदि। वर्तमान जनगणना में इस प्रकार के 22 तथ्यों का पता लगाया जायेगा। देश का उत्तम शासन-प्रबन्ध करने के लिए सरकार के लिए यह जानकारी बहुत उपयोगी होगी और वह उसके आधार पर उपयुक्त योजनायें बना सकेगी।

अंग्रेजों के शासन काल में जनगणना में जातपांत को बहुत महत्व दिया जाता था। उससे देश में पृथकता की भावना को प्रोत्साहन मिलता था। अब शासन का लक्ष्य देश के लोगों को एकसूत्र में ग्रथित करना है। इसलिए जनगणना में जातिगत-भेदों को खास महत्व नहीं दिया जायेगा। अवश्य ही आदिवासियों, हरिजनों और एंग्लो-इंडियनों की अलग से गणना की जायेगी। इसका कारण यह है कि भारतीय संविधान ने इन लोगों को कुछ समय के लिए संरक्षण प्रदान किये हैं और इसलिए उनकी गणना करना आवश्यक हो जाता है। अगली जनगणना के समय यह भेद भी समाप्त हो जायेगा। इस जनगणना में एक नया दृष्टिकोण दाखिल किया गया है। उसके अनुसार, लोगों की आर्थिक स्थिति के बारे में विशेष रूप से पता लगाया जायेगा। यह मालूम किया जायेगा कि उनकी आजीविका का मुख्य और सहायक साधन कौन सा है और वे आर्थिक दृष्टि से स्वाबलंबी हैं या पराश्रित।

अपना ही बोया काट रहा पाकिस्तान

राय की राय

यहां स्कैन करें

विभूति नारायण राय | पूर्व आईपीएस अधिकारी

चंद दिनों के अंतराल में ही बलूचिस्तान और राजधानी इस्लामाबाद में घटी आतंकी वारदातों ने एक राष्ट्र के रूप में पाकिस्तान के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया है।

कुछ जुमले इतिहास में भविष्यवाणी के रूप में दर्ज हो जाते हैं। 21 अक्तूबर, 2011 को इस्लामाबाद की एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में तत्कालीन अमेरिकी विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन ने चेतावनी दी थी कि अपने पिछवाड़े सांप पालने वालों को याद रखना चाहिए कि ये उन्हें भी काट सकते हैं। यह जुमला पाकिस्तानी फौज और उसके शासकों को आज पूरी शिद्दत से याद आ रहा होगा।

चंद दिनों के अंतराल में ही बलूचिस्तान और राजधानी इस्लामाबाद में घटी आतंकी वारदातों ने एक राष्ट्र के रूप में पाकिस्तान के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया है। तरलाई के इमाम बारगाह में जुमे की नमाज के दौरान हुआ आत्मघाती हमला पिछले तीन महीनों में ही इस्लामाबाद में हुई दूसरी बड़ी आतंकी घटना थी। इसके पहले 11 नवंबर को जिला अदालत के मुख्य द्वार पर एक खुदकुश हमलावर ने स्वयं को उड़ा लिया था, जिसमें एक दर्जन लोग मारे गए और कम से कम 36 लोग गंभीर रूप से जख्मी हुए थे।

सबसे पहले बलूचिस्तान को लें। क्षेत्रवार देश का सबसे बड़ा और सबसे अधिक दुर्लभ खनिजों का खजाना अपनी धरती में छिपाए रखने वाला यह सूबा पाकिस्तान बनने के बाद से ही कभी शांत नहीं रहा। बीच-बीच में शांति का भ्रम देने वाले इस सूबे में हर चार-पांच साल बाद असंतोष-जनित सशस्त्र उबाल के दौर आते रहे हैं, पर पिछले कुछ दशकों में इसमें गुणात्मक परिवर्तन आए हैं। एक सामंती ढांचे वाले और कबीलों में बंटे समाज में शुरुआती विद्रोहों की अगुआई सरदारों की हुआ करती थी। ये सरदार अपने-अपने कबीलों के रोजमर्रा के जीवन में निर्णायक दखलंदाजी करते थे और वही पाकिस्तानी राज्य और बलोच जनता के संबंध तय करते थे।

पिछले कुछ दशकों में शिक्षा और राजनीतिक चेतना के प्रसार के चलते एक बड़े मध्यवर्ग का निर्माण हुआ है और सरदारों की पकड़ कमजोर हुई है। इस परिवर्तन के चलते अब एक पृथक बलूचिस्तान की मांग सामंती नेतृत्व के हाथ से निकलकर बेहतर शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार और आधारभूत संरचनाओं की चाहत वाले मध्यवर्ग के हाथों में आ गई है। इस बीच सेना के हाथों हजारों बलोच नौजवान लापता हो गए हैं। उनकी तलाश में भटकती माओं और बहनों ने आंदोलन को और तेज कर दिया है।

बीती 31 जनवरी और 1 फरवरी की मध्य रात्रि को बलोच विद्रोहियों ने अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई करते हुए एक साथ चौदह शहरों पर सशस्त्र धावा बोल दिया। इनमें सबसे गंभीर घटना बलूचिस्तान की राजधानी क्वेटा में घटी, जहां सुरक्षा के सभी दावों को धता बताते हुए बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी के लड़ाके विधानसभा, हाईकोर्ट और मुख्यमंत्री आवास वाले इलाके तक पहुंच गए और मुठभेड़ में एक डिप्टी एसपी समेत एक दर्जन से अधिक पुलिसकर्मी मारे गए। इस बार के हमलों के दो महत्वपूर्ण दृश्य हमेशा याद रहेंगे- हमलों में आत्मघाती महिलाएं भी शरीक थीं और आम जन सड़कों पर निकलकर हमलावरों के हाथ चूम रहे थे, उनके साथ सेल्फी ले रहे थे। खुफिया तंत्र की विफलता, राज्य की पूरी तरह अनुपस्थिति और आत्महत्या पर उतारू लड़ाकों की यह तीन दिनों की गाथा लगभग 300 बलोचियों और 50 सुरक्षाकर्मियों की आहुति लेकर फिलहाल समाप्त हो गई लगती है, पर इसके दूरगामी असरात दिखेंगे।

सुरक्षाकर्मी अभी बलूचिस्तान के हमलों का लेखा-जोखा ले ही रहे थे कि 6 फरवरी को जुमे की नमाज पढ़ने के लिए एक शिया इमामबारगाह में एकत्रित समूह में घुसकर एक खुदकुश हमलावर ने स्वयं को बम से उड़ा लिया। इस आत्मघाती हमले में 300 से अधिक लोग प्रभावित हुए और 35 से अधिक नमाजी मारे भी गए। यह एक सामान्य आतंकी हमले से अधिक उन फिरकावाराना हिंसक घटनाओं की वापसी का संकेत है, जिनसे देश कुछ वर्षों पूर्व बुरी तरह से जूझ रहा था। आत्मघाती हमले के स्थल से मुश्किल से एक किलोमीटर दूर एक जलसा चल रहा था, जिसे औरंगजेब फारूकी नामक उस नेता ने भी संबोधित किया, जो अपने शिया विरोधी बयानों के लिए कुख्यात है। इस जमावड़े में शिया लोगों को काफिर घोषित करने वाले नारे लगाए जा रहे थे। फिलहाल इस घटना के लिए जिम्मेदार हमलावर की शिनाख्त हो गई है और पाक रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ के अनुसार, खैबर पख्तूनख्वा के नौशेरा का रहने वाला यह शख्स और उसका परिवार इंतहापसंद धार्मिक विश्वास से प्रभावित था। उसके कुछ परिवारीजन गिरफ्तार भी किए गए हैं।

हर बार की तरह घटना होने के कुछ ही घंटे के अंदर पुलिस प्रवक्ताओं व मंत्रियों ने वारदात के पीछे भारत व अफगानिस्तान का हाथ होने के आरोप लगाने शुरू कर दिए। दावा किया गया कि हमलावर ने पिछले दिनों कई बार अफगानिस्तान की यात्राएं कीं। सत्ता के गलियारों के करीबी कुछ ब्लॉगरों ने तो यह दावा भी किया कि पाकिस्तानी वायु सेना अफगानिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर हमले करने जा रही है। गनीमत है, अभी तक ऐसा कुछ नही हुआ है।

ये दोनों घटनाएं हिलेरी क्लिंटन के उद्धृत वाक्य की ही पुष्टि करती हैं। पाकिस्तान ने ही तालिबान को पाला-पोसा है और अगर उसका सक्रिय समर्थन न मिला होता, तो वे कभी भी अमेरिका को वापस जाने को मजबूर कर सत्ता पर काबिज न हो पाए होते। काबुल से अमेरिकी सेना की वापसी की तुलना तत्कालीन प्रधानमंत्री इमरान खान ने सांस्कृतिक गुलामी की जंजीरों के टूटने से की थी। वह भूल गए कि अफगान मनोविज्ञान और इतिहास के चलते तालिबान पाकिस्तान को इस्लामी बिरादर तो स्वीकार कर सकते हैं, पर उंगली पकड़कर चलाने की ख्वाहिश रखने वाला बड़ा भाई नहीं। जैसे ही आईएसआई ने उनका बॉस बनने की कोशिश की, उन्होंने हाथ झटक दिया। आजादाना तबीयत के मालिक बलूचों पर पाक फौज जितना तशद्दुद करती है, उतना ही उनके अंदर प्रतिरोध की चेतना बलवती होती जाती है।

फिरकावाराना फसादात के लिए पाकिस्तानी राष्ट्र-राज्य की स्थापना के समय से ही धर्म और राजनीति में घालमेल के प्रयास मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। जनरल जिया के कार्यकाल के दौरान 1980 के दशक में जिन कट्टरपंथियों को राज्य की एजेंसियों ने पाल-पोसकर अपने सहायक के तौर पर तैयार किया था, वे ही अब उनके लिए भस्मासुर बन गए हैं। देश की अर्थव्यवस्था आईएमएफ की बैसाखियों पर लड़खड़ाती हुई घिसट रही है और बलूचिस्तान या फिरकावाराना फसाद, दोनों ही उसे पटरी से उतारने में समर्थ हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि फौज और नागरिक प्रशासन का हाइब्रिड निजाम इनसे निपटने में कितना सफल होता है?

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

सुशासन और जनभागीदारी में छिपा प्रदूषण का समाधान

यहां स्कैन करें

वीरेन्द्र कुमार पैन्यूली | पर्यावरण वैज्ञानिक

दिल्ली में 23 जनवरी को हुई बारिश और आंधी चलने के कारण प्रदूषण में भारी कमी जरूर आई, किंतु वायु गुणवत्ता सुधरकर भी 'बहुत खराब स्थिति' से केवल 'खराब स्थिति' तक सुधर पाई। 20 जनवरी को भी वर्षा हुई थी, तब बाद के तीन दिनों में वायु प्रदूषण ने 'गंभीर स्थिति' से सुधरकर 'बहुत खराब स्थिति' की श्रेणी का ही सफर तय किया था। हालांकि, यह स्थिति भी सारे रिपोर्टिंग केंद्रों में एक सी नहीं थी। उस दौरान गाजीपुर, आनंद विहार व जहांगीरपुरी में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 445-449 यानी, गंभीर स्थिति में था। भारतीय मानकों में एक्यूआई यदि 401 से ऊपर हो, तो वह वायु प्रदूषण की गंभीर स्थिति कहलाती है।

बीती 25-27 जनवरी की भारी बरसात के बाद भी 28 तारीख को दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक 'खराब' की श्रेणी में था। घने कोहरे और कम तापमान में 5 फरवरी तक 27 रिकॉर्डिंग स्टेशनों द्वारा यह सूचकांक 'बहुत खराब' और 10 स्टेशनों में 'खराब' श्रेणी में दर्ज किया गया। मानकों के अनुसार, अच्छे दिन में एक्यूआई 50 तक ही होते हैं। 51-100 एक्यूआई संतोषजनक तथा 101 से 200 तक मध्यम श्रेणी का माना जाता है।

दिल्ली में जगह-जगह वायु गुणवत्ता में अंतर होता है। इन अंतरों और भौगोलिक कारणों का पता लगाकर प्रदूषण कम किया जा सकता है।

दिल्ली में सालों से, खासकर धुंध के दिनों की खराब स्थिति में सुधार हवा की गति-दिशा, बरसात और सूरज की स्थिति पर निर्भर करता है। हवा की गति कम होने से प्रदूषण कम फैलता है, जबकि हवा तेज होने से उसका विस्तार हो जाता है। तेज हवा में प्रदूषण अधिक ऊंचाई तक जाता है, जिससे हवा 'बेहद खराब' और 'खराब' श्रेणी से सुधरने लगती है। बरसात का मौसम हो, तो सूचकांक घटने और शुष्क होने पर बढ़ने लगता है। बारिश यदि पराली जलाने के दिनों में हो, तो वर्षा के थमने पर भी गीली जमीन व नम हवा के कारण पराली कम जलती है। इससे पीएम10 के कण हवा में कम रहते हैं। हवा के साथ दिल्ली के भीतर ही ज्यादा प्रदूषण वाली जगहों से कम प्रदूषित जगहों पर प्रदूषण पहुंच सकता है। कुछ साल पहले तो यह भी दलील दी गई थी कि दिल्ली के वायु प्रदूषण में पाकिस्तान से आए धूलकणों का भी योगदान रहता है।

भारत में 10 वर्ष पूर्व हुए वैज्ञानिक अध्ययन से पता चला था कि करीब 800 मीटर की ऊंचाई पर वायु प्रदूषण कम हो जाता है। बहुत ऊंचाई तक पहुंचा प्रदूषण मौसम को भी प्रभावित कर सकता है। प्रदूषण के जो कण ऊपर पहुंचते हैं, वे रासायनिक या प्रदूषक सघनता में अंतर ले आते हैं। हवा मंद रही, तो प्रदूषण कम फैलेगा और हवा की गति तेज हुई, तो फैलाव अधिक होगा। गति के साथ हवा की दिशा भी महत्वपूर्ण होती है।

24 नवंबर, 2021 को सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश एन वी रमन्ना की अगुवाई वाली पीठ ने कहा था कि वायु प्रदूषण की 'खराब' स्थिति आ जाने पर 'ग्रेडेड रिस्पांस' के अंतर्गत कोई कदम उठाने के बजाय मौसमी पूर्वानुमानों के आधार पर अग्रिम कार्रवाई की जानी चाहिए। ज्ञात हो कि 'ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान', यानी ग्रैप दिल्ली-एनसीआर में वायु गुणवत्ता के खराब होने पर प्रदूषण रोकने के चरणबद्ध आपात उपाय हैं। दिल्ली को प्रदूषण से बचाने के लिए बहुत कुछ न भी किया जा सके, तब भी कुछ प्रदूषण सुशासन व जन-सहभागिता से कम किए जा सकते हैं। भारी वाहनों के आवागमन वाले औद्योगिक क्षेत्रों में यदि सड़कें टूटी-फूटी न हों, तो वातावरण में गैसीय व कणीय, दोनों प्रकार के प्रदूषक कम उड़ेंगे। कचरा वाले गड्ढों (लैंड फिल) को बीच-बीच में खाली किया जाए, बिजली की सही आपूर्ति हो, जेनरेटर पर प्रतिबंध रहे, सड़कों पर साइकिल पथ, पैदल पथ व अंडरपास इतने सुरक्षित हों कि लोग इनका बेहिचक उपयोग कर सकें।

इतना ही नहीं, कूड़े खुले में न जलें, धुआं छोड़ते वाहन सड़कों पर न हों, वाहन ईंधनों में मिलावट न हो, तब हवाओं में प्रदूषकों का भार कम होगा। ऐसे में, बारिश और तेज हवा के बिना भी प्रदूषकों में कुछ कमी अवश्य आएगी। गौरतलब यह भी है कि दिल्ली में जगह-जगह वायु गुणवत्ता सूचकांक में भारी अंतर होता है। इन अंतरों और भौगोलिक कारणों का पता लगाकर वायु प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

समय पर मत टालिए

अभी एक प्रश्न मुझसे पूछा गया है कि क्या आमूल परिवर्तन में समय लगता है? हममें से ज्यादातर लोग यह सोचने के आदी हैं कि अंदरूनी तब्दीली के लिए वक्त जरूरी है। मैं कुछ हूं और जो मुझे होना चाहिए, उसमें परिवर्तन के लिए समय की आवश्यकता है। मैं लोभी हूं और उस लोभ के परिणामस्वरूप भ्रांति, विरोधाभास, द्वंद्व और क्लेश से घिरा हुआ हूं। ऐसे में, परिवर्तन अर्थात लोभरहित होने के लिए हम सोचते हैं कि समय जरूरी है। इसका अर्थ यह हुआ कि समय को साधन के रूप में आवश्यक समझा जाता है।

वास्तव में, समस्या यह है कि एक व्यक्ति हिंसक, लोभी, ईर्ष्यालु, क्रोधी, दुष्ट या आवेगपूर्ण है; तो वह 'जो है', उसमें परिवर्तन के लिए क्या समय जरूरी है? सबसे पहला प्रश्न तो यह है कि हम 'जो हैं', उसे बदलना क्यों चाहते हैं? क्योंकि हम जो हैं, उससे हमें असंतोष होता है। वह द्वंद्व और अशांति पैदा करता है और उस अवस्था को न पसंद करके हम कुछ बेहतर, कुछ महान, और अधिक आदर्शवादी होना चाहते हैं। चूंकि हममें पीड़ा, बेचैनी और द्वंद्व हैं, इसीलिए हम चाहते हैं कि हममें बुनियादी बदलाव आए। क्या समय द्वंद्व पर विजय प्राप्त कर पाता है?

यदि आप कहते हैं कि समय के माध्यम से द्वंद्व का इलाज हो जाएगा, तो आप अब भी द्वंद्व में ही हैं। आप कह सकते हैं कि जो आप हैं, उसके परिवर्तन में, यानी द्वंद्व से पीछा छुड़ाने में बीस दिन या बीस वर्ष लग जाएंगे, पर इस दौरान भी आप द्वंद्व में ही रहते हैं, इसलिए समय द्वारा परिवर्तन नहीं आ सकता। जब हम समय का प्रयोग किसी गुण, सदाचार अथवा अवस्था की उपलब्धि के साधन के रूप में करते हैं, तो हम 'जो हैं', उसको टाल रहे होते हैं या उसकी उपेक्षा कर रहे होते हैं और मेरे विचार से इस तथ्य को समझ लेना महत्वपूर्ण है।

हिंसा और लोभ हमारे परस्पर संबंध के इस संसार में जो कि समाज है, पीड़ा व बेचैनी का कारण बनते हैं; और इस बेचैनी की हालत से, जिसे हम लोभ या हिंसा का नाम देते हैं, परिचित होने की वजह से हम स्वयं से कहते हैं, 'मैं समय रहते इससे मुक्त हो जाऊंगा। मैं अहिंसा, ईर्ष्यारहित होने, शांति का अभ्यास करूंगा।'

जब हम समय का प्रयोग किसी गुण, सदाचार अथवा अवस्था की उपलब्धि के साधन के रूप में करते हैं, तो हम 'जो हैं', उसको टाल रहे होते हैं या उसकी उपेक्षा कर रहे होते हैं।

तो आप अहिंसा का अभ्यास करना चाहते हैं, क्योंकि हिंसा बेचैनी की, द्वंद्व की अवस्था है और आप सोचते हैं कि समय द्वारा आप अहिंसा को पा लेंगे, द्वंद्व को जीत लेंगे। परंतु वास्तव में हो क्या रहा है?

द्वंद्व की दशा में होने के कारण आप एक ऐसी अवस्था प्राप्त कर लेना चाहते हैं, जहां कोई द्वंद्व न हो। अतः हिंसा पर विजय प्राप्त करने के साधन के रूप में समय पर निर्भर रहने की प्रक्रिया के असत्य को समझना और उससे मुक्त होना जरूरी है।

जे कृष्णामूर्ति

राजनाथ सिंह | रक्षा मंत्री

राष्ट्र की सुरक्षा का अर्थ, केवल उसकी भौगोलिक सीमाओं की रक्षा नहीं है। उसकी सांस्कृतिक अस्मिता और सभ्यतागत चेतना की सुरक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। ऐसे में, हमारे संत सदियों से भारत की सांस्कृतिक धारा के संरक्षक रहे हैं।

अनुलोम-विलोम
विश्व दलहन दिवस

दालों की पैदावार और अधिक बढ़ानी होगी

संयुक्त राष्ट्र की पहल पर हर वर्ष 10 फरवरी को विश्व दलहन दिवस मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य दालों का हमारी सेहत के लिए जो महत्व है, उसके प्रति जागरूकता फैलाना है और इसकी खेती के बारे में लोगों को बताना है। दलहन की खेती पर्यावरण संरक्षण के हित में भी है, क्योंकि इससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है। यह देखते हुए कि दालों से हमें कई लाभ मिलते हैं, हमें इसकी खेती की तरफ और ध्यान देना चाहिए। दालों से मिलने वाले फायदे की बात करें, तो हरी मूंग हमारे पेट के लिए बहुत लाभकारी होती है। इसी तरह, चना और अरहर की दाल भी सेहत के लिए बहुत लाभकारी है। बावजूद इसके, इसकी खेती को लेकर जरूरी जागरूकता नहीं दिखती, जो दुखद है।

दलहन की पैदावार के लिए किसानों को मेहनत खूब करनी पड़ती है, पर जब मेहनत का उचित फल नहीं मिलता, तो उनकी रुचि दलहन की खेती को लेकर घटने लगती है। यह अच्छी बात है कि केंद्र सरकार ने दालों की पैदावार बढ़ाने के प्रयास किए हैं, लेकिन उसकी योजनाएं तभी कामयाब हो सकेंगी, जब कृषि विभाग, कृषि विशेषज्ञ और किसान मिलकर इस दिशा में काम करेंगे। जैसे- कृषि विभाग की ओर से किसानों को जागरूक करने के प्रयास करने चाहिए। कृषि विशेषज्ञ मौसम चक्र के अनुसार या जहां दलहन की पैदावार न के बराबर होती है, वहां इसकी उपज बढ़ाने के लिए नई तकनीक विकसित करें, और किसानों को चाहिए कि वे संबंधित विभागों से जरूरी जानकारियां लेकर दलहन की खेती पर अपना ध्यान केंद्रित करें, ताकि इसकी पैदावार बढ़े। अगर इन तीनों का सही मायने में संगम हो गया, तो निस्संदेह देश में दलहन की खेती नई ऊंचाई को छू सकेगी और भारत जैसे कृषि प्रधान देश में किसी भी दाल की कीमत आसमान तक नहीं पहुंच सकेगी। यह सब करना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि भारत को दालों का ज्यादा से ज्यादा निर्यात करना चाहिए, ताकि देश की आर्थिक स्थिति पर सकारात्मक असर पड़े और किसानों की आय बढ़ सके।

करीब डेढ़ साल पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐसी लगभग 109 उन्नत किस्म के बीजों को जारी किया था, जो जलवायु परिवर्तन, अधिक उपज और जैविक कृषि को बढ़ावा देने वाले हैं। इनमें मुख्य तौर पर अनाज, तिलहन, फल और सब्जियां हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का यह बहुत ही अच्छा प्रयास रहा, लेकिन दलहन को लेकर भी ऐसी कोशिशें होनी चाहिए। हालांकि, इन सबकी सफलता तभी सुनिश्चित हो सकेगी, जब संबंधित विभागों और किसानों के बीच उचित तालमेल बनाया जाएगा। सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए।

राजेश कुमार चौहान, टिप्पणीकार

दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनता भारत

यह कोई छिपा सत्य नहीं है कि विश्व में दालों का सबसे बड़ा उत्पादक देश भारत है। यहां करीब 280 लाख टन दलहन का उत्पादन होता है, जो वैश्विक उत्पादन का करीब 25 फीसदी है। जिस तरह से भारत दाल के उत्पादन में आगे बढ़ रहा है, उसी का नतीजा है कि अब सरकार ने दलहन में 'आत्मनिर्भरता मिशन' की शुरुआत की है, ताकि 2030-31 तक दालों का उत्पादन 350 लाख टन किया जा सके। ऐसा करना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि हम दालों के बड़े उपभोक्ता भी हैं। इतना ही नहीं, न्यूनतम समर्थन मूल्य, यानी एमएसपी पर शत-प्रतिशत खरीदारी सुनिश्चित करने पर भी सरकार जोर दे रही है, ताकि आयात पर निर्भरता कम हो। दालों की सरकारी खरीद का गणित जो नहीं जानते, उनको बता दूं कि देश में पहले गेहूं और धान की खरीद तो एमएसपी पर होती थी, लेकिन दलहन व तिलहन के लिए ऐसी व्यवस्था नहीं थी, पर केंद्र सरकार ने किसानों को आय समर्थन देने के लिए दलहन व तिलहन को एमएसपी पर खरीदने की व्यवस्था की। नतीजतन, बीते आठ वर्षों में दलहन की 75 फीसदी तक उपज सरकारी मूल्यों पर खरीदी जा रही है, जिसका लाभ किसान पा रहे हैं।

सरकारों का यह समझना भी सुखद है कि दालें केवल कृषि उत्पाद नहीं हैं, बल्कि पोषण सुरक्षा, मृदा स्वास्थ्य और ग्रामीण आजीविका की आधार भी हैं। इसी के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 अक्तूबर, 2025 को 11,440 करोड़ रुपये के बजटीय आवंटन के साथ दलहन में आत्मनिर्भरता मिशन की शुरुआत की। इसका लक्ष्य दाल उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ खेती के क्षेत्र को 310 लाख हेक्टेयर तक बढ़ाना भी है। इसका एक मकसद यह भी है कि चार वर्षों तक एमएसपी पर तुअर, उड़द और मसूर की शत-प्रतिशत खरीद सुनिश्चित हो। इसके लिए किसानों के बीच कुल 88 लाख निःशुल्क बीज किट और 126 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज बांटने की व्यवस्था की गई है। यह सब इसीलिए किया जा रहा है, क्योंकि सरकारें दाल उत्पादन की जरूरत और किसानों की आवश्यकता, दोनों को बखूबी समझ रही हैं। यह आत्मनिर्भर बनने की दिशा में बढ़ते भारत का संकेत है।

ऐसे में, यह कहना गलत होगा कि दालों के उत्पादन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा। अलबत्ता, पहले से कहीं अधिक गंभीरता दिख रही है। उम्मीद यही है कि जिस तरह से काम किए जा रहे हैं, जल्द ही हम दलहन के मामले में पूरी तरह से आत्मनिर्भर हो जाएंगे। इससे न सिर्फ किसानों को लाभ मिलेगा, बल्कि आम आदमी के पोषण पर भी इसका सकारात्मक असर पड़ेगा।

स्वाति वत्स, टिप्पणीकार

सदा सहाय शिव सहज लुभाएं

आशुतोष शिव भारतीय मन को सहज ही लुभाते हैं। ऐसे देवता से जुड़कर हर एक मन महीप बना रहता है। कभी अनुभव नहीं करता कि वह कहीं से हीन है। हाथ में भिक्षा-पात्र, पर औघड़दानी ऐसे कि कोई खाली हाथ लौटा नहीं, मनमाना लेकर गया। महाशिवरात्रि का पर्व आदि देव महादेव को याद करते हुए स्वयं सदाशिव हो जाने का दिन है।

अध्यात्म

विद्यानिवास मिश्र

शिव भारत के महादेव हैं। इस अर्थ में महोदव हैं कि बसते हैं कैलाश में, पर रमते हैं समूचे भारतवर्ष में। जंगलों में, नदियों के किनारे, समुद्र के बीच में और पहाड़ों की चोटियों पर अपना डेरा जमा लेते हैं।

अनोखे-अद्भुत औघड़दानी

जरूरी नहीं कि वहां मंदिर खड़ा हो जाए। कभी वह पेड़ के नीचे आराम करते मिल जाएंगे। कभी नदी के बीच पत्थरों के साथ केलि करते मिल जाएंगे। कभी घर-आंगन में छोटी-सी कांसे की थाली में कुछ क्षणों के लिए विराज जाएंगे और कभी केवल बमभोला के बोल में। कभी गीत में, कभी नृत्य में। कभी पत्थर में, कभी सोने में। कभी मिट्टी में, कभी पानी में। कभी वायु में, कभी प्राणों के साथ जपे जाते बीज में। कहां पहुंच जाएंगे, कुछ ठिकाना नहीं।

चिता की भस्म को विभूति और विभूति को भस्म बनाते उन्हें देर नहीं लगती। श्मशान उनके खेल का मैदान है। मृत्यु उनके कंठ की शोभा है। विश्व के मोहक सौंदर्य की कला उनके ललाट की शोभा है। भय को उन्होंने बांहों में, गले में पहन रखा है। दिशाएं उनका वस्त्र हैं।

कुछ नहीं होना ही ऐश्वर्य

हाथ में भिक्षा-पात्र, पर औघड़दानी ऐसे कि कोई खाली हाथ लौटा नहीं, मनमाना लेकर गया। तुलसीदास के विधाता ब्रह्मा घबरा उठे और पार्वती से कहा कि क्या तुम्हारे ये पति देवता बौरा गए हैं, जिन अभागों के ललाट में सुख का चिह्न भी नहीं लिखा था, उनको स्वर्ग भेजते-भेजते नाकों दम है। यह अधिकार दूसरे को सौंपिए, इससे अच्छा तो भीख मांगकर जीना है।

भारत का मन ऐसे बौराए देवता पर सहज लुभा जाता है और ऐसे देवता से जुड़कर ही हर एक मन महीप बना रहता है। कभी अनुभव नहीं करता कि वह कहीं से हीन है। जो अपने को हीन अनुभव करता है, वह फिर इस महादेव से जुड़ा नहीं, क्योंकि जो जुड़ेगा, वह सहज ही समझ लेगा कि अकिंचनता ही तो ऐश्वर्य है। न कुछ होना ही ऐश्वर्य को निमंत्रण है।

शिवसाधना और शवसाधना में कोई फर्क नहीं है। श में इ की शक्ति की मात्रा भर लगा दें, शिवसाधना हो जाए। जो कुछ जड़ है, मृत है, सोया है, उसमें शक्ति है। उसमें भी चैतन्य-प्रतिभा है, उसे पहचानो। बस, शिव उपस्थित हो जाएंगे, सौम्य रूप में। जो उसे नहीं पहचानते, जो अपनी शक्ति नहीं पहचानते या फिर अपनी शक्ति को निजी शक्ति मानते हैं, उनके लिए शिव महाकाल है, महारुद्र हैं, प्रलयंकर हैं, अघोर भैरव हैं।

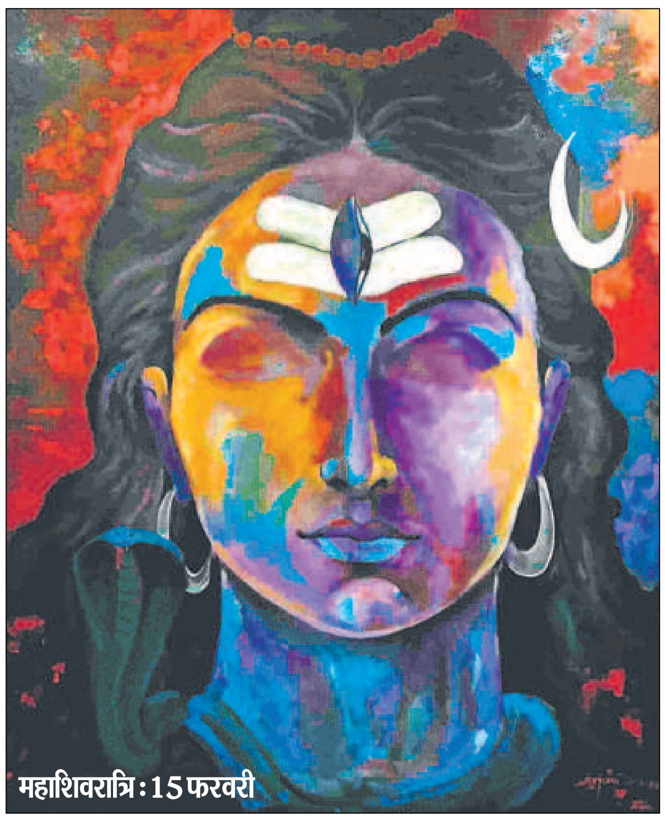

महाशिवरात्रि : 15 फरवरी

सब कुछ बांटते चलो

शिव का ध्यान इस देश की मिट्टी, नदी, आग, हवा और आसमानी रंगत का ध्यान है। इस देश के मन, इस देश की इतनी परिपक्व बुद्धि और इस देश की स्मिता का ध्यान है। इस देश की महाशक्ति के साथ रचे हुए एक ऐसे मंगल का ध्यान है, जिसमें हिमालय की रत्न संपदा न्योछावर हो जाती है। प्रकाश के रूप देवता अघा जाते हैं। अंधकार के रूप प्रेत-बेताल अघा जाते हैं। नाग मणिहार बन जाता है। गंगा मालती माल बन जाती है।

दुकूल बारात विदा होती है, तो हिमालय अकिंचन हो जाते हैं। उनके पास बिटिया को देने के लिए बस रह जाता है बावन हंडा सोहाग। शंकर चिंतित हो जाते हैं कि बाप रे बाप, पार्वती वैसे ही बड़ी गुमान वाली, बावन हंडा सोहाग लेकर चलेंगी, तो बस इन्हीं की चलेगी। उन्होंने चाल चली कि बूढ़ा बैल है, इतना सोहाग ले जाकर क्या करोगी, रास्ते में बांटती चलो।

शिव-शक्ति का संतुलन

लोक में कथा है, तपसी स्त्रियों ने नहीं लिया। रानियों ने नहीं लिया। लिया तो साग-सब्जी बेचने वाली स्त्रियों ने। खटने वाली धोबिनों ने ओर उन सबने जिनको हम सतीत्व की मर्यादा नहीं देते। सबने सोहाग पाया। शिव निश्चिंत हुए कि अब पार्वती कुछ वश में रहेंगी। पर जितने भी हंडे बच रहे थे, उनका पुण्य प्रताप, चलती है पार्वती की ही। शिव के हाथ में चाभी नहीं है और प्रतिदिन ये भूखे-नंगे की ओर से खप्पर लिए पहुंच जाते हैं, अन्नपूर्णा, पेट भरो। कितनी भूख निवारती हैं भवानी और थकती नहीं।

शिव का स्मरण गृहस्थी के सुख का स्मरण है। जहां गृहिणी सब कुछ है, उसी के बलबूते पर, उसकी उदारता और उसकी सौभाग्य-महिमा के बल पर संसार चलता है। एक ऐसे घर का स्मरण है, जो सबका घर है और किसी एक का घर नहीं है। जो बच्चों के लड़ने-झगड़ने से भरा-पूरा रहता है और जो घरवाले की निश्चिंतता में मस्ताया रहता है। इस सामान्य घरेलू जीवन को सहज भाव से लेना, इसके सुख-दुख को, हर्ष-विषाद को, राग-द्वेष को और ज्ञान-अज्ञान को, दिन-रात को ऐसे लेना कि ये सब प्रकाश के ही खेल हैं। अंधकार भी प्रकाश की ही लीला है। मृत्यु भी जीवन के छंद की यति है, एक विरामचिह्न है, उससे जीवन का वाक्यार्थ लगता है।

शिव का तांडव, शक्ति के संतुलन के लिए और देवी का लास्य, शिव की सरसता के आवाहन के लिए होता है। यदि इतना ही हम आज शिवरात्रि के दिन स्मरण करें कि यह रात शिव-पार्वती के सोहाग की ही रात नहीं, यह विश्व-सृष्टि के बीच संवाद की स्थिति लाने वाली, व्यष्टि-समष्टि के बीच समरसता स्थापित करने वाली उत्सव रात्रि है। इसका एक-एक क्षण चिन्मय प्रकाश की ताल पर नाच रहा है। एक-एक क्षण अपूर्व उल्लास की नई हिलोर है, तो हम शिव को उस उल्लास में पा लेंगे।

सप्ताह के व्रत-त्योहार

10 फरवरी से 16 फरवरी 2026

10 फरवरी (मंगलवार) : फाल्गुन कृष्ण अष्टमी तिथि प्रातः 07.28 मिनट तक।

11 फरवरी (बुधवार) : फाल्गुन कृष्ण नवमी तिथि प्रातः 09.59 मिनट तक। भद्रा रात्रि 11.11 मिनट से। गंडमूल प्रातः 10.53 मिनट से।

12 फरवरी (गुरुवार) : फाल्गुन कृष्ण दशमी तिथि दोपहर 12.23 मिनट तक। भद्रा दोपहर 12.23 मिनट तक। फाल्गुन संक्रांति। स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती। गंडमूल विचार।

13 फरवरी (शुक्रवार) : फाल्गुन कृष्ण एकादशी तिथि दोपहर 02.26 मिनट तक पश्चात द्वादशी तिथि। विजया एकादशी व्रत। गंडमूल सायं 04.13 मिनट तक।

14 फरवरी (शनिवार) : फाल्गुन कृष्ण द्वादशी तिथि सायं 04.02 मिनट तक पश्चात त्रयोदशी तिथि। शनि प्रदोष व्रत।

15 फरवरी (रविवार) : फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी तिथि सायं 05.05 मिनट तक पश्चात चतुर्दशी तिथि। भद्रा सायं 05.05 मिनट से रात्रि 05.20 मिनट (सूर्योदय पूर्व) तक। श्री महाशिवरात्रि व्रत।

16 फरवरी (सोमवार) : फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि सायं 05.35 मिनट तक पश्चात अमावस तिथि।

-पं. ऋभुकांत गोस्वामी

आस्था-अनास्था

डॉ. प्रकाशचंद्र गंगराड़े

कष्ट दूर कर सुख-समृद्धि देता पीपल

पीपल के वृक्ष की पूजा क्यों की जाती है?

-कुमार अश्वत्थ, दिल्ली

तैत्तिरीय संहिता में प्रकृति के सात पावन वृक्षों में पीपल की गणना है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में भी पीपल की पवित्रता के संदर्भ में उल्लेख मिलता है। पद्मपुराण के अनुसार पीपल का वृक्ष भगवान विष्णु का रूप है, इसीलिए इसे धार्मिक क्षेत्र में श्रेष्ठ देव वृक्ष की पदवी मिली है। अनेक अवसरों पर पीपल की पूजा का विधान है। सोमवती अमावस्या के दिन पीपल के वृक्ष में साक्षात भगवान विष्णु एवं लक्ष्मी का वास होता है।

पुराणों में पीपल (अश्वत्थ) का बहुत महत्व बताया गया है। स्कंद पुराण के अनुसार, पीपल के पेड़ में त्रिवेद यानी ब्रह्मा, विष्णु और महेश का वास माना जाता है। मान्यता है कि पीपल के मूल (जड़) में भगवान ब्रह्मा, तने में भगवान विष्णु और ऊपरी शाखाओं में भगवान शिव विराजते हैं। इसके अलावा, पीपल में पितरों का वास भी माना जाता है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं- 'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां।'

(श्रीमद्भगवद्गीता 10.26)

अर्थात मैं सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूं। इस कथन में उन्होंने अपने आपको पीपल के वृक्ष में समासीन घोषित किया है।

पद्मपुराण के मतानुसार पीपल को प्रणाम करने और उसकी परिक्रमा करने से आयु लंबी होती है। जो व्यक्ति इस वृक्ष को पानी देता है, वह सभी पापों से छुटकारा पाकर स्वर्ग में जाता है। पीपल में पितरों का वास माना गया है। इसमें सब तीर्थों का निवास भी होता है, इसलिए मुंडन आदि संस्कार पीपल के नीचे करवाने का प्रचलन है।

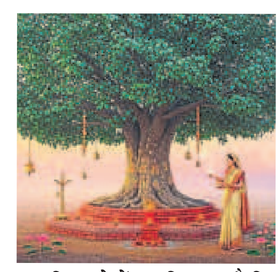

महिलाओं में यह विश्वास है कि पीपल की निरंतर पूजा-अर्चना, परिक्रमा करके जल चढ़ाते रहने से संतान की प्राप्ति होती है। पुण्य मिलता है। अदृश्य आत्माएं तृप्त होकर सहायक बनती हैं। कामना पूर्ति के लिए पीपल के तने पर सूत लपेटने की भी परंपरा है। पीपल की जड़ में शनिवार को जल चढ़ाने और दीपक जलाने से अनेक प्रकार के कष्टों का निवारण होता है। शनि की जब साढ़ेसाती होती है, तो लोग पीपल के वृक्ष का पूजन और परिक्रमा करते हैं। इससे शनि जनित कष्ट कम होते हैं और उनकी कृपा प्राप्त होती है।

इसकी छाल यज्ञ, हवन, पूजापाठ, पुराण कथा आदि के लिए श्रेष्ठ मानी गई है। पीपल के पत्तों से शुभ काम में वंदनवार भी बनाए जाते हैं। वातावरण के दूषित तत्वों, कीटाणुओं को नष्ट करने के कारण पीपल को देवतुल्य माना जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टि से पीपल निरंतर 24 घंटे आक्सीजन देने वाला अद्भुत वृक्ष है। इसके निकट रहने से प्राणशक्ति बढ़ती है। इसके अलावा पीपल के पत्ते, फल आदि में औषधीय गुण होने के कारण यह रोगनाशक भी होता है।

(साभार : 'पुस्तक महल', दिल्ली)

चंद्र जयंती (15 फरवरी)

शिव ने मस्तक पर धारण किया चंद्रमा

चंद्रमा का जन्म फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को हुआ था। शिव-पार्वती के विवाह की इस तिथि को महाशिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। शिव ने चंद्रमा को इसी दिन अपने मस्तक पर धारण किया था।

ऋग्वेद के 'पुरुष सूक्त' खंड में वर्णन है कि चंद्रमा का जन्म मन से और सूर्य का जन्म आदिम सत्ता की आंखों से हुआ था। *'चंद्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत'*, इसलिए चंद्रमा को 'मन' या मन के अधिष्ठाता देवता के रूप में पूजा जाता है। मन जिसकी कोई थाह नहीं है। मन की जीवन में निर्णायक भूमिका होती है, क्योंकि कहा गया है- 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।' नव ग्रहों में रानी और संबंधों में मां के रूप में प्रतिष्ठित, कोमल भावनाओं का प्रतीक चंद्रमा राजसी सुख भी देता है।

मत्स्य एवं अग्नि पुराण में ऐसा वर्णन है कि जब ब्रह्माजी सृष्टि की रचना कर रहे थे, तो उन्होंने संकल्प से अपने दस मानस पुत्रों की उत्पत्ति की। इनमें- अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, मरीचि, पुलह, क्रतु, भृगु, वसिष्ठ, दक्ष और नारद थे। इनमें अत्रि ऋषि का विवाह प्रजापति कर्दम और देवहूति की कन्या अनसूया से हुआ। अनसूया से दुर्वासा, दत्तात्रेय और सोम तीन पुत्र हुए। सोम ही चंद्र के नाम से जाने जाते हैं। वैदिक काल में सोम का स्थान प्रमुख देवताओं में था। सूर्य, अग्नि और इंद्र आदि देवताओं की तरह सोम के भी स्तुति मंत्र प्रचलित हैं।

चंद्रमा के जन्म की एक अन्य कथा भी है। पौराणिक कथा के अनुसार जब देवता और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था, तो उसमें चौदह रत्न निकले। चंद्रमा इन्हीं में से एक थे। यद्यपि ग्रह रूप में चंद्रमा की उपस्थिति समुद्र मंथन से पहले भी थी। समुद्र से निकले चौदह रत्नों में से दो को शिव ने ग्रहण किया। एक, कालकूट विष और दूसरा चंद्रमा। ऐसी मान्यता है कि जब विष की ज्वाला से शिव का मस्तिष्क जलने लगा, तो उसे शीतलता प्रदान करने के लिए उन्होंने मस्तक पर चंद्रमा को धारण किया।

इन कथाओं के बीच चंद्रमा के जन्म का पद्म पुराण में भी जिक्र आता है। ब्रह्माजी ने अपने मानस पुत्र अत्रि को सृष्टि के विस्तार की आज्ञा दी। ऋषि अत्रि ने 'अनुत्तर' नाम का तप करना आरंभ कर दिया। तप करते हुए ऋषि के नेत्रों से जल के कुछ कण टपक गए। दिव्य रोशनी से जगमगाते हुए उन कणों को, पुत्र की कामना से दिशाओं ने स्त्री रूप में धारण कर लिया, लेकिन वे उस तेज को संभाल नहीं पाईं और उसे त्याग दिया। ब्रह्माजी ने उस त्यागे हुए गर्भ को पुरुष रूप दिया। यही पुरुष रूप चंद्रमा है। चंद्रमा का विवाह दक्ष प्रजापति की सत्ताइस नक्षत्र कन्याओं से हुआ। पत्नी रोहिणी के प्रति विशेष लगाव के कारण दक्ष ने उन्हें क्षय रोग का शाप दिया था, जिसे भगवान शिव ने आंशिक रूप से ठीक किया। इसी कारण चंद्रमा घटते और बढ़ते हैं।

अरुण कुमार जैमिनि

विचार

विचार नहीं भाव बदलिए

आचार्य महाप्रज्ञ

विचार अच्छा है। विचार बुरा है। इसका अर्थ है कि कोई उसे अच्छा या बुरा बना रहा है। हवा ठंडी है। हवा गर्म है। इसका अर्थ है कि कोई उसे ठंडा या गर्म बना रहा है।

हम विचार को सीधा पकड़ते हैं। उसको अच्छा या बुरा बनाने वाला पर्दे के पीछे छिपा रहता है। कौन बना रहा है उसे अच्छा या बुरा? हम विचार को रोकना चाहते हैं, क्योंकि अच्छा विचार नहीं आ रहा है। पर विचार को रोककर करेंगे क्या? कैसे रोक पाएंगे? जब तक भाव को नहीं पकड़ेंगे, तब तक बेचारा विचार क्या करेगा? वह तो बेचारा है। पकड़ना है, तो भाव को पकड़ो।

प्रश्न होना चाहिए कि क्या भाव को बदला जा सकता है? चिंतन या विचार को बदलना जरूरी नहीं है। जरूरी है भाव को बदलना। विचार महान संपदा है, तो बड़ा खतरा भी है। जितने-जितने खतरे पैदा हुए हैं, वे सब विचार ने उत्पन्न किए हैं, किंतु यह भी एकांगी सत्य है। यह विचार पर आरोपण मात्र है। विचार न संपदा है और न खतरा। संपदा है भाव और खतरा है भाव। पूरा व्यक्तित्व भावों से निर्मित व्यक्तित्व है। विचार उसकी एक तरंग है, एक रश्मि है। वह समग्र नहीं है। विचार के पीछे जो है, वह समग्र है। जब तक उस पर हमारा ध्यान केंद्रित नहीं होगा, तब तक विचारों को रोकने की उधेड़बुन में समय बीतेगा, अर्थ कुछ भी नहीं होगा।

जब व्यक्ति ध्यान करने बैठता है, तब विचार बहुत आते हैं। व्यक्ति का पहला प्रश्न होता है कि उन विचारों को कैसे रोकें? मैं पूछता हूं, उन्हें रोकने की क्या आवश्यकता है? विचार आते हैं, आने दें। जो अपने आप आते हैं, उन्हें आने दें, रोकें नहीं।

ध्यान का अर्थ विचारों को रोकना नहीं है। उसका अर्थ है भावों को बदलना। जब तक रागभाव और द्वेषभाव है, तब तक विचार आएंगे। जब ये दोनों भाव सक्रिय होते हैं, तब विचारों की शृंखला चल पड़ती है। उसको रोका नहीं जा सकता।

राग और द्वेष विचारों के घटक हैं। यह जो कहा जाता है कि मनुष्य का विकास विचारों के आधार पर हुआ है, यह नंबर दो की बात है। मुख्य बात है कि मनुष्य का विकास भाव जगत से हुआ है। भावना ने विचार को जन्म दिया और विचार ने विकास का द्वारा खोल दिया। हमें साथ-ही-साथ यह भी कहना होगा कि भाव ने विचार को जन्म दिया और विचार ने विनाश को जन्म दिया। विकास और विनाश दोनों का संबंध विचारों से है और उन विचारों का संबंध भाव से है। भाव, विचार और विकास। भाव, विचार और विनाश। यह सूत्र बन गया।

अध्यात्म के आचार्यों ने कहा- निष्काम कर्म करो। कृष्ण ने कहा- अनासक्त कर्म करो। यह बहुत सीधी-सी बात लगती है। प्रश्न है कि निष्काम और अनासक्त कैसे रहा जा सकता है? निष्काम और अनासक्ति की साधना कठिनतम साधना है। जब तक रागात्मक और द्वेषात्मक भावों पर हमारा नियंत्रण नहीं हो जाता, तब तक निष्काम और अनासक्त योग नहीं सधता। आसक्ति की तीव्रता बनी-की-बनी रहती है। एक बहाना जरूर मिल जाता है कि आदमी अकरणीय कार्य भी कर लेता है और जब उसका समाधान देना होता है, तब निष्काम कर्म और अनासक्ति की दुहाई देने लग जाता है। वह कह देता है, मैंने जो किया, वह पूर्ण निष्काम भाव से किया है, अनासक्त भाव से किया है। निष्काम कर्म और अनासक्त योग की साधना में बहुत तपना पड़ता है, खपना पड़ता है।

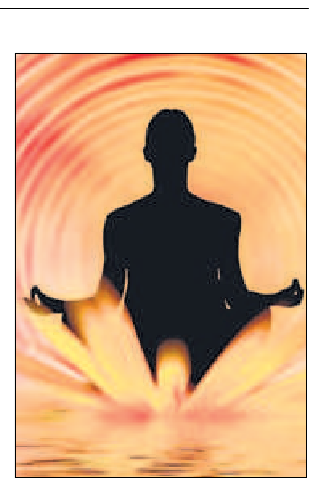

राग का प्रतिपक्ष है विराग। विराग का अर्थ है, न राग और न द्वेष। इसी विराग या वैराग्य का नाम है निष्काम कर्म, अनासक्ति योग। विराग भावना जागे, यह आवश्यक है। वैराग्य का अर्थ केवल साधु बनना नहीं है।

भेजें अपने सवाल

स्वर्ग-नरक की कल्पना का आधार क्या है?

पाप क्या है, पुण्य क्या है? धर्म क्या है, अधर्म क्या है? ईश्वर की आराधना कैसे करें? ऐसे सवाल अकसर हमारे मन में उठते हैं, पर इनका जवाब हमारे पास नहीं होता। मन-मस्तिष्क में आने वाले ऐसे ही सवालों के जवाब हमारे पैनल में शामिल धर्माचार्य आपको देंगे।

अपने सवाल हमें इस पते पर भेजें :
धर्मक्षेत्र, हिन्दुस्तान, 11वां तल, द आइकॉन टॉवर, एफ सी-24 सी, फिल्म सिटी, सेक्टर-16ए, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर-201301 (उत्तर प्रदेश)

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

मेष : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। नौकरी के लिए परीक्षा व साक्षात्कारादि कार्यों में सफलता मिलेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। आय में वृद्धि भी होगी।

वृष : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर भी मिलेंगे। किसी मित्र का सहयोग मिलेगा।

मिथुन : आत्मविश्वास बहुत रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ अधिक रहेगी। लाभ के अवसर भी मिलेंगे। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

कर्क : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। संयत रहें। भावनाओं को वश में रखें। कारोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं।

सिंह : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। पिता का साथ मिलेगा। खर्चों में अधिकता रहेगी।

कन्या : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन परेशान रहेगा। पिता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। किसी मित्र के सहयोग से नौकरी के अवसर मिल सकते हैं।

तुला : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। आत्मविश्वास भी बहुत रहेगा। नौकरी में बदलाव की संभावना बन रही है। माता-पिता से दूर किसी दूसरे स्थान पर भी जा सकते हैं।

वृश्चिक : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। नौकरी में बदलाव के साथ तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

धनु : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। कारोबार में वृद्धि होगी।

मकर : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। भवन सुख में वृद्धि हो सकती है। पिता से धन मिल सकता है। किसी रुके हुए धन की प्राप्ति भी हो सकती है। शैक्षिक कार्यों पर ध्यान दें।

कुंभ : कला व संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। किसी मित्र के सहयोग से नौकरी में बदलाव हो सकता है। तरक्की के अवसर भी मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी।

मीन : संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है।

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

10 फरवरी, मंगलवार, **शक संवत्**: 21 माघ (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग**: 28 माघ मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम**: 21 शब्बान, 1447, **विक्रमी संवत्**: फाल्गुन कृष्ण अष्टमी तिथि प्रातः 07.28 मिनट तक पश्चात नवमी तिथि, विशाखा नक्षत्र प्रातः 07.55 मिनट तक पश्चात अनुराधा नक्षत्र, ध्रुव योग रात्रि 01.42 मिनट तक पश्चात व्याघात योग, कौलव करण। चंद्रमा वृश्चिक राशि में (दिन-रात)।

सूर्य उत्तरायण। सूर्य दक्षिण गोल। शिशिर ऋतु। अपराह्न 03 बजे से सायं 04.30 मिनट तक राहुकालम्।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया यह बताएं कि बालों में तेल लगाने के क्या नियम हैं? -**लक्षणा विजय**, कानपुर

- मंगलवार को बालों में तेल लगाना स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं होता। गुरुवार को तेल लगाना आर्थिक रूप से परेशानी देता है। शुक्रवार को बालों में तेल लगाना धन हानि तथा भाग्य को प्रभावित करता है। रविवार को तेल लगाना स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को जन्म देता है।
- सोमवार को तेल लगाना मान-सम्मान देता है। बुधवार को तेल लगाना आर्थिक लाभ देता है। शनिवार को तेल लगाना जीवन में खुशी देता है। ये नियम उन लोगों पर नहीं लागू होते, जो लोग प्रतिदिन तेल लगाते हैं।

वर्ग पहेली : 8236

■	1	2			3		4	
5	■		■	■		■		■
6				7	■	8		
	■		■		■	■		■
9	10	■	11			■	12	13
■		■	■		■	14	■	
15			■	16				
■		■	17	■	■		■	
18								■

बाएं से दाएं
1. घर से बेघर करना; निर्वासित करना; निष्कासित करना (5,3)
6. बचत का लेखा; बचे हुए धन का हिसाब-किताब (3,2)
8. सरोकार; साथ; नाता; रिश्ता; लगाव; वास्ता; संपर्क; मैत्री; विवाह (3)
9. घ्राणेंद्री; नासा; नासिका; इज्जत; मान (2)
11. उन्नतिशील; धनी; समृद्ध; सफल; समाप्त (3)
12. पोली लंबी गोल वस्तु; कमल की डंडी; धातु की नली; पानी की टोंटी (2)
15. निवास; घर; गृह (3)
16. उपद्रवी; कलह करने वाला; विवादप्रिय (5)
18. ऐसी स्थिति उत्पन्न होना जिससे जीवित रहना बहुत कठिन जान पड़ता हो; नाक में दम होना; प्राण बचना कठिन दिखाई देना; हैरानी होना (2,2,1,3)

ऊपर से नीचे
2. पृथ्वी के नीचे; पाताल में छठा लोक (4)
3. कन; टुकड़ा; दाना; सूजी (2)
4. राखी; सलोनो (5)
5. दबाने के लिए प्रवृत्त करना; दबाने का काम करवाना (4)
7. तीसरे स्थान पर आए प्रतियोगी को मिलने वाला पदक; तांबे का तमगा (2,3)
10. कड़वा होने का भाव (5)
13. कमजोरी; तथ्यहीनता; तर्कहीनता; लचर होने का भाव (4)
14. अतिथि; अभ्यागत; दामाद; पाहुना (4)
17. आर्तनाद; कोलाहल; व्यापक चर्चा ख्याति (2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8235

1 त	2 ह	स	न	3 ह	स	4 क	र	ना
■	ट	■	■	रा	■	ति	■	■
5 अ	ना	मि	6 का	■	7 च	प	ल	8 ता
ने	■	■	9 न	ग	■	य	■	र
10 का	ला	■	न	■	11 उ	■	12 का	न
र्थ	■	13 हा	■	14 दा	म	■	■	हा
15 क	म	ल	ज	■	16 स	रा	17 स	र
■	■	चा	■	18 प	■	■	मू	■
19 उ	थ	ल	पु	थ	ल	म	चा	ना

सुडोकू : 8218

* आसान

1	5	9		7	6			3
			1					
		7			3			4
3	8			5		2		
		4				5		
		5		2			7	1
8			6			4		
					8			
5			2	3		1	8	9

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8217

6	4	5	1	7	8	3	2	9
3	8	7	9	2	5	1	6	4
1	2	9	4	6	3	7	8	5
5	3	4	8	1	7	6	9	2
9	1	8	6	3	2	5	4	7
2	7	6	5	9	4	8	1	3
8	5	1	7	4	9	2	3	6
7	9	3	2	8	6	4	5	1
4	6	2	3	5	1	9	7	8

संपादकीय जागरण

मंगलवार, 10 फरवरी, 2026 : फाल्गुन कृष्ण - 8 वि. 2082

कठिन समय में दृढ़ निश्चय ही सहायक होता है

साइबर ठगी पर सख्ती

साइबर धोखाधड़ी और विशेष रूप से डिजिटल अरेस्ट के जरिये लोगों का पैसा हड़प करने के मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने जिस तरह सीबीआइ, बैंकों और रिजर्व बैंक के रवैये पर नाराजगी प्रकट की, उससे यही पता चलता है कि लोगों को ठगी से बचाने के लिए जो कुछ किया जाना चाहिए, वह नहीं किया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी तो बहुत ही गंभीर है कि कई मामलों और खासकर डिजिटल अरेस्ट के मामलों में बैंक अधिकारी आरोपितों से मिले होते हैं और इसी कारण साइबर ठग लोगों की जमापूंजी आसानी से हड़प ले रहे हैं। इस टिप्पणी को निराधार नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यह देखने में आया है कि ठगी के जरिये इधर-उधर हस्तांतरित की गई रकम को जब्त करने के लिए बैंक समय पर कार्रवाई नहीं करते। समझना कठिन है कि जिन खातों से रकम इधर-उधर की जाती है, उनके खिलाफ बैंक तत्परता के साथ कार्रवाई क्यों नहीं करते? तत्परता का यह अभाव ही बैंकों की भूमिका पर सवाल खड़े करता है। यदि बैंक कर्मचारी सतर्क रहें तो साइबर फ्राड के मामलों पर एक बड़ी हद तक लगाम लग सकती है। बैंकों के पास ऐसा कोई सिस्टम होना ही चाहिए कि यदि किसी खाते से निकली राशि आनन-फानन एक के बाद एक कई अन्य खातों में स्थानांतरित हो रही हो तो वे उसका संज्ञान ले सकें। आम तौर पर ऐसा साइबर धोखाधड़ी के मामले में ही होता है। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट की ओर से रिजर्व बैंक को ऐसे निर्देश देना आवश्यक हो गया था कि वह जिन खातों से धोखे से निकाला गया पैसा इधर-उधर किया जाता है, उन पर संबंधित बैंकों की जवाबदेही तय करे। आखिर अभी तक ऐसा क्यों नहीं किया जा रहा था?

चूंकि साइबर ठगी के मामलों में पुलिस एवं अन्य एजेंसियों को तत्परता से कार्रवाई करना आवश्यक होता है और प्रायः इसमें ढिलाई देखने को मिलती है, इसलिए सुप्रीम कोर्ट को सीबीआइ को भी निर्देश देना पड़ा कि ऐसे मामलों में तेजी से कार्रवाई की जाए। देखना है कि ऐसा हो पाता है या नहीं, क्योंकि साइबर ठगी के मामले जिस तरह बढ़ रहे हैं, उसे देखते हुए इसमें संदेह है कि सीबीआइ उन सबकी जांच करने में सक्षम होगी। स्पष्ट है कि पुलिस को भी साइबर ठगी के मामलों की जांच में समर्थ होना होगा। सुप्रीम कोर्ट ने साइबर ठगी रोकने के लिए गृह मंत्रालय, रिजर्व बैंक और टेलीकाम अथारिटी के बीच तालमेल बढ़ाने की आवश्यकता जताई और इस संदर्भ में स्टैंडर्ड आपरेटिंग प्रोसीजर पूरे देश में लागू करने के निर्देश दिए। अच्छा होता कि सरकार अब तक यह काम अपने स्तर पर ही कर लेती। वह इससे अनभिज्ञ नहीं हो सकती कि डिजिटल धोखाधड़ी से 54 हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि हड़पी जा चुकी है। यह राशि कई छोटे राज्यों के बजट से भी अधिक है।

स्वागतयोग्य कदम

साइबर ठगों पर नकेल कसने को लेकर दिल्ली पुलिस की उनकी वित्तीय जांच कराने और संपत्ति पर बुलडोजर चलाने की योजना स्वागतयोग्य है। इस योजना के अनुसार, दिल्ली पुलिस देश के किसी भी राज्य से जुड़े साइबर अपराधी के पकड़े जाने पर उसकी वित्तीय जांच कराएगी और फिर उस राज्य सरकार की मदद से उसकी संपत्ति ध्वस्त कराएगी। इस क्रम में पुलिस ने खुर्जा निवासी दो साइबर अपराधियों की वित्तीय जांच शुरू भी कर दी है। ये दोनों अपराधी पिछले एक साल से लाओस में बैठे साइबर अपराधियों के लिए काम कर रहे थे और पुलिस को शक है कि इन्होंने बदले में करोड़ों रुपये प्राप्त किए हैं।

> साइबर ठगों से दिल्ली ही नहीं पूरे देश की पुलिस परेशान है, इसलिए ऐसे अपराधियों पर सख्ती किया जाना जरूरी है

साइबर अपराधियों ने राष्ट्रीय राजधानी ही नहीं पूरे देश की पुलिस को परेशान कर रखा है और देश में हर दिन करोड़ों रुपये ठगे जा रहे हैं। ऐसे में राजधानी की पुलिस इनपर नकेल कसने के लिए नए-नए तरीके अपना रही है। दिल्ली पुलिस साइ हाक अभियान के जरिये बड़े स्तर पर अपराधियों की धरपकड़ कर रही है। विगत 5-6 फरवरी को पुलिस ने साइ हाक अभियान के तीसरे चरण में दिल्ली समेत कई राज्यों में बड़ी कार्रवाई करते हुए 955 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया था। ऐसी उम्मीद की जानी चाहिए कि अब इसके बाद इनमें से अनेक अपराधियों की संपति जब्त कर ध्वस्त की जाएगी और परिणामस्वरूप साइबर अपराध पर प्रभावी अंकुश लग सकेगा।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या अमेरिका से व्यापार समझौते पर कांग्रेस की आपत्ति सही है?

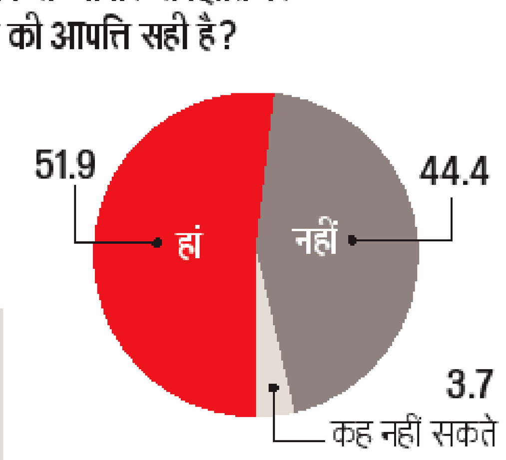

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या वीर सावरकर को भारत रत्न दिया जाना चाहिए?

राष्ट्रीय मिशन बने महाशक्ति बनना

दिव्य कुमार सोती

भारत के महाशक्ति बनने का मार्ग आसान नहीं है और न ही आसान रास्ते से महाशक्ति बना जा सकता है

कुछ समय पहले भारी मुनाफा कमाने वाली एक भारतीय कंपनी ने एक छोटी सी चीनी कंपनी से सौर ऊर्जा से जुड़ी तकनीक खरीदनी चाही, परंतु उसने देने से मना कर दिया। यह तब हुआ, जब भारत अंतरराष्ट्रीय सोलर एलायंस का संस्थापक है। भारत ने फ्रांस के साथ इस अंतरराष्ट्रीय संगठन की स्थापना 2015 में की थी। यह अपनी तरह का पहला बड़ा संगठन है, जिसका मुख्यालय भारत में स्थित है। इसका उद्देश्य 125 सदस्य देशों के साथ मिलकर 2030 तक सौर ऊर्जा उत्पादन में एक ट्रिलियन डालर का निवेश और 1000 गीगावाट सौर ऊर्जा का उत्पादन है। चीन को कई बार इसमें शामिल होने का न्योता दिया गया, पर उसने स्वीकार नहीं किया।

विडंबना यह है कि ऐसे अंतरराष्ट्रीय संगठन के अगुआ भारत की सबसे बड़ी कंपनियों में से एक को चीन की छोटी सी कंपनी के पास ही सौर ऊर्जा से जुड़ी तकनीक मांगने जाना पड़ा। इसका कारण यह है कि हजारों करोड़ रुपये प्रति तिमाही का मुनाफा कमा रही भारतीय कंपनियां भी नई तकनीक के अनुसंधान में भारत में निवेश नहीं करना चाहती हैं। वे खुदरा माल-सेवाओं के आपूर्तिकर्ता मात्र के रूप में अपने व्यापार का विस्तार कर रही हैं और टेक्नोलाजी के लिए दूसरे देशों पर निर्भर हैं। इसी कमजोरी के चलते हम विश्व स्तर पर नेतृत्व देने में अक्षम हैं। विश्व शक्तियां हमें अक्षम ही बने रहने देना चाहती हैं। इसका ताजा उदाहरण अमेरिका के नेतृत्व वाला पैक्स सिलिका गठजोड़ है।

पैक्स सिलिका महत्वपूर्ण तकनीकी क्षेत्रों में काम आने वाले दुर्लभ खनिजों की आपूर्ति और प्रसंस्करण से जुड़ी आपूर्ति श्रृंखलाओं को पिरोकर चीन जैसे देशों के इस क्षेत्र पर नियंत्रण से निकलने के उद्देश्य से बनाया गया है। पहले भारत ने इससे जुड़ने की इच्छा जताई थी, परंतु ट्रंप प्रशासन ने उसे नकार दिया था। इस पर भारत के कुछ उद्योगपतियों ने कहा था कि यदि सरकार उनके साथ सहयोग करे तो वे दुर्लभ खनिजों का खनन और प्रसंस्करण भारत में कर सकते हैं। भारत के पास चीन और ब्राजील के बाद दुर्लभ खनिजों का विश्व का तीसरा सबसे बड़ा भंडार है, जबकि अमेरिका इस मामले में विश्व में सातवें नंबर पर है। ट्रंप साम-दाम-दंड-भेद का प्रयोग कर ग्रीनलैंड पर कब्जे के प्रयास में इसलिए जुटे, क्योंकि ग्रीनलैंड के पास विश्व का आठवां सबसे बड़ा दुर्लभ खनिजों का भंडार है। अगर अमेरिका ग्रीनलैंड को हासिल भी कर ले तब भी 3.4 मीट्रिक टन के साथ उसका स्थान सातवां ही रहेगा। विचारणीय यह है कि दुर्लभ खनिजों के क्षेत्र में भारत को अमेरिका का पिछलग्गू बनना चाहिए या आत्मनिर्भर? जैसे ही भारतीय उद्योगपतियों ने स्वयं इन खनिजों के खनन और प्रसंस्करण करने की बात कही, अमेरिका ने तुरंत अपनी चाल बदलकर भारत को पैक्स सिलिका में जुड़ने के लिए आमंत्रित कर लिया। इसकी वकालत करने वाली एक लाबी के अनुसार इन दुर्लभ खनिजों का खनन और प्रसंस्करण बहुत जटिल प्रक्रिया है, इसलिए भारत का अमेरिका की अगुआई में काम करना आसान रहेगा, पर जब हमें यह सब आसानी से उपलब्ध होने लगेगा तो हम शिथिल पड़ जाएंगे और खनन और प्रसंस्करण तकनीकी में निवेश ही नहीं करेंगे। प्रश्न यह है कि इस जटिल काम को चीन ने कैसे कर लिया?

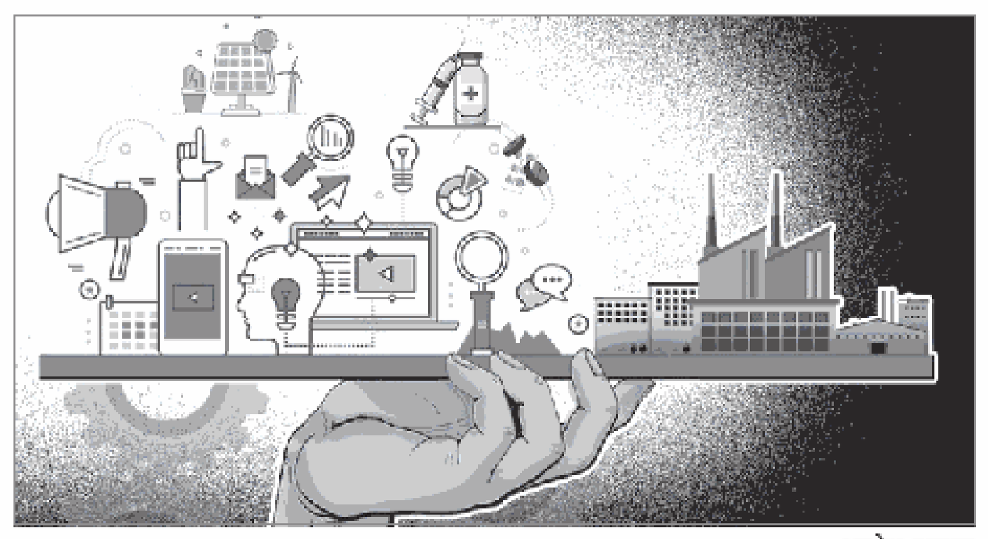

अवधेश राजपूत

चीन 1986 में ही अमेरिका को पीछे छोड़ दुर्लभ खनिजों का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया था। 1985-95 के बीच चीन में इन खनिजों का उत्पादन 464 प्रतिशत बढ़ा। 2004 आते-आते चीन विश्व भर के 90 प्रतिशत दुर्लभ खनिजों का निर्यातक बन चुका था। आज चीन विश्व दुर्लभ खनिजों का 70 प्रतिशत खनन, 90 प्रतिशत शोधन और रेयर अर्थ मैग्नेट के 90 प्रतिशत उत्पादन को नियंत्रित करता है। जो काम चीन 1980-90 के दशक में कर पाया वह हम आज क्यों नहीं कर सकते? आत्मनिर्भरता क्या आत्मसंदेह से आएगी। जब विश्व ने परमाणु तकनीक भारत को देने से मना कर दिया था तो क्या हमने परमाणु बम नहीं बना लिया था? इसके उलट उदाहरण भी देख लीजिए। हम हमेशा फाइटर जेट विदेश से आयात करते रहे हैं। इसके चलते हम आज तक इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं हो सके हैं, जबकि विश्व की हर महाशक्ति अमेरिका, रूस, फ्रांस, यूरोपीय संघ, चीन अपने फाइटर जेट और उसके इंजन स्वयं बनाते हैं। खबरें हैं कि भारत को एक बार फिर लाखों करोड़ रुपये खर्च करके फ्रांस, रूस या अमेरिका में से किसी एक से फाइटर जेट आयात करने पड़ेंगे, क्योंकि भारतीय वायुसेना के पास लड़ाकू विमानों के बस अब मात्र 29 स्क्वाड्रन ही बाकी रह गए हैं, जबकि होने कम से कम 42 स्क्वाड्रन चाहिए। यह स्थिति इसलिए है, क्योंकि तेजस का उत्पादन समय से नहीं हो पाया और स्वदेशी जेट इंजन बनाने का कार्यक्रम भी अधूरा ही रहा।

1989 में प्रारंभ किए गए कावेरी जेट इंजन कार्यक्रम में भारत ने 2008 तक मात्र 2000 करोड़ रुपये का निवेश किया और फिर उसे असफल पाकर तेजस प्रोजेक्ट से अलग कर दिया। पिछले 40 साल में भारत ने कावेरी इंजन कार्यक्रम पर अधिकतम 5000 करोड़ रुपये खर्च किए हैं, जबकि चीन तीन लाख पचास हजार करोड़ रुपये खर्च कर चुका है। आज चीन के पास छठी पीढ़ी के स्वनिर्मित लड़ाकू विमान जे-20 के लिए अपना जेट इंजन तैयार है, जबकि हम चौथी पीढ़ी के लड़ाकू विमान विदेश से खरीदने के लिए तीन-चार लाख करोड़ रुपये खर्च करने वाले हैं। क्या कोई यह वादा कर सकता है कि हम अंतिम बार विदेशी लड़ाकू विमान खरीदने जा रहे हैं? चीन छठी पीढ़ी के 100-120 लड़ाकू विमान बना रहा है और हम चौथी पीढ़ी के 6-12 जहाज बना पा रहे हैं। कारण यह है कि इसके इंजन के लिए हम अमेरिका पर निर्भर हैं। तीन-चार लाख करोड़ रुपये विदेशी लड़ाकू विमानों पर खर्च करने के बाद हमारी सरकार स्वदेशी जेट इंजन के विकास पर कितना खर्च कर पाएगी, यह भी विचारणीय है। जब तक इन सेक्टरों में आत्मनिर्भरता को राष्ट्रीय मिशन नहीं बनाया जाएगा, तब तक भारत के एक आत्मनिर्भर विश्वशक्ति बनने पर प्रश्नचिह्न लगा रहेगा। भारत के महाशक्ति बनने का मार्ग आसान नहीं है और न ही आसान रास्ते से महाशक्ति बना जा सकता है।

(लेखक काउंसिल आफ स्ट्रेटेजिक अफेयर्स से संबद्ध सामरिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

फिर दोराहे पर खड़ा बांग्लादेश

ऋषि गुप्त

कई बार राजनीतिक उथल-पुथल से गुजरे बांग्लादेश के बारे में फिलहाल साफ नहीं कि वहां चुनाव बाद क्या होगा

बांग्लादेश में 12 फरवरी को होने जा रहे आम चुनावों के लिए सभी राजनीतिक दल अपनी-अपनी कमर कस चुके हैं। चुनावी परिणाम ही नए बांग्लादेश की दिशा निर्धारित करेंगे। इस बार अवामी लीग प्रतिबंध के कारण चुनाव से बाहर है, लेकिन पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना फिर भी चुनावी विमर्श का प्रमुख मुद्दा बनी हुई हैं। पिछले तीन दशकों में यह पहला अवसर है, जब बांग्लादेश की 'दो बेगमों'- अवामी लीग की शेख हसीना और बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की खालिदा जिया चुनावी मैदान में नहीं हैं। ऐसे में यह चुनाव नए राजनीतिक समीकरणों के बीच लड़ा जा रहा है। 13वें संसदीय चुनाव में युवाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानी जा रही है, क्योंकि 2024 में जुलाई में शेख हसीना के खिलाफ हुए आंदोलन और उनके इस्तीफे में यही वर्ग सबसे आगे रहा। वर्तमान में 18-35 आयु वर्ग की आबादी लगभग 30 प्रतिशत है, जो आधुनिक तकनीक और सोशल मीडिया से लैस है और जुलाई आंदोलन का प्रमुख प्रतिनिधि मानी जाती है। सवाल यह है कि क्या यह युवा वर्ग छात्र आंदोलन से उभरी जातीय नागरिक पार्टी यानी नेशनल सिटिजंस पार्टी (एनसीपी) को समर्थन देगा या पारंपरिक दल अपने प्रशासनिक अनुभव और संगठनात्मक मजबूती के बल पर फिर सत्ता में लौटेंगे?

लंदन में 17 वर्षों के निर्वासन के बाद खालिदा जिया के पुत्र तारिक रहमान ने बीएनपी की कमान संभाली है। पिछले साल 25 दिसंबर को उनकी बांग्लादेश वापसी के दौरान उमड़ी भीड़ से स्पष्ट हुआ कि 2024 के आंदोलन का राजनीतिक लाभ बीएनपी को मिला है और आगामी चुनावों में उससे काफी उम्मीदें हैं। ढाका पहुंचने पर तारिक रहमान ने कहा, 'आइ हैव ए प्लान यानी मेरे पास बांग्लादेश के विकास की योजना है।' इसी आधार पर पार्टी ने अपने घोषणा पत्र सबसे पहले राष्ट्रीय बदलाव, सामाजिक समानता, आर्थिक स्थिरता, क्षेत्रीय विकास और धार्मिक सौहार्द जैसे मुद्दों को प्रमुखता दी है। बांग्लादेश के चुनावी इतिहास में मुद्दों से अधिक पार्टी और नेतृत्व का प्रभाव रहा है और तारिक रहमान ने पिछले डेढ़ वर्षों में इसी

बांग्लादेश के आम चुनाव पर विश्व की नजर ● एएफपी

दिशा में काम किया है। विदेश में रहते हुए भी वे आनलाइन माध्यम से पार्टी से जुड़े रहे। चुनावी गणित के लिहाज से बीएनपी इस समय एक मजबूत पार्टी मानी जा रही है, जिसे अवामी लीग की अनुपस्थिति का भी लाभ मिल सकता है। हालांकि बीएनपी मजहबी ध्रुवीकरण से बचते हुए अल्पसंख्यक और अवामी लीग समर्थक वोटों को आकर्षित करने की कोशिश कर रही है।

जमात-ए-इस्लामी पहली बार खुलकर नेतृत्व की राजनीति में सामने आई है। 1971 के मुक्ति आंदोलन में पाकिस्तान का साथ देने के कारण यह संगठन लंबे समय तक विवादों में रहा। शेख हसीना के दो दशकों के शासन में इसके कई नेता जेल में रहे या भूमिगत हो गए थे, लेकिन उनकी सरकार के पतन के बाद जमात फिर सक्रिय हुई और उसका नेतृत्व सामने आया, जिसमें प्रमुख अमीर शफीकुर रहमान शामिल हैं। अवामी लीग की अनुपस्थिति ने जमात को अलग राजनीतिक पहचान दी है और अपने मजहबी आधार के सहारे वह चुनावी मैदान में उतरी है। हालांकि जमात के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। उसकी कट्टरपंथी छवि, महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण और संविधान को इस्लामी स्वरूप देने की कोशिशें चिंता का विषय हैं। बांग्लादेश की स्थापना उदारवाद, धार्मिक सद्भाव और महिलाओं की सक्रिय भूमिका के आधार पर हुई थी। ऐसे में यदि जमात सत्ता में आती है, तो पंथनिरपेक्षता के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लग सकते हैं। हाल में शफीकुर रहमान के एक साक्षात्कार में महिलाओं को पार्टी में प्रतिनिधित्व न देने की बात भी चिंता बढ़ाती है। जुलाई आंदोलन के कारण युवाओं की भूमिका इस चुनाव में अहम मानी जा रही है। छात्र नेता नाहिद इस्लाम ने फरवरी 2025 में एनसीपी की स्थापना कर चुनावी राजनीति में प्रवेश किया। हालांकि छात्र आंदोलन का नेतृत्व चुनावी सफलता की गारंटी नहीं होता। एनसीपी ने ढाका और जहांगीरनगर विश्वविद्यालय के छात्र चुनावों में भाग नहीं लिया, जिससे उसकी संगठनात्मक मजबूती पर सवाल उठे। इसके विपरीत, जमात के छात्र संगठन इस्लामी छात्र शिबिर की जीत ने उसकी जमीनी पकड़ को दर्शाया। एनसीपी का जमात के साथ गठबंधन उसकी राजनीतिक अनिश्चितता और अवसरवाद को भी दर्शाता है। अब यह देखना होगा कि युवा, विशेषकर महिलाएं इस गठबंधन को कितना स्वीकार करती हैं।

आंतरिक मुद्दों के बीच बीएनपी, जमात और एनसीपी, तीनों ने भारत के साथ संबंधों पर अलग-अलग रुख अपनाया है। बीएनपी और जमात ने विदेश नीति पर अपेक्षाकृत संयम बरता है, जबकि एनसीपी ने अंतरराष्ट्रीय नदियों के जल बंटवारे, शेख हसीना की वापसी और असमान द्विपक्षीय समझौतों जैसे मुद्दों पर कड़ा रुख अपनाने की बात कही है। पारंपरिक दलों की चुप्पी को विवाद से बचने की रणनीति माना जा सकता है। बांग्लादेश कई बार राजनीतिक उथल-पुथल से गुजरा है, लेकिन उसका राजनीतिक ढांचा कायम रहा है। यदि इस चुनाव में जमात सत्ता में आती है, तो न केवल आंतरिक राजनीति, बल्कि विदेश नीति में भी मजहबी प्रभाव बढ़ सकता है, जो भारत के लिए गंभीर चिंता का विषय बन सकता है।

(लेखक एशिया सोसायटी पालिसी इंस्टीट्यूट, दिल्ली के सहायक निदेशक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

दया, करुणा और कृपा

मानवीय संवेदनाओं के तीन भाव-विचार दया, करुणा और कृपा लोक में अनुभव होते हैं। यह तीनों ही मानवता के संपोषक श्रेष्ठ सद्गुण हैं। ये तीनों शब्द मनुष्य की संवेदनशीलता के क्रमिक विकास को मुखरित करते हैं। हृदय में दया का प्रादुर्भाव तब होता है, जब हम किसी ऐसे व्यक्ति को देखते हैं, जो विपन्न, असमर्थ या कष्ट में है, तो द्रवित होकर उसकी सहायता करने का जो भाव आता है, वह दया है। यह परोपकार की प्रथम सीढ़ी है, जो व्यक्ति को परहित की ओर अग्रसर करती है। दया का ही परिष्कृत रूप करुणा है। जहां दया में 'दूसरे' का भाव होता है, वहीं करुणा में एकात्मता का भाव होता है। करुणा का अर्थ है-सामने वाले के दुख को इस तरह अनुभव करना जैसे वह स्वयं का ही दुख हो। करुणा केवल भाव तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह व्यक्ति को उस दुख के मूल निवारण के लिए सक्रिय करती है। दया क्षणिक हो सकती है, किंतु करुणा एक स्थायी मानसिक अवस्था है, जो प्राणी मात्र के प्रति कल्याण की भावना रखती है। कृपा इन दोनों से ऊर्ध्वगामी है। जब कोई समर्थ पुरुष किसी दीन-दुखी को देखकर सहज ही उसके कल्याण को सुनिश्चित करता है, तो उसका यह पवित्र भाव ही कृपा कहलाती है। कृपा में कल्याण का भाव तो है ही, साथ ही इसमें एक सुरक्षा कवच प्रदान करने की शक्ति भी निहित होती है।

यदि दया बीज है, तो करुणा उस बीज से पनपा वृक्ष है, जो सबको छाया देता है और कृपा वह फल है, जो स्वतः ही साधक की झोली में गिर जाता है। दया व्यक्ति को मनुष्य बनाती है, करुणा उसे ऋषि बनाती है और जिस पर कृपा हो जाए, वह तो धन्य-धन्य हो जाता है। समाज के संतुलित विकास के लिए इन तीनों का सह-अस्तित्व अनिवार्य है, क्योंकि जहां दया समाज की तात्कालिक आवश्यकता है, वहीं करुणा और कृपा आत्मिक शांति और विश्व कल्याण के निष्कंटक मार्ग हैं।

आचार्य नारायण दास

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

एसआइआर का महत्व

संपादकीय 'बंगाल में एसआइआर' ने बंगाल सरकार द्वारा एसआइआर पर फैलाए जा रहे भ्रम को मुखरता से उजागर किया है। जब स्वयं उच्चतम न्यायालय इस प्रक्रिया को अनिवार्य और वैध ठहरा चुका है, तो इसे राजनीतिक रंग देने की कोशिश क्यों की जा रही है? प्रक्रिया की विसंगतियों को दुरुस्त करने के बजाय उसमें बाधा उत्पन्न करना और उसे संपन्न ही नहीं होने देना लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है। विगत चुनाव के दौरान घटित हिंसा, आगजनी, मारपीट, हत्या आदि की घटनाएं राज्य में कानून-व्यवस्था पर सवालिया निशान लगती हैं। बंगाल में बांग्लादेश से घुसपैठियों की आवाजाही राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से चिंतनीय है, जिस पर अंकुश लगना ही चाहिए। इसलिए भी बंगाल में एसआइआर का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। चुनाव आयोग एक स्वायत्त और संवैधानिक संस्था है, जो पूर्णतः निष्पक्षता और पारदर्शिता के साथ सिर्फ अपना कर्तव्य निभा रहा है। एसआइआर में लाखों लोगों के नाम हटने या कटने का कारण उनका स्थान परिवर्तन या मृत्यु या फिर घुसपैठी होना है। विपक्षी राज्यों को केंद्रीय संस्थाओं के साथ सहयोग की भावना से कार्य करना चाहिए, परंतु ऐसा होता दिख नहीं रहा। इससे राज्य और केंद्र सरकार में टकराव की परिस्थितियां निर्मित हो रही हैं, जो देश की संप्रभुता और संघीय ढांचे की मजबूती के लिए ठीक नहीं है। राजनीतिक दलों को जनता के विकास, सहयोग और संविधान के अनुरूप कार्य करना चाहिए, परंतु वे तुच्छ स्वार्थ की पूर्ति में राष्ट्रीय हितों की अनदेखी कर रहे हैं। एसआइआर के साथ ही राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर के माध्यम से घुसपैठियों को खदेड़ने का काम अनवरत जारी रहना चाहिए। बंगाल के मूल निवासी और वास्तविक मतदाताओं को एसआइआर से कोई परेशानी नहीं है। फिर क्यों इसे बेवजह मुद्दा बनाकर राजनीति की जा रही है?

मोहित सोनी, कुक्षी, मध्य प्रदेश

सम्मानित वर्ग का परिहास

मनोज बाजपेयी की विवादास्पद फिल्म के शीर्षक के विरोध में देश के विभिन्न प्रदेशों में आक्रोश पनपता जा रहा है। वेरिफाइड एक्स अकाउंट पर अपलोड किए गए पोस्ट में मनोज बाजपेयी ने फिल्म के शीर्षक पर जो नजरिया रखा है, उससे ब्राह्मण समाज संतुष्ट होता नहीं दिख रहा है। फिल्म प्रोड्यूसर नीरज पांडे भी दबी जुबान में मान चुके हैं कि फिल्म के टाइटल से देश के प्रतिष्ठित वर्ग के समाज को ठेस पहुंची है। बढ़ते विरोध के मद्देनजर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक साहसिक कदम उठाकर फिल्म के डायरेक्टर और टीम सदस्यों के खिलाफ एफआइआर दर्ज कराने का आदेश देकर कानून सम्मत कदम उठाया है। फिल्म के कंटेंट से समूचे ब्राह्मण समाज की भावनाओं को ठेस पहुंचाने एवं सामाजिक सौहार्द बिगड़ने का खतरा बढ़ गया है। फिल्म के टीजर ट्रेलर से जातिवादी जहर उगलता हुआ दिख रहा है। सम्मानित वर्ग पर लांछन लगाने की मंशा झलक रही है। बालीवुड में छदम धर्म निरपेक्षतावादियों का सिंडीकेट समाज के सम्मानित वर्ग की भावनाओं का आखेट करने की आदत से बाज नहीं आ रहा है।

युगल किशोर शर्मा, फरीदाबाद

अराजकतावादी विपक्ष

एक तरफ देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश-विदेश में विकसित भारत व विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की बात करते हैं। वहीं देश का विपक्ष संसद के द्वार पर कालेज स्टाइल में झुंड बनाकर भाजपा सांसद के लिए तर्कहीन, आधारहीन, अमर्यादित व्यवहार व अन्यायपूर्ण तरीके से गद्दार जैसे ओछे शब्दों का प्रयोग कर देश के समक्ष खुद ही हंसी का पात्र बन जाता है। निःसंदेह सरदार रवनीत सिंह बिट्टू के दादा पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री रहे। उन्होंने आतंकवादी गतिविधियों के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया और मुख्यमंत्री रहते अंत में खुद ही आतंकवाद के शिकार हो गए। ऐसे शहादत प्राप्त परिवार के सदस्य को अमर्यादित व अक्षम्य शब्द बोलना निश्चित ही पंजाब प्रदेश ही नहीं देश का भी अपमान है। कांग्रेस नेताओं को यह नहीं भूलना चाहिए कि कुछ समय पहले ही विदेशी धरती से राहुल गांधी ने कहा था कि देश में सिखों के प्रति अन्याय हो रहा है। क्या गद्दार शब्द एक राजनीतिक शब्द है? जब चाहा तब बोल दिया, निश्चित ही यह तथाकथित दादागिरी वाली अपरिपक्व, स्तरहीन राजनीति की पराकाष्ठा है। लोकसभा में प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव ना बोलने देना, महिला सांसदों द्वारा प्रधानमंत्री की सीट का घेराव कर लेना, एक सोची-समझी नापाक साजिश थी। इसी पैटर्न के आधार पर दिल्ली में सीएए विरोध प्रदर्शनों के दौरान भी महिलाओं व बच्चों को आगे कर दिया जाता था।

दीपक गौतम, सोनीपत

पोस्ट

पाकिस्तान ने बांग्लादेश को उकसाकर वर्ल्ड कप से बाहर करा दिया। उसका साथ देने के नाम पर पहले नौटंकी की कि इंडिया से मैच नहीं खेलेगा, अब कह रहा है कि ज्यादा पैसे दोगे तो खेल लेंगे। चीन ने पैसा दिया तो उइगर मुसलमानों पर चुप रहा। अमेरिका ने पैसा दिया तो ईरान पर चुप रहा। गजब भिखारी देश है भाई।

सुशांत सिन्हा@SushantBSinha

आज के दौर में हर देश के लिए ऊर्जा आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करना जरूरी है। भारत विशेष रूप से संवेदनशील है, क्योंकि हम अपने तेल-गैस का लगभग 90 प्रतिशत आयात करते हैं। तीन ओर से समुद्र से घिरे होने के कारण शत्रुतापूर्ण परिस्थितियों में नाकाबंदी की आशंका भी रहती है। ऐसे में उत्पादन बढ़ाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

अनिल अग्रवाल@AnilAgarwal_Ved

भारत को अमेरिका से चार लाख करोड़ रुपये का लाभ होता है, जो पूरी दुनिया से होने वाले व्यापार लाभ का 55 प्रतिशत है। उसे बचाने और बढ़ाने के लिए कुछ देना पड़े तो भी सौदा घाटे का नहीं। देश बिकने से बचाना है तो चीन को पैसे देना बंद करें।

शिव कांत@shivkant

जनपथ

हंगामा करना खड़ा है मकसद जब साफ,
लोकप्रिय इस देश में कैसे होंगे आप?
कैसे होंगे आप बनेंगे कैसे नायक,
सदन करेगा याद आपको ज्यों खलनायक।
स्वर्ग बैठ दुष्यंत देखते होंगे ड्रामा,
नेताओं का आज हुआ 'मकसद' हंगामा!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 207

एक नजर में

मारुति ने 2025 में रेल से 5.85 लाख कारें भेजीं

नई दिल्ली: दिग्गज वाहन निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी ने सोमवार को कहा कि उसे कैलेंडर वर्ष 2025 के दौरान रेल के जरिये 5.85 लाख कारें देश के विभिन्न हिस्सों में भेजी हैं। कंपनी के अनुसार, इसमें 2024 की तुलना में 18 प्रतिशत की वृद्धि रही है। कंपनी की कुल कार ढुलाई में रेल का हिस्सा 2025 में बढ़कर 26 प्रतिशत हो गया है जो 2016 में 5.1 प्रतिशत था। मारुति सुजुकी इंडिया के सीईओ हिसाशी ताकेऊची का कहना है कि हमने वित्त वर्ष 2030-31 तक रेल से वाहन ढुलाई की हिस्सेदारी को बढ़ाकर 35 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य रखा है। (प्रेट्र)

बैंक आफ बड़ौदा ने कार लोन पर ब्याज घटाया

नई दिल्ली: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक आफ बड़ौदा ने सोमवार को अपने कार लोन की ब्याज दरों में 30 आधार अंकों की कटौती की घोषणा की। अब बैंक के फ्लोटिंग कार लोन पर ब्याज की दर 7.6 प्रतिशत प्रति वर्ष हो गई है। नई दर तुरंत प्रभाव से शुरू हो गई है। साथ ही बैंक 8.5 प्रतिशत की फिक्स्ड ब्याज दर पर भी कार लोन दे रहा है। बैंक ने कहा कि 7.6 प्रतिशत वाली दर नई कार खरीदने पर उपलब्ध है और यह कर्ज लेने वाले के क्रेडिट प्रोफाइल से जुड़ी हुई है। (प्रेट्र)

इस वर्ष 96 लाख टन खाद्य तेल के उत्पादन की संभावना

नई दिल्ली: भारतीय वनस्पति तेल उत्पादक संघ (आइवीपीए) ने विपणन वर्ष 2025-26 के दौरान घरेलू खाद्य तेल उत्पादन 96 लाख टन रहने का अनुमान जताया है। आइवीपीए का कहना है कि घरेलू मांग को पूरा करने के लिए 1.67 करोड़ टन कुकिंग तेल का आयात करना होगा। भारत मुख्य रूप से अर्जेंटीना और ब्राजील से सोयाबीन तेल का आयात करता है, जबकि मलेशिया और इंडोनेशिया से पाम तेल का आयात किया जाता है। भारत को कुल घरेलू मांग का लगभग 60 प्रतिशत खाद्य तेल आयात करना पड़ता है। (प्रेट्र)

अगले साल से भरा हुआ मिलेगा आइटीआर फार्म

एक अप्रैल से लागू होने जा रहे नए आयकर कानून में की जा रही व्यवस्था, करदाताओं को मिलेगी राहत

- आइटीआर फार्म में करदाता की आय व व्यय की पूरी जानकारी होगी
- फार्म में पहले से भरी हुई जानकारी में किया जा सकेगा बदलाव

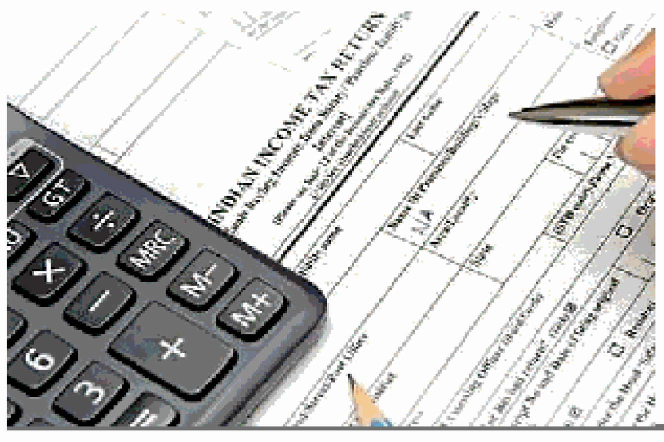

पैन को लेकर हो रहे यह बड़े बदलाव

- एक दिन में 50 हजार रुपये से अधिक नकद बैंक में जमा करने पर पैन नहीं देना पड़ेगा
- एक वर्ष में 10 लाख रुपये से अधिक की नकद जमा और निकासी के लिए पैन अनिवार्य होगा
- होटल, बैंक्वेट या रेस्टोरेंट के एक लाख रुपये से कम के बिल पर पैन जरूरी नहीं। इससे ज्यादा बिल पर अनिवार्य
- पांच लाख से अधिक रकम की कार खरीदने पर ही पैन देना अनिवार्य होगा। अभी किसी भी कीमत की कार खरीदने पर देना पड़ता है पैन
- अब 20 लाख रुपये से अधिक की प्रापर्टी खरीदने पर पैन देना होगा। अभी यह सीमा 10 लाख रुपये
- मकान भत्ता दावे के लिए हैदराबाद, बेंगलुरु, पुणे और अहमदाबाद को मेट्रो शहरों की श्रेणी में डाला जाएगा
- 1600 सीसी तक की गाड़ी के लिए प्रतिमाह 8,000 रुपये, इससे ऊपर क्षमता वाली गाड़ी के लिए प्रतिमाह 10,000 रुपये तक का मोटर भत्ता आयकर के दायरे से बाहर
- केंद्रीय बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) को इलेक्ट्रानिक भुगतान में स्वीकार किया जाएगा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: अप्रैल 2027 से इनकम टैक्स रिटर्न (आइटीआर) फार्म को भरना और उसे दाखिल करना बिल्कुल आसान हो जाएगा। इसका कारण यह है कि आइटीआर फार्म पहले से भरा होगा और अगर आपको लगता है कि वह आपकी आय व व्यय के मुताबिक सही तरीके से भरा गया है तो आपको सिर्फ क्लिक करके उसे सबमिट करना रहेगा। लेकिन आप भरे हुए फार्म से संतुष्ट नहीं है तो अपने हिसाब से बदलाव कर सकते हैं।

एक अप्रैल 2026 से नया इनकम टैक्स कानून लागू हो रहा है और उसके तहत यह व्यवस्था की जा रही है। इसलिए अगले वित्त वर्ष 2026-27 में होने वाली आय पर दिए जाने वाले टैक्स के लिए जो आइटीआर भरे जाएंगे, उनमें यह सुविधा होगी। अप्रैल से इसलिए लागू किया जा रहा है क्योंकि कई लोग एडवांस में टैक्स जमा करते हैं। अगले महीने मार्च में इनकम टैक्स के नए कानून को अधिसूचित कर दिया जाएगा। अभी विभाग ने प्रस्तावित नए कानून पर लोगों से परामर्श लेने के लिए मसौदा जारी किया है। वर्ष 2027 में जो आइटीआर भरे जाएंगे, उनमें क्रिप्टो रखने की जानकारी को अनिवार्य किया जा रहा है। आगामी वित्त वर्ष से इनकम टैक्स विभाग क्रिप्टो एक्सचेंज से क्रिप्टो खरीदने वालों की पूरी जानकारी लेगा और क्रिप्टो रखने वालों को भी इस बारे में आइटीआर में बताना होगा।

विभाग का कहना है कि नए कानून में गैर जरूरी जानकारी नहीं ली जाएगी। विभाग के मुताबिक, लोगों की आय के बारे में पता लगाने के लिए विभाग विभिन्न प्रकार की टेक्नोलाजी का भी इस्तेमाल कर रहा है, इसलिए बेवजह लोगों से जानकारी नहीं मांगी जाएगी। इनकम टैक्स विभाग के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष में 1.1 करोड़ अपडेटेड और रिवाइज्ड रिटर्न भरे गए हैं। इन लोगों ने अपनी आय कम बताई थी, लेकिन विभाग की नजरों से बच नहीं सके। नए आयकर कानून में नियमों की संख्या को 511 से घटाकर 333 और फार्म की संख्या को 399 से घटाकर 190 किया गया है।

अगले वर्ष जी-20 देशों में सबसे तेज दर से बढ़ेगी भारतीय आर्थिकी

वैश्विक एजेंसी मूडीज रेटिंग्स ने वित्त वर्ष 2026-27 में भारतीय आर्थिकी की वृद्धि दर 6.4 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया

नई दिल्ली, प्रेट्र: वैश्विक रेटिंग एजेंसी मूडीज रेटिंग्स ने सोमवार को अनुमान जताया कि अगले वित्त वर्ष 2026-27 के दौरान भारतीय आर्थिकी 6.4 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। यह जी-20 में शामिल देशों में सबसे तेज गति होगी। रेटिंग एजेंसी का कहना है कि यह वृद्धि मजबूत घरेलू खपत, नीतिगत उपायों और एक स्थिर बैंकिंग प्रणाली द्वारा संचालित होगी।

अपनी बैंकिंग प्रणाली दृष्टिकोण रिपोर्ट में मूडीज ने कहा कि भारतीय बैंकों की संपत्ति की गुणवत्ता मजबूत बनी रहेगी। हालांकि, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) में कुछ तनाव हो सकता है। फिर भी, बैंकों के पास कर्ज हानि की भरपाई के लिए पर्याप्त रिजर्व है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2026 में बैंकों के लिए परिचालन वातावरण मजबूत बना रहेगा, जो मजबूत व्यापक आर्थिक स्थितियों और संरचनात्मक सुधारों से समर्थित होगा। रेटिंग एजेंसी का कहना है कि सितंबर 2025 में किया गया जीएसटी समायोजन उपभोक्ताओं के लिए वस्तुओं को सस्ती बनाने में मदद करेगा और खपत-आधारित वृद्धि को समर्थन मिलेगी। हालांकि, मूडीज का यह अनुमान पिछले महीने संसद में पेश किए गए आर्थिक सर्वेक्षण के 6.8-7.2 प्रतिशत के अनुमान से कम है।

आधिकारिक अनुमानों के अनुसार, चालू वित्त वर्ष 2025-26 में भारतीय आर्थिकी के 7.4 प्रतिशत की तेज गति से बढ़ने की संभावना है, जो 2024-25 की 6.5 प्रतिशत की वृद्धि से अधिक है।

एमएसएमई को बिना गारंटी 20 लाख रुपये तक का लोन

- आरबीआइ ने एमएसएमई को लोन देने के निर्देशों को बदला
- एक अप्रैल 2026 से लागू होंगे आरबीआइ के नए नियम

मुंबई, प्रेट्र: आरबीआइ ने सोमवार को माइक्रो, स्माल और मीडियम एंटरप्राइजेज (एमएसएमई) क्षेत्र के लिए लोन देने के अपने निर्देशों में बदलाव की घोषणा की। इसके तहत छोटे कारोबारों के लिए क्रेडिट पहुंच को बेहतर बनाने के मकसद से माइक्रो और स्माल एंटरप्राइजेज (एमएसई) के लिए बिना गारंटी वाले लोन की सीमा 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख रुपये कर दी गई है। आरबीआइ गवर्नर शक्तिकांत दास ने छह फरवरी को एमपीसी बैठक के बाद यह सीमा बढ़ाने की घोषणा की थी।

संशोधित दिशा-निर्देशों के अनुसार, बैंकों को एमएसई क्षेत्र की इकाइयों को दिए गए 20 लाख रुपये तक के लोन के मामले में गारंटी स्वीकार नहीं करने का निर्देश दिया गया है। बैंकों को प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत फाइनेंस की गई सभी इकाइयों को 20 लाख रुपये तक के बिना गारंटी वाले लोन देने की भी सलाह दी गई है।

नए नियमों के अनुसार, बैंक एमएसई इकाई के अच्छे ट्रैक रिकार्ड और वित्तीय स्थिति के आधार पर अपनी आंतरिक नीति के अनुसार 25 लाख रुपये तक के लोन के लिए गारंटी की जरूरत को खत्म करने की सीमा बढ़ा सकते हैं। हालांकि, बैंकों द्वारा स्वीकृत लोन के लिए स्वेच्छा से गिरवी रखे गए सोने और चांदी को गारंटी के रूप में स्वीकार करना, नियमों का उल्लंघन नहीं माना जाएगा। यह नए बदलाव एक अप्रैल 2026 से लागू होंगे।

तनिष्क का पहला डायमंड एक्सपर्टाइज सेंटर शुरू

राब्यू, मुंबई: टाटा समूह की आभूषण निर्माता तनिष्क ने अपना पहला 'डायमंड एक्सपर्टाइज सेंटर' मुंबई में शुरू किया है। अंधेरी स्थित यह सेंटर ग्राहकों को हीरों की शुद्धता, कट और चमक को गहराई से समझने के लिए एक विशेष मंच प्रदान करता है। भविष्य में ऐसे सेंटर तनिष्क के देशभर में फैले सभी शोरूम्स में भी उपलब्ध होंगे।

अरुण नारायण

इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य ग्राहकों को केवल आभूषण बेचना नहीं, बल्कि उन्हें हीरों की शुद्धता को लेकर शिक्षित करना भी है। यहां मौजूद विशेषज्ञ ग्राहकों को हीरों के 'फोर सी' (कट, क्लेरिटी, कलर और कैरेट) के बारे में बताएंगे। तनिष्क के सीईओ (आभूषण विभाग) अरुण नारायण के अनुसार, कंपनी की यह पहल हीरों के खरीदारी अनुभव को पूरी तरह बदलने वाली साबित होगी।

भारत-अमेरिका समझौते से सेंसेक्स फिर 84 हजार के पार

485 अंक बढ़कर 84,065 पर बंद हुआ बीएसई सूचकांक

173 बढ़कर 25,867 के स्तर पर पहुंचा एनएसई निफ्टी

सेक्टरवार तेजी (% में)	
पीएसयू बैंक	2.83
कंज्यूमर ड्यूरेबल्स	2.76
रियल्टी	2.64
कमोडिटीज	2.06
धातु	1.54

मुंबई, प्रेट्र: भारत और अमेरिका के बीच व्यापार समझौते के बाद सभी क्षेत्रों में मजबूत खरीदारी के कारण घरेलू शेयर बाजार सोमवार को लगातार दूसरे दिन बढ़त के साथ बंद हुए। बीएसई का मानक सूचकांक सेंसेक्स 485.35 अंक की तेजी के साथ एक बार फिर 84 हजार के पार जाकर 84,065.75 पर जाकर बंद हुआ। दिनभर के कारोबार के दौरान सेंसेक्स 734.28 अंक बढ़कर 84,314.68 के उच्च स्तर तक पहुंचा था। इसी तरह, एनएसई का निफ्टी 173.60 अंक बढ़कर 25,867.30 पर बंद हुआ।

जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि व्यापार समझौते से सकारात्मक संकेतों के साथ-साथ विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआइआइ(की वापसी ने बाजार में जोखिम लेने की भावना को बढ़ावा दिया। निवेशक आगामी तिमाही परिणामों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जिसमें पीएसयू बैंकों का प्रदर्शन अपेक्षा से बेहतर रहा है। इससे पीएसयू बैंक सूचकांक ने बेहतर प्रदर्शन किया है।

सेंसेक्स में एसबीआइ, टाइटन, अल्ट्राटेक सीमेंट, टाटा स्टील, एटरनल, भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड, कोटक महिंद्रा बैंक, इंडिगो, ट्रेंट, महिंद्रा एंड महिंद्रा, लार्सन एंड टूब्रो, सन फार्मा और एशियन पेंट्स के शेयर बढ़कर बंद हुए। वहीं, पावरग्रिड, एनटीपीसी, आइटीसी, आइसीआइसीआइ बैंक, इन्फोसिस, एचडीएफसी बैंक, टेक महिंद्रा, मारुति सुजुकी इंडिया और एक्सिस बैंक में गिरावट रही। व्यापक बाजारों में बीएसई स्मालकैप सेलेक्ट सूचकांक 2.31 प्रतिशत और मिडकैप सेलेक्ट सूचकांक 1.27 प्रतिशत बढ़े।

17 हजार रुपये बढ़ी चांदी, सोना भी चढ़ा

नई दिल्ली, प्रेट्र: मजबूत वैश्विक संकेतों और डालर में कमजोरी के कारण सोमवार को चांदी की कीमतों में छह प्रतिशत और सोने के मूल्य में एक प्रतिशत की तेजी दर्ज की गई। स्थानीय सराफा कारोबारियों के अनुसार, राजधानी दिल्ली में चांदी की कीमत में 17,000 रुपये की बढ़ोतरी हुई है और अब इसका मूल्य 2.72 लाख रुपये प्रति किलोग्राम हो गया है। इसी प्रकार, सोने का मूल्य 1,300 रुपये बढ़कर 1,58,500 रुपये प्रति दस ग्राम हो गया है। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक सौमिल गांधी ने कहा कि सोमवार को अमेरिकी डालर में गिरावट और सस्ते में खरीदारी से सोने में तेजी आई। डालर सूचकांक 0.30 प्रतिशत की गिरावट के साथ लगभग 97 के स्तर पर ट्रेड कर रहा है, जिससे कीमती धातुओं को समर्थन मिल रहा है। वैश्विक बाजार में चांदी 2.19 डालर बढ़कर 80.21 डालर प्रति औंस और सोना एक प्रतिशत बढ़कर 5,012.94 डालर प्रति औंस पर पहुंच गए थे।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

राष्ट्रीय जागरण

सीआरपीएफ परिसर में मिला जवान का कंकाल

नीमच: मध्य प्रदेश के नीमच स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीसी) परिसर की झाड़ियों में मानव कंकाल मिलने से सनसनी फैल गई। कंकाल की पहचान एक लापता जवान के स्वजन ने की। उन्होंने कंकाल के पास मिले मोबाइल, कपड़े, जूते और अंगूठी से पहचान की। यह जवान संदिग्ध परिस्थितियों में 43 दिनों से कैंप से लापता था। (नईदुनिया प्रतिनिधि)

दो मरीजों की मौत मामले में आरोपित विशेषज्ञ को राहत

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने चिकित्सकीय लापरवाही के गंभीर मामले में आरोपित गुजरात के एक कार्डियोलाजिस्ट को दी गई जमानत को रद करने से इन्कार कर दिया। साथ ही आरोपित चिकित्सक को राहत देते हुए कहा कि उन्हें सेवा करने दें। विशेषज्ञ पर 'आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना' का लाभ लेने के लिए दो लाभार्थियों पर गलत एंजियोप्लास्टी आपरेशन करने से मरीजों की मौत होने का आरोप है। (प्रेट्र)

अनिल अंबानी समूह के खिलाफ जांच के लिए एसआइटी गठित

नई दिल्ली, प्रेट्र : ईडी ने अनिल अंबानी समूह (एडीएजी) और उससे जुड़ी इकाइयों के खिलाफ 40,000 करोड़ रुपये के कथित बैंकिंग और कार्पोरेट धोखाधड़ी के आरोपों की जांच के लिए एक विशेष जांच दल का गठन किया है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि इस एसआइटी का नेतृत्व एक अतिरिक्त निदेशक स्तर के अधिकारी कर रहे हैं और इसमें लगभग आधा दर्जन अन्य जांचकर्ता शामिल हैं। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले सप्ताह एडीएजी के खिलाफ मामलों की समीक्षा करते हुए ईडी को एसआइटी गठित करने का निर्देश दिया था। ईडी पिछले वर्ष से अनिल अंबानी और उनके रिलायंस समूह की कंपनियों की जांच कर रही है और अब तक उसने पीएमएलए के तहत तीन ईसीआइआर दायर की हैं जो पुलिस की एफआइआर के समान होती हैं। जांच एजेंसी ने 12,000 करोड़ की संपत्तियों को भी अटैच किया है। अनिल अंबानी समूह की कंपनियों ने पूर्व में किसी भी प्रकार की अनियमितता से इंकार किया है।

अमेरिका से ट्रेड डील किसान, महिला व युवाओं को देगी अच्छे अवसर : शिवराज

- कहा, अमेरिका से साथ हुई डील से भारत को फायदा होगा
- ई-रिक्शा से पत्नी साधना संग लगाई गिरिराजजी की परिक्रमा

जागरण संवाददाता, गोवर्धन (मथुरा) : केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान सोमवार को पत्नी साधना सिंह के साथ आस्था की नगरी गोवर्धन पहुंचे। यहां उन्होंने ब्रजरज को नमन कर गिरिराज महाराज को प्रणाम किया। ब्रजरज मस्तक पर सजाकर ई-रिक्शा से गोवर्धन परिक्रमा की। उनके आगमन पर स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों व कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। पत्रकारों से बातचीत में कहा कि अमेरिका से साथ हुई डील से भारत को फायदा होगा। किसान, महिला व युवाओं को इससे अच्छे अवसर मिलेंगे। परिक्रमा से पहले कृषि मंत्री ने भावुक स्वर में कहा, बहुत दिनों से गिरिराजजी की परिक्रमा की इच्छा थी। गोवर्धन आना मेरा सौभाग्य है। अमेरिका के साथ हुए हालिया समझौते पर कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश की कूटनीति विकासोन्मुख है। किसानों के हितों की पूरी रक्षा की गई है।

शिवराज सिंह

बजट ने गांवों, किसानों, वंचित वर्गों को धोखा दिया: सुरजेवाला

नई दिल्ली, प्रेट्र : कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला ने सोमवार को राज्यसभा में कहा कि केंद्रीय बजट ने भारत के गांवों, किसानों और समाज के गरीब तथा वंचित वर्गों को पूरी तरह से धोखा दिया है। बजट पर चर्चा में भाग लेते हुए उन्होंने कहा कि सरकार ने भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के तहत किसानों के हितों की बलि दी है। कहा-अगर हम बजट का बारीकी से अध्ययन करें तो यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि यह गांवों, गरीबों, किसानों और समाज के वंचित वर्गों के खिलाफ है। इस वर्ष के बजट का मुख्य उद्देश्य समाज के जरूरतमंद वर्गों के लिए प्रविधानों और व्यय में कटौती करना रहा है। कहा कि पिछले बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कपास प्रौद्योगिकी मिशन, दलहन मिशन, सब्जी एवं फल मिशन, संकर बीज राष्ट्रीय मिशन, मखाना बोर्ड और नमो ड्रोन दीदी जैसी कई योजनाओं की घोषणा की थी। कपास प्रौद्योगिकी मिशन और दलहन मिशन को इस वर्ष भी शून्य आवंटन प्राप्त हुआ है।

रणदीप सुरजेवाला

तान्या नाथन ने रचा इतिहास, पहली दृष्टिबाधित जज बनेंगी

सिविल जज- जूनियर डिवीजन की परीक्षा में दिव्यांग श्रेणी में रहीं अव्वल, केरल हाई कोर्ट ने राज्य सरकार को भेजी चयन सूची

तिरुअनंतपुरम, प्रेट्र : इरादे बुलंद हों तो तमाम बाधाओं के बावजूद सफलता जरूर मिलती है। केरल की दृष्टिबाधित तान्या नाथन ने इस बात को चरितार्थ कर दिखाया है। तान्या ने दिव्यांगता के बावजूद सिविल जज (जूनियर डिवीजन) की परीक्षा में दिव्यांग श्रेणी में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। वह संभवतः देश की पहली दृष्टिबाधित जज होंगी। केरल हाई कोर्ट ने चयन सूची राज्य सरकार को भेज दी है, जो अब नियुक्ति आदेश जारी करेगी।

तान्या नाथन

सुप्रीम कोर्ट ने पिछले वर्ष जब दिव्यांगों को न्यायिक सेवा में प्रवेश की अनुमति दी, जिससे 24 वर्षीय तान्या को अपने सपनों को साकार करने का मौका मिला। कन्नूर जिले के मंगड की निवासी तान्या ने ला में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद न्यायिक सेवा की परीक्षा की तैयारी की। उन्हें मेहनत का फल मिला और अब वह केरल की पहली दृष्टिबाधित न्यायाधीश बनने जा रही हैं। नियुक्ति पत्र आने का इंतजार कर रही तान्या ने कहा कि वह इस पेशे की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं। तान्या ने कहा, मुझे पता है कि यह चुनौतीपूर्ण होगा, लेकिन तकनीक के विकास के कारण अधिकांश न्यायिक कार्य 'स्क्रीन रीडर' और 'डिक्टेशन साफ्टवेयर' जैसे मददगार उपकरणों का इस्तेमाल करके किए जा सकते हैं। जन्म से ही दृष्टिबाधित तान्या ने अपनी पढ़ाई धर्मडोम के दिव्यांग छात्रों के स्कूल से शुरू की। कन्नूर विश्वविद्यालय में एलएलबी पाठ्यक्रम में शीर्ष स्थान प्राप्त किया। उन्होंने वकील के तौर पर पंजीकरण कराने के बाद कन्नूर के थालीपरंबा में वकालत शुरू की थी।

'उन्नाव दुष्कर्म मामले में तीन महीने में निपटाएं कुलदीप की याचिका'

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने उन्नाव दुष्कर्म मामले में पीड़िता के पिता की मौत के मामले में दिल्ली हाई कोर्ट से कहा कि भाजपा से निष्कासित नेता कुलदीप सिंह सेंगर की याचिका को प्राथमिकता के आधार पर सुना जाए और इस पर तीन महीने के भीतर फैसला दें। यह याचिका उन्नाव दुष्कर्म पीड़िता के पिता की हिरासत में हुई मौत के मामले में दोषी सेंगर की सजा को चुनौती देती है। सेंगर की याचिका को सुनने से इन्कार करते हुए भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायाधीश जायमाल्या बागची और एनवी अंजरिया की पीठ ने कहा कि यदि पीड़िता के परिवार द्वारा कोई अपील की गई है, तो उसे भी सेंगर की याचिका के साथ हाई कोर्ट में सुना जाना चाहिए। पीठ सेंगर की याचिका की सुनवाई कर रही थी, जिसमें उच्च न्यायालय के उस आदेश को चुनौती दी गई थी जिसने उसके 10 साल की जेल की सजा को निलंबित करने से इन्कार कर दिया था।

भीड़ घटाने व सुरक्षा में सुधार के लिए रेल परियोजनाओं को मंजूरी

नई दिल्ली, (प्रेट्र): रेल मंत्रालय ने सोमवार को कहा कि देश भर में यात्रियों और माल की आवाजाही को तेज और अधिक विश्वसनीय बनाने के साथ-साथ भीड़भाड़ को खत्म करने के उद्देश्य से रेल अवसंरचना परियोजनाओं के एक व्यापक सेट को मंजूरी दी गई है। प्रेस बयान में कहा गया है कि इन स्वीकृतियों में दक्षिणी, उत्तरी और दक्षिण पूर्वी रेलवे शामिल हैं, जिनमें लाइन दोहरीकरण, तीसरी और चौथी लाइन, बाईपास कारिडोर और उन्नत इलेक्ट्रानिक इंटरलाकिंग सिस्टम शामिल हैं। कवच प्रणाली को लागू किए जा रहे उत्तरी रेलवे मार्गों पर 34 स्टेशनों पर 421.41 करोड़ की लागत से इलेक्ट्रानिक इंटरलाकिंग को मंजूरी दिए जाने पर, मंत्रालय ने कहा कि इससे सुरक्षा व परिचालन दक्षता में वृद्धि होगी। उत्तरी रेलवे के अंतर्गत 411.96 करोड़ की लागत से बनने वाली 13.46 किमी लंबी राजपुरा बाईपास लाइन की मंजूरी से उत्तरी रेलवे के व्यस्त गलियारों में से एक, अंबाला-जालंधर खंड पर उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

अपराध से दूर कर पुलिस दिखा रही शिक्षा की राह, थमा रही कापी-पेंसिल

जागरण विशेष

अमरोहा पुलिस मिशन शक्ति के तहत बच्चों को सरकारी स्कूलों में दिला रही दाखिला, 13 थानों की टीमें प्रयास में जुटीं

आसिफ अली • जागरण

अमरोहा: पुलिस की पहचान कानून-व्यवस्था से जुड़ी होती है, पर उत्तर प्रदेश के अमरोहा जिले में खाकी ने इससे आगे बढ़कर वह जिम्मेदारी भी उठाई है, जो समाज की नींव को मजबूत करती है। यहां पुलिस अपराध के दलदल की ओर बढ़ रहे स्कूल से दूर भटके बचपन को कापी-पेंसिल थमाकर शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ रही है। मिशन शक्ति अभियान शुरू कर 500 बच्चों के स्कूल में दाखिले का संकल्प लिया है, ताकि अशिक्षा के अंधेरे से निकलकर ये बच्चे बेहतर जीवन की ओर बढ़ सकें।

सुशिक्षित समाज

एक फरवरी से जिले के 13 थानों में यह पहल शुरू हो चुकी है और अब तक 13 बच्चों का सरकारी स्कूलों में प्रवेश कराया जा चुका है। इस मानवीय पहल की पृष्ठभूमि एक घटना से जुड़ी है, जिसने पुलिस को इसके लिए प्रेरित किया। मंडी धनौरा क्षेत्र में डेढ़ माह पहले सीए वैभव शर्मा की कार से पांच लाख रुपये चोरी किए जाने के मामले में नौ वर्षीय बाल अपचारी पकड़ा गया। जब पड़ताल की गई तो सामने आया कि बच्चा पढ़ा-लिखा ही नहीं था। मामले के बाद मंडी धनौरा थाने के वरिष्ठ उपनिरीक्षक सतीश कुमार ने टीम के साथ कंचन बाजार मुहल्ले में सर्वे कराया। पता चला कि बाल अपचारी के साथ-साथ वहां और भी कई बच्चे स्कूल से दूर हैं। पुलिस ने उनके परिवारों से संवाद किया। उन्हें समझाया और स्कूल में बच्चों का दाखिला कराया। यहीं से एसपी अमित कुमार आनंद के मन में मिशन शक्ति का विचार आया।

खर्च उठाने के साथ कर रहे निगरानी भी: सरकारी स्कूलों में दाखिले के चलते बच्चों को न तो प्रवेश शुल्क देना पड़ रहा और न ही किताबों का खर्च उठाना पड़ रहा। पुलिसकर्मी अपने स्तर से बैग, कापी-पेंसिल और अन्य स्टेशनरी उपलब्ध करा रहे हैं। प्रति बच्चे करीब एक हजार रुपये का खर्च थानास्तर पर वहन किया जा रहा। बच्चे नियमित रूप से स्कूल जा रहे हैं या नहीं, इसकी निगरानी भी की जा रही है। पुलिस सप्ताह में एक दिन प्रधानाचार्य से फीडबैक लेती है। यदि कोई बच्चा पढ़ाई छोड़ता है तो पुलिस दोबारा अभिभावकों से संपर्क कर समस्या का समाधान निकालती है।

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

अमरोहा में मंडी धनौरा थाना क्षेत्र के गांव वंश गोपालपुर स्थित प्राथमिक विद्यालय में दाखिला लेने वाले बच्चे व पुलिस की टीम • जागरण

अभिभावकों का पूरा विवरण किया जा रहा दर्ज

इस पहल को स्थायी रूप देने के लिए मिशन शक्ति केंद्रों पर रजिस्टर तैयार किए गए हैं, जिनमें बच्चों और उनके अभिभावकों का पूरा विवरण दर्ज किया जा रहा है। पुलिस का यह प्रयास दिखाता है कि सुरक्षा के साथ-साथ अगर बचपन को थाम लिया जाए, तो सशक्त समाज की नींव मजबूत हो सकती है। इसीलिए पुलिस का यह प्रयास सराहनीय है।

टीम घर-घर जाकर करती है बात, बताती है शिक्षा क्यों जरूरी है

जिले के 13 थानों में मिशन शक्ति केंद्र बनाए गए हैं। प्रत्येक केंद्र पर दो महिला दारोगा, चार महिला तथा दो पुरुष कांस्टेबलों को जिम्मेदारी दी गई है। केंद्र पर एक महिला व एक पुरुष कांस्टेबल शिफ्टवार ड्यूटी करते हैं। शेष टीम अपने थाना क्षेत्र में लोगों को जागरूक करती है। स्कूल-कालेजों में सुबह 10 बजे से कार्यक्रम किए जाते हैं। इसी बीच में गांवों व नगरीय क्षेत्र के मुहल्लों में लोगों से बात कर ऐसे बच्चों का पता किया जाता है, जो स्कूल नहीं जा रहे। टीम घर-घर जाकर अभिभावकों से बात कर रही है और यह समझा रही है कि शिक्षा ही बच्चों को अपराध और भटकाव से दूर रख सकती है।

अब भी काफी जगह बच्चे स्कूल में पढ़ने नहीं भेजे जाते हैं। इनकी तलाश कर माता-पिता की काउंसलिंग के बाद स्कूल में प्रवेश दिलाया जा रहा, जिससे ये बेटे-बेटियां शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहें। नवरात्र तक जिले में 500 बच्चों का प्रवेश दिलाने का लक्ष्य है।

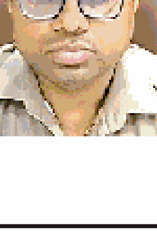

अमित कुमार आनंद, पुलिस अधीक्षक, अमरोहा

शराब के नशे में धुत प्रधानाध्यापक ने छात्राओं से की छेड़छाड, हंगामा

जागरण संवाददाता, मुजफ्फरनगर : प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक ने शराब के नशे में दो नाबालिग छात्राओं से छेड़छाड़ की और पैसों का लालच देकर अकेले में जंगल में मिलने का दबाव बनाया। छात्राओं के स्वजन व ग्रामीणों ने विद्यालय पहुंचकर हंगामा किया और आरोपित को पीटने के बाद कमरे में बंद कर दिया। पुलिस उसे हिरासत में थाने ले आई। आरोपित के खिलाफ छेड़छाड़ व पोक्सो एक्ट में मुकदमा दर्ज किया है। बीएसए संदीप कुमार ने आरोपित प्रधानाध्यापक को निलंबित कर दिया है। एक महिला ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसकी बेटी कक्षा पांच की छात्रा है और गांव के प्राइमरी विद्यालय में पढ़ती है। सोमवार को छात्रा स्कूल गई थी। दोपहर को छुट्टी के समय सभी बच्चे स्कूल से जाने लगे। तब उसकी बेटी अकेली रह गई। तभी प्रधानाध्यापक सतीश कुमार ने उसे व एक अन्य छात्रा को अपने पास बुलाया। आरोप है कि प्रधानाध्यापक ने छात्राओं के हाथ पकड़कर अश्लील हरकत की।

चिंतन

शहरों के विकास पर नए तरीके से सोचना होगा

देश में शहर तेजी से फैल रहे हैं, लेकिन विकास की यह रफ्तार अब आम लोगों की जान और सेहत के लिए खतरा बनती जा रही है। सड़कें, मॉल, दुकानें, सीवर और पानी की लाइनें सब कुछ बन रहा है, लेकिन बिना समुचित योजना, निगरानी और जवाबदेही के। नतीजा यह है कि शहरों में होने वाले हादसे अब अपवाद नहीं, बल्कि एक कड़वी सच्चाई बन चुके हैं। सवाल यह नहीं है कि हादसे क्यों हो रहे हैं, बल्कि यह है कि इन्हें रोकने के लिए जिम्मेदार कौन है और कब तक इस लापरवाही को दुर्घटना कहकर टाला जाता रहेगा। शहरों की बदहाल स्थिति के लिए सबसे बड़ी जिम्मेदारी अव्यवस्थित विकास मॉडल की है। सड़कों की खुदाई, निर्माणाधीन मॉल और दुकानों के आसपास खुले गड्ढे, बिना बैरिकेडिंग के चल रहा काम और सुरक्षा मानकों की अनदेखी ये सभी सीधे तौर पर इंसानी जान से खिलवाड़ हैं। हाल के दिनों में सामने आई घटनाएं इस व्यवस्था की पोल खोलने के लिए काफी हैं। नोएडा में पिछले महीने सॉफ्टवेयर इंजीनियर की मौत एक दर्दनाक उदाहरण है। निर्माणाधीन मॉल के पास बिना बैरिकेड और चेतावनी संकेतों के खुले, पानी से भरे गहरे गड्ढे में उनकी कार गिर गई। इंजीनियर ने खुद पुलिस को फोन कर मदद मांगी, लेकिन समय पर सहायता नहीं मिली और उनकी जान चली गई। यह हादसा नहीं, बल्कि सिस्टम की असंवेदनशीलता और लापरवाही का नतीजा था। अब दिल्ली में भी ऐसी ही एक और भयावह घटना सामने आई, जहां 25 वर्षीय युवक रात में घर लौटते समय दिल्ली जल बोर्ड के पास करीब 4.5 मीटर गहरे गड्ढे में गिर गया। सबसे चिंताजनक बात यह रही कि वह युवक करीब आठ घंटे तक गड्ढे में पड़ा तड़पता रहा, मदद के लिए गुहार लगाता रहा, लेकिन कोई जिम्मेदार अधिकारी या विभाग हरकत में नहीं आया। न चेतावनी बोर्ड थे, न बैरिकेडिंग और न ही निगरानी। यह गड्ढा सिर्फ सड़क में ही नहीं, बल्कि सिस्टम की जवाबदेही में भी उतना ही गहरा था। जांच एजेंसियों ने इस मामले को महज दुर्घटना नहीं, बल्कि गंभीर और आपराधिक लापरवाही माना है। लेकिन असली सवाल यह है कि क्या महज कुछ गिरफ्तारियों से शहर सुरक्षित हो जाएंगे? शहरों की दुर्दशा का एक और पहलू बढ़ता प्रदूषण है। धूल, अव्यवस्थित ट्रैफिक, लगातार चल रहे निर्माण कार्य और सर्दियों में स्मॉग ने शहरों में सांस लेना तक मुश्किल कर दिया है। प्रदूषण और सड़क हादसे मिलकर हर साल हजारों जिंदगियों को लील रहे हैं। यह सिर्फ स्वास्थ्य का नहीं, बल्कि शहरी नियोजन की विफलता का भी मुद्दा है। अब समय आ गया है कि सरकार और शहरी प्रशासन नए सिरे से सोचें। जैसे देशभर में बाईपास और राष्ट्रीय राजमार्गों का जाल बिछाया गया, वैसे ही शहरों के अंदरूनी ढांचे के लिए भी दीर्घकालिक और समग्र योजना बनाई जाए। आबादी के अनुपात में सड़कें, ड्रेनेज सिस्टम, सीवरेज और पानी की लाइनें विकसित हों। इंदौर जैसी घटनाएं, जहां पानी और सीवर की लाइनें एक साथ होने से लोगों की जान गई, यह बताती हैं कि बुनियादी सुविधाओं में तालमेल की कितनी कमी है। सबसे जरूरी है जवाबदेही तय करना। हर निर्माण कार्य के लिए स्पष्ट जिम्मेदारी, नियमित निरीक्षण और सुरक्षा मानकों का सख्त पालन अनिवार्य होना चाहिए। खुले गड्ढे, अधूरे काम और लापरवाही किसी भी कीमत पर स्वीकार्य नहीं होनी चाहिए। हादसे के बाद मुआवजा और जांच से ज्यादा जरूरी है हादसों को होने ही न देना। शहर तभी सच में विकसित कहलाएंगे, जब वहां रहने वाले लोग खुद को सुरक्षित व स्वस्थ महसूस करें।

लाल आतंक से मुक्ति की ओर बढ़ रहा देश

नक्सलवाद
रोहित माहेश्वरी

देश का 90 प्रतिशत क्षेत्र पहले ही नक्सलवाद से मुक्त हो चुका है। पिछले 11 वर्षों में, केंद्र सरकार की समन्वित, बहुआयामी रणनीति, जिसमें सुनियोजित सुरक्षा अभियान, अभूतपूर्व अवसंरचना विकास, वित्तीय दबाव, तीव्र विकास और एक आकर्षक आत्मसमर्पण नीति शामिल है, ने वामपंथी उग्रवाद को 2014 में 126 जिलों से घटाकर 2025 में मात्र 11 जिलों तक सीमित कर दिया है। कभी नक्सलियों के अभेद किले के रूप में जाने जाने वाला नेशनल पार्क एनकाउंटर जोन बनता जा रहा है। अब सुरक्षाबलों के कैंप बन जाने के बाद यहां से लाल आतंक के पैर उखड़ने लगे हैं। छत्तीसगढ़ में नक्सल अभियान को चलाने वाले बड़े नक्सली बचे ही नहीं हैं। अब पूरा नक्सली संगठन ही नेतृत्व विहीन हो चुका है।

जिस तरीके से पूरे देश में नक्सलियों के खिलाफ अभियान चलाया गया है, उससे एक बात साफ है कि केंद्र की मोदी सरकार पूर्ण दृढ़ संकल्प और शपथ के जिस पथ को लेकर चल रही थी, उसमें एक मजबूत रणनीति अब दिखने लगी है। केंद्र सरकार ने इस साल 31 मार्च तक लाल आतंक को खत्म करने की समय सीमा तय कर रखी है। जो पूरी होती दिखने लगी है। देश का 90 प्रतिशत क्षेत्र पहले ही नक्सलवाद से मुक्त हो चुका है। 1967 में बंगाल के नक्सलबाड़ी से शुरू हुई नक्सलवाद की समस्या ने दशकों तक लाखों निर्दोष लोगों और सुरक्षाकर्मियों की जान ली और कई क्षेत्रों को विकास से वंचित रखा। 2014 के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मजबूत नेतृत्व में केंद्र सरकार ने नक्सलवाद के खिलाफ एक ठोस और प्रभावी रणनीति अपनाई।

पिछले 11 वर्षों में, केंद्र सरकार की समन्वित, बहुआयामी रणनीति, जिसमें सुनियोजित सुरक्षा अभियान, अभूतपूर्व अवसंरचना विकास, वित्तीय दबाव, तीव्र विकास और एक आकर्षक आत्मसमर्पण नीति शामिल है, ने वामपंथी उग्रवाद को 2014 में 126 जिलों से घटाकर 2025 में मात्र 11 जिलों तक सीमित कर दिया है, जिनमें से केवल तीन ही सबसे अधिक प्रभावित बचे हैं, जो लाल गलियारे के लगभग खात्मे का संकेत है। अकेले साल 2025 में, 317 नक्सलियों शीर्ष नेतृत्व सहित को मार गिराया गया, 800 से अधिक को गिरफ्तार किया गया और लगभग 2,000 ने आत्मसमर्पण किया, जिससे नक्सलियों को अब तक की सबसे बड़ी क्षति मिली और मार्च 2026 तक नक्सल-मुक्त भारत की ओर तेजी से प्रगति हुई। छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा बस्तर संभाग नक्सल प्रभावित है। इसमें सात जिले शामिल हैं। ये जिले महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और ओडिशा के साथ सीमा साझा करते हैं, और लंबे समय से इसे माओवादियों का सबसे मजबूत गढ़ माने जाते रहे हैं। पिछले कुछ सालों में इस क्षेत्र में नक्सल विरोधी अभियान तेज हुए हैं, जिससे नक्सलवाद पर तगड़ा प्रहार हुआ है।

छत्तीसगढ़ में साल 2024 से अब तक सीपीआई माओवादी के महासचिव नंबाला केशवा राव उर्फ बसवराजू जैसे टॉप नक्सल लीडर सहित 500 से अधिक नक्सलियों को फोर्स ने एनकाउंटर में मार गिराया है। इस साल अब तक छत्तीसगढ़ में अलग-अलग मुठभेड़ में 23 माओवादी मारे जा चुके हैं। तीन जनवरी को, बस्तर क्षेत्र में दो मुठभेड़ में कुल 14 माओवादी मारे गए थे। जिस तरह से आत्मसमर्पण को लेकर नक्सलियों में संख्या बढ़ी है, उससे एक बात साफ है कि नक्सलियों के भीतर इस बात का भय बैठ गया है, कि 31 मार्च तक आत्मसमर्पण नहीं किया गया तो सरकार किसी तरह के समझौते के मूड में अब नहीं है। इसका परिणाम भी दिखा है। छत्तीसगढ़ में नेतृत्व की जिम्मेदारी संभाल रहे माओवादी कमांडर जो यहां रहे वे सभी मारे गए हैं। हिड़मा से लेकर जिन लोगों को भी छत्तीसगढ़ में कमान दी गई थी, या तो वह राज्य छोड़कर चले गए या फिर न्यूट्रलाइज हुए हैं। बचे हुए कैडर के पास अब इतनी क्षमता नहीं बची, कि वो नक्सल अभियान को आगे लेकर चल सकें। छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के लिए नेशनल पार्क का 2799 वर्ग किलोमीटर का इलाका सबसे सुरक्षित इलाका माना जाता था। छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और तेलंगाना का बॉर्डर इलाका घने जंगलों और पहाड़ों से घिरा है। माओवादी इसे अपने कॉरिडोर के रूप में उपयोग करते थे, यह भी कहा जा सकता है, कि यह इलाका नक्सलियों

का सबसे अभेद दुर्ग वाला इलाका रहा है। कभी नक्सलियों के अभेद किले के रूप में जाने जाने वाला नेशनल पार्क एनकाउंटर जोन बनता जा रहा है। अब सुरक्षाबलों के कैंप बन जाने के बाद यहां से लाल आतंक के पैर उखड़ने लगे हैं। साल 2025 के बाद जिस नक्सल अभियान को चलाया गया उसमें यह बात तय की गई, कि मानसून के मौसम में भी इस अभियान को नहीं रोका जाएगा। नक्सलवाद को खत्म करने को लेकर चलाए जा रहे अभियान में हेलीकॉप्टर मिल जाने के बाद सुरक्षाबलों को बहुत सहूलियत मिल गई। मॉनिटरिंग भी तेज हो गई।

नेशनल पार्क इलाके में छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और तेलंगाना के बॉर्डर पर फोर्स तैनात होने के साथ ही सुरक्षा बलों ने कैंप खोल दिए, जिससे फोर्स की गतिविधियां तेज हो गईं। छत्तीसगढ़ में हुए नक्सली एनकाउंटर और उसमें जिस तरीके के नक्सली मारे गए, उसके बाद छत्तीसगढ़ में नक्सल अभियान को चलाने वाले बड़े नक्सली बचे ही नहीं हैं। जो भी नक्सली छत्तीसगढ़ में नक्सली संगठन को दिशा देते थे, उसके लिए रणनीति बनाते थे, उन तमाम नक्सलियों को या तो न्यूट्रलाइज किया गया या फिर कई ऐसे हैं जिन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। अब पूरा नक्सली संगठन ही नेतृत्व विहीन हो चुका है। यह एक बड़ी वजह है कि 60 दिनों के भीतर इसे पूरे तौर पर खत्म कर दिया जाएगा। केंद्र सरकार ने एनआईए में एक समर्पित विभाग बनाकर नक्सलियों के वित्तपोषण पर प्रभावी ढंग से लगाम लगा दी है। इस विभाग ने 40 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति जब्त की है, जबकि राज्यों ने भी 40 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति जब्त की है और प्रवर्तन निदेशालय ने 12 करोड़ रुपये कुर्क किए हैं। इस एक साथ की गई कार्रवाई से शहरी नक्सलियों को गंभीर नैतिक और मनोवैज्ञानिक क्षति पहुंची है और उनके सूचना युद्ध नेटवर्क पर नियंत्रण और भी कड़ा हो गया है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि देश के नक्सल मुक्त करने को लेकर बनी रणनीति में राज्यों के बीच समन्वय मजबूत आधार बना। राज्यों के बीच आपसी तालमेल नहीं होना नक्सलियों के सफल होने का एक कारण होता था। नक्सलियों को समाप्त करने को लेकर जब रणनीति तैयार होनी शुरू हुई, तो उसके लिए पहली लाइन समन्वय की बनाई गई, ताकि इस अभियान को बल मिले। बीती 8 फरवरी को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने छत्तीसगढ़ के रायपुर में हुई एक विशेष कॉन्क्लेव के दौरान शाह ने माओवादियों से हिंसा का रास्ता छोड़कर मुख्यधारा में लौटने की पुरजोर अपील की।

भारत सरकार ने वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों में सड़क नेटवर्क और मोबाइल कनेक्टिविटी का विस्तार करके बुनियादी ढांचे को काफी मजबूत किया है, जिससे पहुंच, सुरक्षा प्रतिक्रिया और सामाजिक-आर्थिक एकीकरण में सुधार हुआ है। मई 2014 से अगस्त 2025 तक, केंद्र सरकार ने वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में 12,000 किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया है, जबकि कुल 17,589 किलोमीटर की परियोजनाओं को 20,815 करोड़ की लागत से स्वीकृत किया गया है। इन सबके बीच नक्सलवाद के खत्म होने के बाद विकास की जिस बुनियाद को जमीन पर उतरना है, वह बहुत बड़ी चुनौती है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण उन सरेंडर नक्सलियों की है जिन्होंने सरेंडर पॉलिसी के तहत आत्मसमर्पण किए हैं। उनको समाज की मुख्यधारा से जोड़े रखना बड़ी चुनौती है। यहां शासकीय कमजोरी या प्रशासनिक ढांचे की लचर व्यवस्था की कोई भी छाप इस अभियान को फेल करने की बड़ी वजह बन सकता है। इसमें सबसे जरूरी है आम सुविधाओं का विस्तार और जो लोग सरकार की व्यवस्था पर भरोसा करके आए हैं, उस भरोसे को कायम रखने के सरकार के वैसे निर्णय जो सिर्फ विकास के लिए जाने जाते हैं, सबसे बड़ी चुनौती हैं। वास्तव में, देश से नक्सलवाद का खत्म होना विकासवाद की उस अवधारणा की पहली कुंजी है, जिससे भारत पूरे विश्व के फलक पर एकजुट होकर सिर्फ विकास की लड़ाई लड़ेगा।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **haribhoomi@gmail.com** पर दे सकते हैं।

संसद सत्र
अम्बरीष प्रजापति

जनता की उम्मीदों पर भारी पड़ता 'हंगामा'

भारत संसद भारतीय लोकतंत्र का मंदिर है जहां से देश की नीति और नियति तय होती है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में सत्र दर सत्र हंगामे की भेंट चढ़ने का एक चिंताजनक चलन बढ़ा है। जब संसद की कार्यवाही बाधित होती है, तो यह केवल शोर-शराबा नहीं होता, बल्कि देश के विकास की गति पर ब्रेक होता है। 2026 में हाल ही के सत्र में महामहिम राष्ट्रपति के अभिभाषण पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बोलना था लेकिन प्रधानमंत्री के बोलने से पहले ही विपक्ष ने हंगामा शुरू कर दिया और सत्र हंगामे की भेंट चढ़ गया। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार इस सत्र में 3 फरवरी को 36 मिनट, 4 फरवरी को 30 मिनट और 5 फरवरी को सिर्फ 12 मिनट संसद चली। संसद सत्र को 6 दिन में 42 घंटे चलना था लेकिन मात्र 7 घंटे 69 मिनट ही चला। 34 घंटे 31 मिनट का समय हंगामे के कारण बर्बाद हो गए। संसद सत्र के इन 6 दिनों में 25 करोड़ 89 लाख रुपये फिजूल में अपव्यय हो गए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश 'विकसित भारत' के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। सरकार हर सत्र में जनहित से जुड़े महत्वपूर्ण विधेयकों और नीतियों पर चर्चा के लिए तैयार रहती है। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि विपक्ष की ओर से लोकतांत्रिक चर्चा के बजाय 'हंगामे' को एक हथियार बना लिया गया है। संसद का बाधित होना केवल सरकार की कार्यवाही रोकना नहीं, बल्कि देश की प्रगति में रोड़ा अटकाना है। संसद की कार्यवाही का बार-बार स्थगित होना अब एक सामान्य प्रक्रिया बनती जा रही है, लेकिन इसके पीछे छिपे आर्थिक और विधायी नुकसान इतने गहरे हैं कि वे आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को प्रभावित कर रहे हैं। संसद के हालिया सत्रों के आंकड़े बताते हैं कि जब सदन में संवाद होता है तो जनहित के कार्य सार्थक होते है, लेकिन गतिरोध होने पर जनता के करोड़ों रुपये और सैकड़ों घंटे पानी में बह जाते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार सत्र के दौरान संसद चलाने का अनुमानित खर्च लगभग 2.5 लाख रुपए प्रति मिनट तक आता है। यदि पूरा एक दिन हंगामे की भेंट चढ़ता है तो लगभग 8 से 9 करोड़ का सार्वजनिक धन बर्बाद हो जाता है। सोचने वाली बात है, यही पैसा जो स्कूल, अस्पताल या बुनियादी ढांचे के निर्माण में खर्च हो सकता था, लेकिन हंगामे के कारण जनता का पैसा बिना किसी कार्य के बर्बाद हो रहा है। बीते संसद सत्रों में भी ऐसा कुछ हाल रहा। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार बजट सत्र 2024 में लोकसभा में 123%, राज्यसभा में 110% बजट पर चर्चा हुई। मानसून सत्र 2025 में लोकसभा में 29%, राज्यसभा में 34% चर्चा हुई। शीतकालीन सत्र 2025 में लोकसभा में 111%, राज्यसभा में 121% चर्चा हुई। हंगामे के कारण करीब दो-तिहाई समय बर्बाद हुआ। प्रश्नकाल के दौरान मानसून सत्र 2025 में लोकसभा में केवल 23% और राज्यसभा में मात्र 6% प्रश्नकाल का उपयोग हो पाया। इसका अर्थ है कि जनता के 100 में से 90 से ज्यादा सवालों के जवाब मंत्रियों को देने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। मानसून सत्र 2025 में निर्धारित घंटों का लगभग 70% समय शोर-शराबे और स्थगन की भेंट चढ़ गया। लोकतंत्र में संसद वह स्थान है जहां सुझाव दिए जाते हैं और कमियां बताई जाती हैं। सरकार ने बार-बार स्पष्ट किया है कि वह हर मुद्दे पर चर्चा के लिए तैयार है। सरकार ने बजट सत्र 2024 और शीतकालीन सत्र 2025 में रिकॉर्ड बिल पेश किए, लेकिन विपक्ष ने चर्चा में भाग लेने की बजाय वेल में आकर नारेबाजी करना बेहतर समझा। ऐसे ही मानसून सत्र में हंगामे के बीच 8 विधेयक बिना किसी विस्तृत चर्चा के पारित हो गए। पक्ष व विपक्ष आपस में एक दूसरे को दोष देना मात्र ही समस्या का समाधान नहीं है। इसके लिए संसद में सार्थक बदलाव की आवश्यकता हैं। कार्यवाही का अनिवार्य समय तय हो। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि 'जितने घंटे हंगामे में बर्बाद हों, सदन उतनी ही देर अतिरिक्त चले' और सदन स्थगन होने पर सत्र पर होने वाला खर्च संसद सदस्यों के वेतन भत्ता से कटौती करने पर विचार किया जाना चाहिए। सदन की गरिमा भंग करने वाले सदस्यों पर दंडात्मक कार्रवाई हो। सत्र के दौरान पक्ष व विपक्ष की तरफ से आरोप-प्रत्यारोप करने से बचना चाहिए, बल्कि आरोप-प्रत्यारोप के लिए दिन निर्धारित करने के संबंध में विचार किया जाना चाहिए ताकि संसद सत्र सुचारु रूप से चल सके। सरकार को भी विपक्ष की मांगों को सुनने के लिए उदारता दिखानी चाहिए ताकि टकराव की स्थिति न बने। संसद केवल ईंट-पत्थरों की इमारत नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों की आशाओं का केंद्र है। लोकतंत्र संवाद से चलता है, गतिरोध से नहीं। बार-बार का व्यवधान न केवल वित्तीय बर्बादी है, बल्कि इससे जनता का लोकतंत्र पर भरोसा कम भी होता है। सरकार की प्राथमिकता हमेशा 'राष्ट्र प्रथम' रही है। विपक्ष को चाहिए कि वह विरोध करने की राजनीति छोड़कर राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सहभागी बने।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु व आकाश को मिला है देवता का दर्जा

संकलित
दर्शन

प्रदूषण की विनाशलीला को देखते हुए भारतीय ऋषियों ने कदम-कदम पर मानव को सजग किया है। चूंकि मनुष्य पंचमहाभूतों का समन्वय रूप है इसलिए सबसे पहले आध्यात्मिक महापुरुषों ने इसे जन्म से लेकर मृत्यु तक के अलग-अलग संस्कारों के साथ जोड़ दिया, ताकि मां के गर्भ में आने से लेकर सौ वर्ष तक वह अदैन्य भाव में जी सके। सबसे पहले भारतीय ऋषियों ने वसुधैव कुटुंबकम् की जो परिकल्पना की, उसमें नख से लेकर शिख तक पूरा शरीर एक वसुधा (धरती) के समान है। शरीर के किसी भी हिस्से में तकलीफ है तो यह शरीर रूपी विश्व को प्रभावित करेगी। इसके अलावा मनुष्य के जीने के जितने भी स्नेत हैं, वे सभी कुटुंब के सदस्यों की तरह हैं। जिसे 'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंच रचित यह अधम शरीरा' से समझा जा सकता है। शरीर का आंतरिक हिस्सा चूंकि अधम है इसलिए वाह्य प्रकृति से उत्तमोत्तम पदार्थ ग्रहण कर उसके स्वरूप को और अधिक विकृत होने से बचाया जाना नितांत जरूरी है। इसीलिए पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश सबको देवता का दर्जा दिया गया। द्वापर युग के महानायक भगवान श्रीकृष्ण का पूरा जीवन ही प्रदूषण के खिलाफ संघर्ष और जन जागरण का है। उम्र की परवाह न कर वह यमुना के प्रदूषित तत्व कालिया नाग का वध, प्रदूषित अग्नि लगाने वाले प्रलंबासुर का वध, अंतरिक्ष को शुद्ध करने के लिए व्योमासुर का वध, धरती की शुद्धता के लिए गो पालन करते हैं। त्रेता युग में रावण ने भी खर और दूषण नामक पर्यावरण-शत्रु तैनात किया था।

मंजिल तक कैसे पहुंचा जाए

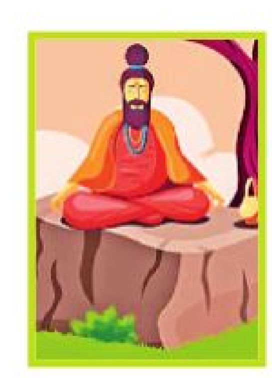

संकलित
प्रेरणा

एक बार एक संत ने अपने दो भक्तों को बुलाया और कहा आप को यहां से पचास कोस जाना है। एक भक्त को एक बोरी खाने के समान से भर कर दी और कहा- जो लायक मिले उसे देते जाना। और एक को खाली बोरी दी उससे कहा रास्ते में जो उसे अच्छा मिले उसे बोरी में भर कर ले जाए। दोनों निकल पड़े जिसके कंधे पर समान था वो धीरे चल पा रहा था। खाली बोरी वाला भक्त आराम से जा रहा था। थोड़ी दूर उसको एक सोने की ईंट मिली उसने उसे बोरी में डाल लिया। थोड़ी दूर चला फिर ईंट मिली उसे भी उठा लिया। जैसे-जैसे चलता गया उसे सोना मिलता गया और वो बोरी में भरता हुआ चल रहा था। और बोरी का वजन बढ़ता गया उसका चलना मुश्किल होता गया और सांस भी चढ़ने लग गई। एक-एक कदम आगे चलना कठिन होता गया। दूसरा भक्त जैसे-जैसे चलता गया रास्ते में जो भी मिलता उसको बोरी में से खाने का कुछ समान देता गया धीरे-धीरे बोरी का वजन कम होता गया। और उसका चलना आसान होता गया। जो बांटता गया उसका गंतव्य स्थान तक पहुंचना आसान होता गया। और जो लालच में आकर इकट्ठा करता रहा वो रास्ते में ही दम तोड़ गया। हम सभी को अब ये सोचना चाहिए कि हमने जीवन में क्या बांटा और क्या इकट्ठा किया हम मंजिल तक कैसे पहुंच पाएंगे, आखिर लालच ही बुरी बला है।

बद्रीनाथ धाम बर्फ से ढका

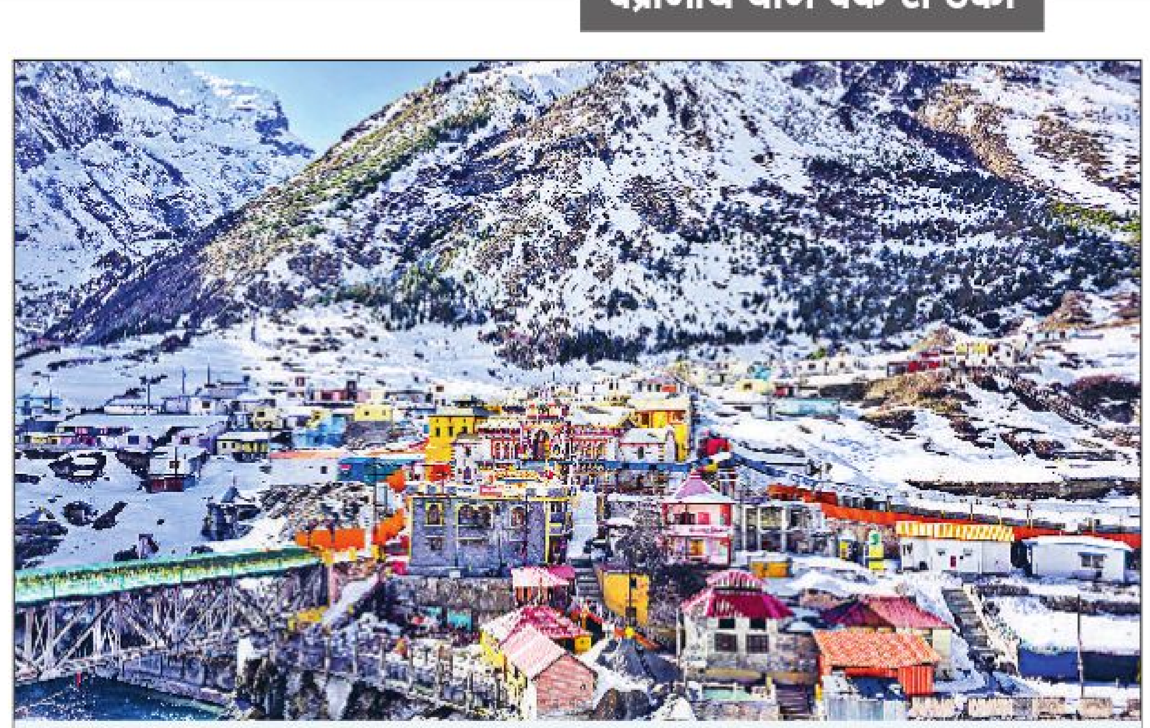

उत्तराखंड के चमोली जिले में सोमवार को हुई ताजा बर्फबारी के बाद बर्फ से ढके पहाड़ों के बीच बद्रीनाथ धाम दिख रहा है।

आज की पाती

जीव-जंतु व वनस्पति की सुरक्षा जरूरी

जीव-जंतु व वनस्पति की सुरक्षा जरूरी आध्यात्मिक, सामाजिक, प्राकृतिक व किसी भी रूप से किसी भी जानवर और वनस्पति को नष्ट करना वर्जित है। विशेषकर वन और मनुष्य एक दूसरे के पर्याय ही हैं। इसलिए जल, जंगल व जमीन की निरंतर सुरक्षा और संरक्षण बहुत ही आवश्यक हो जाता है। प्रदेश के सम्पूर्ण प्राणिजात व वनस्पतिजात (फ्लोरा एंड फौना) का पूर्ण संरक्षण और संवर्धन निश्चित रूप से अनिवार्य है। जिस प्रकार हमारे सारे वातावरण में प्रत्येक पेड़-पौधे, जड़ी-बूटी का होना प्राकृतिक रूप से अनिवार्य है, उसी प्रकार छोटे से छोटे और बड़े से बड़े जंगली जानवरों की उपस्थिति भी बहुत ही आवश्यक है। यह सत्य है कि हमने ही जंगली जानवरों के अधिकार क्षेत्र में घुसपैठ कर दी है।

– रमेश सरकार, भाटापारा

ट्रेंड

विश्वास की परंपराएं मजबूत

भारत और सेशेल्स के संबंध केवल राजनयिक संपर्क तक सीमित नहीं है। हिंद महासागर की लहरें सदियों से हमारे लोगों को जोड़ती आई हैं। इसके तटों पर दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ा, संस्कृतियां मिलीं और विश्वास की परंपराएं मजबूत होती गईं।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

वैश्विक पहचान पा रहा बस्तर

नक्सलियों ने जिस बस्तर को सदियों तक आईईडी और बारूदों के अंधकार में झोंक रखा था, मोदी जी के नेतृत्व में वहां की कला, संस्कृति, खान-पान और विरासत वैश्विक पहचान पा रही है। जगदलपुर में 'बस्तर पंडुम' में जनजातीय कला व संस्कृति की समृद्ध विरासत को दर्शाती प्रदर्शनी का अवलोकन किया। **-अमित शाह**, गृहमंत्री

यूएस से तेल खरीद हमारे हित में

अमेरिका से तेल या एलएनजी, एलपीजी की खरीद भारत के अपने रणनीतिक हित में है, क्योंकि हम अपने तेल स्रोतों में विविधता ला रहे हैं। 'ट्रेड डील में यह तय नहीं होता है कि कौन किससे और क्या खरीदेगा। ट्रेड डील व्यापार के रास्ते को आसान बनाता है।

-पीयूष गोयल, केंद्रीय मंत्री

किताब छप चुकी

रक्षा मंत्री ने गलत कहा कि किताब छपी नहीं है, जबकि वह छप चुकी है। राष्ट्रपति के भाषण पर भी एलओपी और विपक्ष को बोलने नहीं दिया गया। सत्तापक्ष के सदस्य ने कई किताबें कोट कर आपत्तिजनक बातें कहीं, लेकिन उस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। **-राहुल गांधी**, नेता विपक्ष

अपने विचार
हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

करंट अफेयर

सिंगापुर में तमिल समाचार पत्र 'प्रस्तोता' पुरस्कृत

सिंगापुर की समाचार प्रस्तोता पावलाकंथम अजहागरसामी को देश में तमिल प्रसारण पत्रकारिता में उनके योगदान के लिए मीडियाकॉर्प के 'प्रधान विझा 2026' में 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया है। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार तमिल प्रसारण पत्रकारिता में उनके असाधारण योगदान को मान्यता देता है। उनका करियर चार दशकों से भी अधिक समय का है और उन्होंने सिंगापुर के मीडिया जगत पर अमिट छाप छोड़ी है। सिंगापुर के सरकारी स्वामित्व वाले मीडिया समूह 'मीडियाकॉर्प' ने रविवार को जारी एक समाचार विज्ञप्ति में बताया कि यह पुरस्कार वार्षिक समारोह के 21वें संस्करण के दौरान प्रदान किया गया जो सिंगापुर के भारतीय मनोरंजन जगत में उत्कृष्टता को सम्मानित करता है। सिंगापुर के राष्ट्रीय मीडिया नेटवर्क ने कहा, 'एक सम्मानित समाचार प्रस्तोता, मार्गदर्शक और उद्योग की मजबूत स्तंभ के रूप में चार दशकों से अधिक लंबे करियर में पावलाकंथम ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। वह आज भी रेडियो और टेलीविजन उद्योग में तमिल मीडिया पेशेवरों की नयी पीढ़ियों का मार्गदर्शन करती हैं।' शनिवार को मीडियाकॉर्प के थिएटर में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रदर्शन और कार्यक्रम श्रेणियों के तहत कुल 19 पुरस्कार दिए गए।

ऑफ बीट

बायोएक्टिव ही सब्जियों के कड़वे स्वाद का कारण

यह विकास की एक दुर्भाग्यपूर्ण विचित्रता है कि सब्जियाँ हमारे लिए बहुत अच्छी हैं लेकिन वे हम सभी के लिए तुरंत स्वादिष्ट नहीं होती हैं। हम उच्च ऊर्जा वाले खाद्य पदार्थों के मीठे या उम्दा स्वाद का आनंद लेने के लिए विकसित हुए हैं, क्योंकि भुखमरी दीर्घकालिक स्वास्थ्य की तुलना में अधिक तात्कालिक जोखिम है। सब्जियाँ विशेष रूप से उच्च ऊर्जा वाली नहीं होती हैं, लेकिन वे आहार फाइबर, विटामिन और खनिजों और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले यौगिकों से भरपूर होती हैं जिन्हें बायोएक्टिव कहा जाता है। ये बायोएक्टिव ही सब्जियों के कड़वे स्वाद का कारण बनते हैं। पादप बायोएक्टिव, जिन्हें फाइटोन्यूट्रिएंट्स भी कहा जाता है, पौधों द्वारा पर्यावरणीय तनाव और शिकारियों से खुद को बचाने के लिए बनाए जाते हैं। वही चीज़ें जो पौधों के खाद्य पदार्थों को कड़वा बनाती हैं, वही चीज़ें उन्हें हमारे लिए अच्छा बनाती हैं। दुर्भाग्य से, कड़वा स्वाद हमें जहरों से और संभवत: एक ही पौधे को अधिक खाने से बचाने के लिए विकसित हुआ, तो एक तरह से, पादप खाद्य पदार्थों का स्वाद जहर जैसा हो सकता है। हममें से कुछ के लिए, यह कड़वी अनुभूति विशेष रूप से तीव्र है, और दूसरों के लिए यह इतनी बुरी नहीं है। यह आंशिक रूप से हमारे जीन के कारण है।

खबर संक्षेप

रुपया नौ पैसे टूटकर 90.74 प्रति डॉलर पर

मुंबई। रुपया सोमवार को उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में नौ पैसे टूटकर 90.74 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि व्यापारी भारत-अमेरिका अंतरिम व्यापार ढांचे के विवरण का आकलन करते नजर आए। विदेशी पूंजी के समर्थन पर निवेशकों के जोखिम से बचने के रवैये का असर पड़ा।

बजाज इलेक्ट्रिकल्स को 34.1 करोड़ रुपये का घाटा

नई दिल्ली। बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड को चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में 34.10 करोड़ रुपये का एकीकृत शुद्ध घाटा हुआ है। लाभ मार्जिन में कमी और नयी श्रम संहिताओं के प्रभाव के कारण उसे यह घाटा उठाना पड़ा। कंपनी ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में उसे 33.36 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था।

मेकमाइट्रिप ने माइनर होटल्स से किया करार

नई दिल्ली। नैस्डैक में सूचीबद्ध यात्रा बुकिंग मंच मेकमाइट्रिप ने सोमवार को दुनिया भर में 560 से अधिक संपत्तियों का संचालन करने वाले वैश्विक आतिथ्य समूह माइनर होटल्स के साथ रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की। यह सहयोग भारतीय यात्रियों के लिए यूरोप, एशिया और पश्चिम एशिया के शहरों और रिसॉर्ट स्थलों में अंतरराष्ट्रीय प्रवास के विकल्पों को बढ़ाएगा।

आयकर कानून का नया नियम अनुपालन बोझ को करेगा कम

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

नये आयकर कानून के लिए जारी नियमों का मसौदा एवं फॉर्म को काफी सरल बनाया गया है। इसमें नियमों की संख्या लगभग 35 प्रतिशत घटाकर 333 कर दी गयी है जबकि फॉर्म की संख्या में 50 प्रतिशत से अधिक की कटौती की गयी है।

- नियमों की संख्या घटाकर 333 कर दी गई

इस पहल का मकसद करदाताओं के लिए प्रावधानों को सरल बनाना, अनुपालन बोझ को कम करना और व्यवस्था को करदाताओं के अनुकूल बनाना है। उन्होंने कहा कि नये मसौदा नियम और फॉर्म पर लोगों के सुझाव आने के बाद इसे मार्च के पहले सप्ताह में अधिसूचित किया जाएगा।

मार्च के पहले सप्ताह में होगा अधिसूचित

फार्म की भाषा आसान बनाई गई

सूत्रों ने कहा, " परिचालन, प्रशासनिक या कानूनी उलझन से बचने के लिए फॉर्म की भाषा को आसान बनाया गया है।" एक सवाल के जवाब में सूत्र ने कहा कि इससे कर अनुपालन सुगम एवं बेहतर होगा। साथ ही कर विभाग की परिचालन क्षमता और मजबूत होगी जिससे कर चोरी पर लगाम लगाने में मदद मिलेगी।

फार्म का मानकीकरण किया गया

आयकर नियम ,1962 के तहत इसकी संख्या क्रमशः 511 और 399 थी। प्रस्तावित आयकर नियम में भाषा को सरल बनाया गया है और उन अनुपालन को हटाया गया है जिनकी जरूरत अब नहीं रह गयी है। इसके साथ अनुपालन को सुगम बनाने के लिए फॉर्म का मानकीकरण किया गया है।

अनावश्यक प्रावधान समाप्त किए गए : *इसके अलावा, नियमों को आयकर कानून, 2025 के साथ संबद्ध किया गया है और अनावश्यक प्रावधानों को समाप्त किया गया है। सूत्रों ने कहा, 'नियमों को और फॉर्म को 'रि-इंजीनियर' किया गया है। इसके तहत नियमों को आयकर कानून, 2025 के साथ संबद्ध किया गया है और अनवाश्यक प्रावधानों को समाप्त किया गया है।*

नया कानून 1 अप्रैल 2026 से लागू होगा

उल्लेखनीय है कि कर विभाग ने बीते सप्ताह शनिवार को नये आयकर कानून, 2025 के तहत नियमों का मसौदा एवं फॉर्म जारी किये थे। आयकर विभाग ने 22 फरवरी तक आयकर नियम, 2026 के मसौदा नियम और फॉर्म पर संबंधित पक्षों से सुझाव मांगे हैं। नया आयकर कानून, 2025 एक अप्रैल, 2026 से लागू होगा।

आयकर कानून 1961 की जगह लेगा

यह छह दशक से अधिक पुराने आयकर कानून, 1961 की जगह लेगा। आयकर विभाग के सूत्रों ने नियमों के मसौदे और फॉर्म के बारे में जानकारी देते हुए कहा, आयकर नियम और फॉर्म को युक्तिसंगत बनाया गया है। प्रस्तावित आयकर नियम, 2026 के तहत नियमों की संख्या घटाकर 333 जबकि फॉर्म की संख्या घटाकर 190 की गयी है।

नियमों को अंतिम रूप देने मार्च के पहले सप्ताह में होगा अधिसूचित

आयकर नियम में पैन उल्लेख करने के लिए लेन-देन सीमा बढ़ाने का प्रस्ताव

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

आयकर नियम के मसौदे में बैंकों में नकद जमा/निकासी, गाड़ी और संपत्ति खरीदने और होटल बिल भुगतान के लिए पैन का उल्लेख करने को लेकर लेन-देन सीमा को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाने का प्रस्ताव है। मसौदे में नियोक्ताओं द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का मूल्य बढ़ाने और क्रिप्टो एक्सचेंज के लिए कर विभाग के साथ जानकारी साझा करना अनिवार्य करने का भी प्रस्ताव है।

इसमें केंद्रीय बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) को इलेक्ट्रॉनिक भुगतान के स्वीकृत तरीके के तौर पर भी शामिल किया गया है। मसौदा नियम में आवास किराया भत्ते (एचआरए) का दावा करने के मकसद से बेंगलुरु, पुणे, अहमदाबाद और हैदराबाद को शामिल करने के लिए श्रेणी-1 महानगरों की सूची का विस्तार किया गया है। इस सूची में दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई शामिल हैं।

50 हजार से अधिक भुगतान पर पैन बताना जरूरी

किसी भी अचल संपत्ति की खरीद या बिक्री या गिफ्ट या संयुक्त विकास समझौते के मामले में, अगर सौदा लागत 20 लाख रुपये ज्यादा है, तो पैन जरूरी होगा, जबकि अभी यह सीमा 10 लाख रुपये है। मसौदा नियमों के तहत, बीमा कंपनी के साथ खाता आधारित संबंध शुरू करने के लिए पैन जरूरी होगा। अभी, एक वित्त वर्ष में जीवन बीमा प्रीमियम के तौर पर 50,000 रुपये से अधिक के भुगतान के लिए पैन जरूरी है।

खास बातें

- श्रेणी-1 महानगरों की सूची का विस्तार किया गया है
- सूची में दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई शामिल हैं
- बैंकों में नकद जमा, निकासी आदि भुगतान में पैन नंबर जरूरी

वाहन की कीमत पांच लाख से अधिक तो पैन जरूरी : *वाहन (मोटर साइकिल सहित) खरीदने के मामले में, अगर कीमत पांच लाख रुपये से ज्यादा है, तो खरीदार को अपना पैन बताना होगा। मौजूदा आयकर नियम, 1962 में दोपहिया वाहन खरीदने के लिए पैन बताने का नियम नहीं है, जबकि मोटर वाहनों के लिए कीमत चाहे जो भी हो, इसकी जानकारी देना जरूरी था।*

10 लाख से ज्यादा नकद जमा पर पैन बताना जरूरी : *प्रस्तावित आयकर नियम, 2026 के अनुसार, किसी व्यक्ति के एक या ज्यादा खातों में, एक वित्त वर्ष में कुल 10 लाख रुपये या उससे ज्यादा नकद जमा करने या निकालने के लिए स्थायी खाता संख्या (पैन) बताना जरूरी होगा। अभी, किसी बैंक, कंपनी या सहकारी बैंक में किसी भी एक दिन में 50,000 रुपये से ज्यादा नकद जमा करने पर पैन जरूरी है।*

नया कानून एक अप्रैल से होगा लागू *वित्त मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) संबंधित पक्षों से सलाह के बाद नियमों को अंतिम रूप देगा और मार्च के पहले सप्ताह तक उन्हें अधिसूचित करेगा। आयकर कानून, 2025 को लागू करने के लिए आयकर नियमों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। नया आयकर कानून एक अप्रैल से लागू होगा।*

मकसद जरूरी जानकारी लेना

सूत्रों ने कहा कि पैन बताने की सीमा को सही करने के पीछे मकसद सिर्फ 'जरूरी जानकारी' लेना है। वर्तमान में बाजार की वास्तविकताओं को देखते हुए, सरकारी गाड़ियों और मुफ्त खाने के लिए कर मुक्त सुविधाओं का मूल्य बढ़ाने का प्रस्ताव है।

कम क्षमता वाली कार का भत्ता 8000 प्रति माह

मोटर कार के लिए, 1.6 लीटर से कम इंजन क्षमता वाली कार का भत्ता 8,000 रुपये प्रति महीना होगा, जबकि दूसरों के लिए यह 10,000 रुपये प्रति महीना होगा। इनमें चालकों के लिए भत्ता भी शामिल होगा। मसौदा नियमों में क्रिप्टो-संपत्ति सेवा प्रदाताओं के लिए विस्तृत रिपोर्टिंग और जांच-पड़ताल की जिम्मेदारियों का भी प्रस्ताव है।

भारत का खाद्य तेल उत्पादन 96 लाख टन होने का अनुमान

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

- 1.67 करोड़ टन आयात की जरूरत : आईवीपीए
- भारत सोयाबीन तेल का आयात अर्जेंटीना व ब्राजील से करता है

उद्योग निकाय आईवीपीए के अनुसार, 2025-26 विपणन वर्ष में भारत में खाद्य तेल उत्पादन 96 लाख टन होने का अनुमान है, और घरेलू मांग को पूरा करने के लिए इसे लगभग 1.67 करोड़ टन खाद्य तेल का आयात करना होगा।

भारत मुख्य रूप से अर्जेंटीना और ब्राजील से सोयाबीन तेल आयात का करता है, जबकि देश मलेशिया और इंडोनेशिया से पाम तेल खरीदता है। कुल घरेलू मांग में से, देश को लगभग 60 प्रतिशत मात्रा का आयात करना पड़ता है।

कुआलालंपुर में सम्मेलन को संबोधित करते हुए, भारतीय वनस्पति तेल उत्पादक संघ के अध्यक्ष सुधाकर देसाई ने कहा कि ''वैश्विक खाद्य तेल बाजार व्यापार पुनर्गठन और आपूर्ति की दिक्कतों के कारण संरचनात्मक अस्थिरता के दौर में प्रवेश कर गए हैं। सोमवार को एक बयान में देसाई ने, जो इमामी एग्रोटेक लिमिटेड के सीईओ भी हैं, ने कहा कि भू-राजनीतिक पुनर्गठन ने वैश्विक व्यापार गलियारों को बदल दिया है। भारत के लिए निहितार्थ' विषय कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि 'शुल्क या व्यापार प्रवाह में छोटे समायोजन अब आपूर्ति श्रृंखला में असमान मूल्य उतार-चढ़ाव पैदा कर रहे हैं।

पामतेल का आयात घटकर 80 लाख टन

देसाई ने कहा कि विपणन वर्ष 2025-26 में, कुल आयात में 80-85 लाख टन पाम तेल, 50-55 लाख टन सोयाबीन तेल, 28-30 लाख टन सूरजमुखी तेल, और लगभग 2 लाख टन अन्य तेल शामिल होने की उम्मीद है, जिसमें नेपाल के माध्यम दो किए गए शून्य-मुक्त आयात भी शामिल हैं।

भारत जरूरत का मात्र 40 फीसदी पूरा करता है

देसाई ने अनुमान लगाया कि तेल वर्ष 2025-26 (अक्टूबर-सितंबर) में भारत का घरेलू खाद्य तेल उत्पादन 96 लाख टन होने का अनुमान है, जो भारतीय जरूरतों का केवल लगभग 40 प्रतिशत पूरा करता है। इसका मतलब है कि लगभग 1.67 करोड़ टन के लिए आयात पर निर्भरता होगी।

सूचना

सभी पाठकों से अनुरोध है कि हरिभूमि समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापनों (डिस्प्ले/क्लासीफाइड) में दिए गए तथ्यों/दावों के बारे में अपने विवेक से निर्णय लें और विज्ञापन के दावों की विश्वसनीयता को परखें। हरिभूमि समूह के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की विज्ञापनों के तथ्यों से सम्बन्धित कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते से बाजार में तेजी

एजेंसी ▸▸| मुंबई

प्रमुख शेयर सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी में सोमवार को लगातार दूसरे कारोबारी सत्र में तेजी जारी रही। भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को लेकर उत्साह और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं तथा रियल्टी शेयरों में जोरदार लिवाली से बाजार को समर्थन मिला।इस दौरान तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 485.35 अंक बढ़कर 84,065.75 अंक पर बंद हुआ। दिन के कारोबार के दौरान सेंसेक्स एक समय 734.28 अंक तक चढ़कर 84,314.68 अंक के उच्चस्तर पर पहुंच गया था। निफ्टी 173.60 अंक बढ़कर 25,867.30 अंक पर बंद हुआ। जियोजीत इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, ''व्यापार समझौते से मिले सकारात्मक संकेतों और विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की वापसी ने बाजार में जोखिम लेने की भावना को बढ़ावा दिया।

एमएसई के लिए गारंटीमुक्त ऋण सीमा बढ़कर 25 लाख हुई

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने सोमवार को कहा कि बैंक बेहतर पृष्ठभूमि और मजबूत वित्तीय स्थिति वाली सूक्ष्म एवं लघु इकाइयों (एमएसई) को 25 लाख रुपये तक का गारंटीमुक्त ऋण दे सकते हैं। केंद्रीय बैंक ने इसके लिए 'सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र को ऋण' से संबंधित निर्देशों में संशोधन किया है। आरबीआई ने बताया कि मौजूदा नियमों में संशोधन कर सूक्ष्म और लघु उद्यमों (एमएसई) के लिए बिना गारंटी वाले ऋण की अनिवार्य सीमा को बढ़ाकर 20 लाख रुपये कर दिया गया है। आरबीआई ने कहा, /"बैंक अपनी आंतरिक नीति के अनुसार, एमएसई इकाइयों के बेहतर पृष्ठभूमि और वित्तीय स्थिति के आधार पर, 25 लाख रुपये तक के ऋण के लिए 'गारंटी' की आवश्यकता को समाप्त करने की सीमा बढ़ा सकते हैं।/ इसके अलावा, बैंक जहां लागू हो वहां 'क्रेडिट गारंटी योजना' के कवर का लाभ भी उठा सकते हैं। संशोधित निर्देशों में यह भी स्पष्ट किया गया है कि यदि ऋण लेने वाला व्यक्ति बिना गारंटी वाली सीमा तक के ऋण के लिए अपनी मर्जी से सोना या चांदी गिरवी रखता है, तो इसे उपरोक्त नियमों का उल्लंघन नहीं माना जाएगा।

दिल्ली को नशा मुक्त बनाने का संकल्प लिया

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस के नशामुक्त अभियान द्वारा नशा मुक्ति जागरूकता मिशन तथा एनएसएस अधिकारियों के लिए नशा मुक्त जागरुकता शिविर दिनांक 9.9.2026 को माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और माननीय गृहमंत्री अमित शाह के साथ दिल्ली के उप राज्यपाल विनय कुमार सक्सेना के संकल्प लिया कि 2027 से पहले दिल्ली को नशा मुक्त बनाना है। और सतीश गोलछा, आईपीएस, पुलिस आयुक्त दिल्ली के नेतृत्व में नशा मुक्त हेतु समाज में जागरुकता फैलाने और उन्हें संलिप्त करने के लिए आवश्यक प्रयास करने के लिए निर्देशित किया।

राशिफल

मेष — वस्त्रों के प्रति रुझान बढ़ सकता है। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में लाभ के अवसर बढ़ेंगे।

वृष — आशा-निराशा के भाव रहेंगे। व्यर्थ के क्रोध एवं वाद-विवाद से बचें। परिश्रम भी अधिक रहेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन — आत्मविश्वास तो बहुत रहेगा, परन्तु मन परेशान हो सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। खर्चों की अधिकता रहेगी। सुस्वादु खानपान में रुचि रहेगी।

कर्क — मन में उतार-चढ़ाव रहेगा। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव रहेगा। कारोबार में कठिनाइयां आ सकती हैं। सचेत रहें। कारोबार में परिश्रम भी अधिक रहेगा।

सिंह — आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहेंगे, परन्तु आत्मसंयत भी रहें। धैर्यशीलता बनाये रखने के प्रयास करें। धार्मिक संगीत में रुचि बढ़ सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान

कन्या — पठन-पाठन में रुचि रहेगी। शैक्षिक कार्यों के लिए विदेश जा सकते हैं। लेखनादि-बौद्धिक कार्यों में मान-सम्मान की प्राप्ति होगी।

तुला — आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परन्तु धैर्यशीलता में कमी हो सकती है। कारोबार में वृद्धि होगी। शैक्षिक कार्यों के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

वृश्चिक — मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। शासन-सत्ता का सहयोग मिलेगा। कार्यक्षेत्र में सफलता के योग हैं।

धनु — व्यर्थ के क्रोध एवं वाद-विवाद से बचें। नौकरी में अफसरों से सदभाव बनाकर रखें। जीवनसाथी से मतभेद हो सकते हैं।

मकर — मन प्रसन्न तो रहेगा, परन्तु धैर्यशीलता बनाये रखने के प्रयास करें। नौकरी में अफसरों का सहयोग तो मिलेगा, परन्तु स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

कुंभ — स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। चिकित्सीय खर्च बढ़ सकते हैं। कारोबार में परिश्रम अधिक रहेगा। कुछ कठिनाइयां भी आ सकती है।

मीन — शैक्षिक कार्यों में मन लगेगा। खर्चों की अधिकता रहेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा।

कीट 2025 बैच की शानदार सफलता

भुवनेश्वर। वैश्विक स्तर पर चुनौतीपूर्ण जॉब मार्केट के बावजूद, कीट डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी ने 2025 बैच के लिए कैंपस प्लेसमेंट में एक बार फिर अपनी शान/बर्चस्व बरकरार रखी है। विश्वविद्यालय ने करीब 92.5 प्रतिशत का ओवरऑल प्लेसमेंट दर्ज किया है, जो इसे देश के शीर्ष प्लेसमेंट देने वाले संस्थानों में शामिल करता है। 2025 के प्लेसमेंट सीजन के दौरान 757 से अधिक कंपनियां कीट कैंपस पहुंचीं। करीब 5,000 योग्य छात्रों में से लगभग 4,621छात्र / छात्रा को जॉब ऑफर्स विभिन्न स्कूलों और विषयों में प्रस्तुत किये गए। कीट स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी रहा सबसे आगे- प्लेसमेंट ड्राइव में कीट स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी ने सबसे शानदार प्रदर्शन किया। यहां के 451 छात्रों को मिला 3,800 शीर्ष कम्पनीज से जॉब ऑफर्स मिले। औसत पैकेज 8.5 लाख रुपये प्रति वर्ष रहा, जबकि 739 छात्रों को कई अन्य ऑफर्स मिले। इस दौरान 1,500 से अधिक 'ड्रीम ऑफर्स' (उच्च पैकेज वाले) दिए गए और 59 कंपनियों ने 10 एलपीए या उससे अधिक का पैकेज ऑफर किया। सबसे अधिक 51 एलपीए का पैकेज माइक्रोसॉफ्ट ने दिया। वहीं, मास रिक्रूटर्स में टीसीएस (530 ऑफर्स) और विप्रो (342 ऑफर्स) ने बड़ी संख्या में शामिल है।

उत्तर रेलवे के कॉरिडोर में भीड़भाड़ कम करने हेतु 411.96 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी

नई दिल्ली। रेल मंत्रालय ने उत्तरी रेलवे के सबसे व्यस्त खंडों में से एक पर भीड़भाड़ कम करने के उद्देश्य से राजपुरा बाईपास लाइनके निर्माण को औपचारिक मंजूरी प्रदान कर दी है। माननीय रेल मंत्री से स्वीकृति प्राप्त होने के उपरांत रेल राज्य मंत्री श्रीरवनीत सिंह ने मीडिया को जानकारी देते हुए बताया कि इस परियोजना की अनुमानित लागत 411.96 करोड़ रुपये है तथा इसे रेलवे बोर्ड की अनुशंसा के बाद स्वीकृति प्रदान की गई है। उन्होंने आगे बताया कि स्वीकृत कार्य के अंतर्गत न्यू शंभू समर्पित माल गलियारा डीएफसी स्टेशन को मौजूदा राजपुरा–बठिंडा लाइन के काउली स्टेशन से जोड़ने हेतु 13.46 किलोमीटर लंबी बाईपास लाइन का निर्माण किया जाएगा। यह रणनीतिक संपर्क भारतीय रेल की "अम्ब्रेला वर्क 2025-26" योजना के तहत नई रेल लाइन परियोजनाओं का हिस्सा है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य वर्तमान में पूर्ण क्षमता पर संचालित हो रहे राजपुरा यार्ड पर दबाव कम करना है। श्री रवनीत सिंह ने यह भी कहा कि अंबाला–जालंधर खंड उत्तरी रेलवे नेटवर्क के सबसे व्यस्त कॉरिडोरों में से एक है। यदि समय रहते हस्तक्षेप नहीं किया गया, तो वर्ष 2030-31 तक इस क्षेत्र में लाइन क्षमता उपयोग 165 प्रतिशत से अधिक होने का अनुमान है, जो बढ़ते यातायात के कारण और भी अधिक दबाव उत्पन्न करेगा। नई बाईपास लाइन ट्रेनों को सीधी आवाजाही की सुविधा प्रदान करेगी, जिससे वे राजपुरा यार्ड की भीड़भाड़ से पूरी तरह बच सकेंगी। इससे मालगाड़ियों और यात्री ट्रेनों की आवाजाही अधिक सुगम एवं तीव्र होगी।

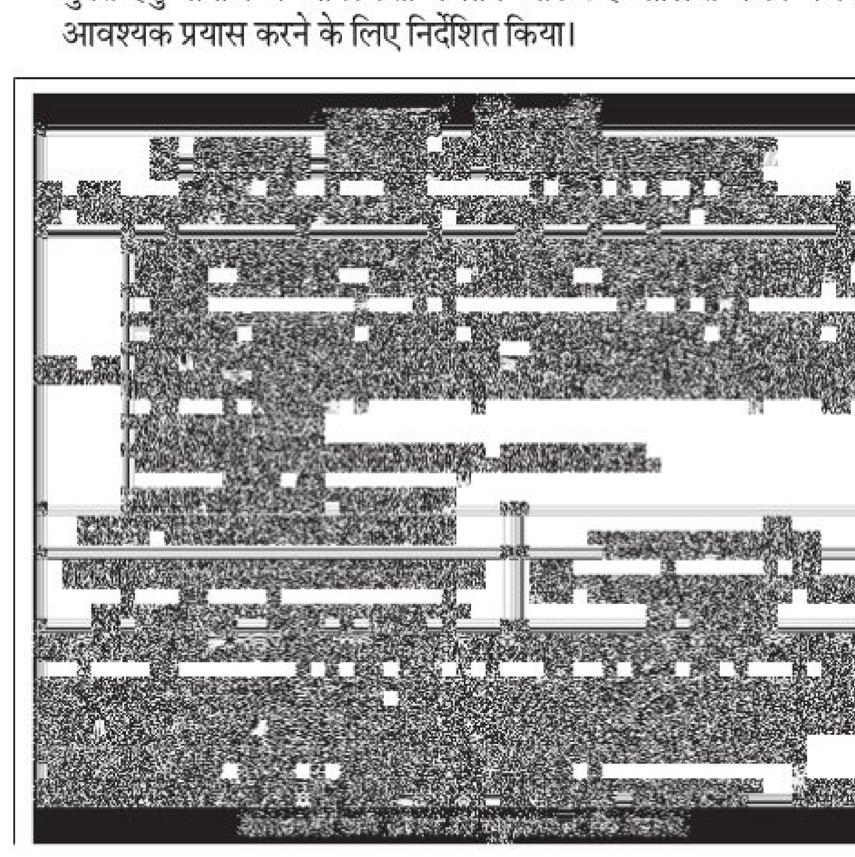

शब्द पहेली - 6134

बाएँसेदाए±

1. बादलों की गड़गड़ाहट-4
3. नीरस, रस विहीन-4
8. नेपाल की इस नायिका ने फिल्म 'सौदागर' से अपना कैरियर शुरु किया था-3,4
10. कंठस्थ करना-3
11. जुड़वा-3
13. उक्ति,काव्य कृति-3
15. आने वाला दिन-2
17. पर,पराया,दूसरा-2
18. हाथ-2
19. कविता लिखने वाल-2
21. बजाने वाला-3
25. कक्ष,रूम-3
26. ठिकाना,नीड़-3
27. हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री-5,2
30. अभिप्राय-4
31. आतंकित होना-4

ऊपर से नीचे

2. तरुणाई,लड़कपन-3
4. सहायता,आधार-3
5. बीताना,यापन करना-4
6. दिखावा,पाखंड-4
7. जरुरत,स्वार्थ-3
8. राजी करना-3
9. योग्य-3
12. मसलना-3
13. इस चौथ को सुहागिन पति की रक्षा हेतु उपवास रखती हैं-3
14. सुगंध,लास-3
16. रोकड़ राशि-3
20. रुकना, स्थिर होना-3
22. विजय दशमी -4
23. भोर,सवेरा-3
24. सना हुआ,तर-4
25. छल,धोखा-3
28. अनुकृति-3
29. श्रंगार -3

शब्द पहेली - 6133 का हल

अ	ति	आ	ब	श्य	क		का	रा	बा	स
ज	ल		र		म	छ	ली		र	मा
र		अ	दा	का	र		न	र		था
अ	र	मा	न		बं	द		ज	मी	न
म		न		म	द	म	स्त		रा	
र	ज	त	प	ट		क	र	म	ज	ला
	प		ट	क	रा	ना		स		ल
मु	ना	दी		ना	ग		द	ल	ह	न
ला		प	री		गा	ड़ी	वा	न		पा
का	का		त	न	व		घ		न	ल
त	र	सा	ना		न	ग	र	भ	व	न

प्रेरणा

अपने स्वार्थों से ऊपर उठकर ही व्यक्ति सही मायनों में एक मनुष्य बन सकता है -स्वामी विवेकानंद

संपादकीय

तेज विकास के लिए खेती से जुड़े कामों को बढ़ाना होगा

हमारे किसानों को अमेरिकी चारे से हानि नहीं लाभ होगा। देश की कुल 500 लाख टन पशु आहार की जरूरत का मात्र 1% ही अमेरिकी चारा आयात होगा। भारत में कृषि क्षेत्र की कुल जीडीपी का करीब एक-तिहाई मत्स्य सहित पशुपालन से आता है और अधिकांश किसान पशुपालक भी हैं। अमेरिकी फीड भारत में उपलब्ध चारे से काफी सस्ता और जानवरों के लिए स्वास्थ्यप्रद होगा। इसका कारण यह है कि विभिन्न अनाजों के स्टार्च से एथेनॉल बनाने के बाद घुलनशील तत्वों के साथ बचे अंश से फीड बनाया जाता है, जो प्रोटीन-रिच होता है और बाय-प्रोडक्ट होने के कारण सस्ता भी है। भारत में परम्परागत रूप से जानवरों को सरसों, मूंगफली, चावल की खली दी जाती है। यूएस आज लाल ज्वार का सबसे बड़ा उत्पादक है, जिससे भारत में सस्ता चारा मिलेगा। दूसरे, जहां तक सोयाबीन के तेल का सवाल है तो भारत वर्षों से तेल की कमी पूरी करने के लिए इसका आयात ब्राजील और अन्य देशों से करता रहा ही है। सरकार लगातार किसानों को तिलहन और दलहन उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती रही है। बहरहाल, भारत को अगर विकास की गति बढ़ानी है तो कृषि से लोगों को निकाल कर संलग्न उद्यमों जैसे पशु-पालन, पोल्ट्री और डेयरी के अलावा उच्च वैल्यू वाले हॉर्टिकल्चर व अर्ध-पैकेज्ड और पैकेज्ड उत्पाद जैसे उपक्रमों में लगाना होगा।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

कथा सुनने से चुनौतियों से निपटने की शक्ति मिलती है

इन दिनों कथाओं में बहुत भीड़ रहने लगी है। लेकिन सबसे बड़ा प्रभाव कथा का क्या होता है- ये बताया तुलसीदास जी ने उस वार्तालाप में, जो गरुड़ जी और काकभुशुंडि जी के बीच में हो रहा था। पक्षीराज गरुड़ ने कहा- अब श्रीराम कथा अति पावनि, सदा सुखद दुःख पुंज नसावनि। आप मुझे श्रीराम की अत्यंत पवित्र करने वाली, सदा सुख देने वाली और दुःख समूह का नाश करने वाली कथा सुनाइए। पवित्रता, सुख और दुःख तीनों का संबंध कथा से जोड़ा गया है। कथा में आने वाले पात्र और प्रसंग हमें यह प्रेरणा देते हैं कि जीवन में कुछ आप करें, कुछ होने दें। कर्म करते समय जब हम सोचते हैं कि जो हम कर रहे हैं, उसका परिणाम वही मिले, जैसा हमने सोचा- यहीं से झंझट शुरू हो जाती है। प्रकृति अपना काम कर रही है। जरूरी नहीं कि आपके सोचे हुए परिणाम को वैसा ही आपको सौंप दे। इसलिए कथा श्रवण से एक शक्ति मिलती है, जो हमें चुनौतियों से विनोद के साथ निपटने में मदद करती है।

• Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

विश्लेषण • बंगाल में ममता का भविष्य दांव पर

घुसपैठियों का मुद्दा जीत और हार का अंतर लाने वाला है

सियासत

मिन्हाज मर्चेंट
लेखक, प्रकाशक और सम्पादक
mmleditorial@gmail.com

2026 के बंगाल चुनाव में कांग्रेस का वाम मोर्चे से एक दशक पुराना गठबंधन तोड़ने का फैसला क्या अनपेक्षित नतीजे ला सकता है? 'हमने अकेले चलने का फैसला किया है,' कांग्रेस महासचिव और बंगाल प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने कहा, 'यह शीर्ष नेतृत्व का सामूहिक निर्णय है।' मीर ने यह घोषणा नई दिल्ली में कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं की बैठक के बाद की। इसका यह मतलब है कि कांग्रेस बंगाल की सभी 294 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ेगी। इसके साथ ही अब मुकाबला चतुष्कोणीय हो गया है। पर इससे भाजपा को ही फायदा होगा, क्योंकि कांग्रेस तृणमूल के पारंपरिक मुस्लिम वोटों का एक हिस्सा अपनी ओर खींच सकती है।

2021 के बंगाल चुनाव में तृणमूल को 48% वोट मिले थे और उसने 215 सीटें जीती थीं। लेकिन भाजपा का वोट शेयर भी 2016 के 10.04% से बढ़कर 38% हो गया था। उसकी सीटें 3 से बढ़कर 77 तक पहुंच गई थीं। हालांकि इसके बाद तृणमूल कार्यकर्ताओं द्वारा भाजपा कार्यकर्ताओं पर की गई हिंसा के बाद पार्टी का मनोबल गिरा। तृणमूल की आक्रामकता पर भाजपा की प्रतिक्रिया में देरी के चलते कई कार्यकर्ता अन्य दलों में चले गए। क्या इस बार हालात बदल सकते हैं? तृणमूल अब भी राज्य के लगभग 35% अल्पसंख्यक वोट बैंक पर नियंत्रण बनाए हुए है। फिर भी, पार्टी में घबराहट के संकेत दिख रहे हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इतनी चिंतित हैं कि उन्होंने पिछले सप्ताह सुप्रीम कोर्ट में एसआईआर मुद्दे पर स्वयं ही अपने राज्य के लिए पैरवी की। एसआईआर के जरिए राज्य की मतदाता सूची से बांग्लादेशी घुसपैठियों के नाम हटाए जा सकते हैं।

चार-तरफा मुकाबला चुनावी गणित को कैसे बदलेगा? शायद इतना तो नहीं कि ममता को लगातार चौथी बार मुख्यमंत्री बनने से रोका जा सके। अतीत में भी वे संदेशखाली प्रकरण, आरजी कर अस्पताल से जुड़ा दुष्कर्म और हत्या का मामला, शिक्षक भर्ती घोटाला और चिट फंड से जुड़े भ्रष्टाचार कांडों जैसी राजनीतिक आंधियों को झेल चुकी हैं।

समय के साथ ममता ने अपनी छवि को एक सियासी स्ट्रीट फाइटर से बदलकर एक बिजनेस-फ्रेंडली नेता के रूप में पेश करने की कोशिश की है। कोलकाता टेक हब के रूप में उभर रहा है, हालांकि बेंगलुरु, मुंबई, दिल्ली एनसीआर-गुरुग्राम और हैदराबाद से प्रतिस्पर्धा करने में अभी उसे लंबा रास्ता तय करना है। तृणमूल के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि ममता को राहुल गांधी के स्थान पर विपक्षी गठबंधन के संभावित नेता के रूप में भी देखा जा रहा है। हालांकि, चुनाव आयोग के खिलाफ बंगाल का पक्ष रखने के लिए एक नागरिक के रूप में सुप्रीम कोर्ट में उनकी मौजूदगी ने संकेत दिया कि बंगाल चुनाव में कुछ उठापटक हो सकती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बंगाल में घुसपैठ के मुद्दे पर लगातार अभियान चलाया है। यह मुद्दा राजनीतिक रूप से अत्यंत संवेदनशील है। जैसा कि मोदी ने पिछले सप्ताह राज्यसभा में अपने भाषण में कहा कि दुनिया के सबसे समृद्ध देश भी आज अवैध घुसपैठियों को बाहर कर रहे हैं। लेकिन हमारे देश में घुसपैठियों को बचाने के लिए अदालतों पर दबाव डाला जा रहा है। देश के युवा ऐसे लोगों को कैसे माफ करेंगे?

अलबत्ता ममता इस बात को लेकर ज्यादा चिंतित नहीं होंगी कि कांग्रेस ने वाम मोर्चे से अपना चुनावी गठबंधन तोड़ लिया है। उनके लिए दोनों ही दल अब राजनीतिक रूप से अप्रासंगिक हो चुके हैं। पांच वर्ष पहले दोनों मिलकर भी 10% से थोड़े अधिक ही वोट पा सके थे। अलग-अलग चुनाव लड़ने पर तो उनका संयुक्त वोट शेयर इससे भी कम रह सकता है।

भाजपा बंगाल में तेजी से उभर रही है। लेकिन चुनावी

यह भारत के इतिहास में पहली बार था, जब किसी मुख्यमंत्री ने व्यक्तिगत रूप से सुप्रीम कोर्ट में किसी मामले की पैरवी की हो। यह इस बात का संकेत है कि बंगाल की आगामी राजनीतिक लड़ाई में कितना कुछ दांव पर लगा हुआ है।

गणित अभी इसके संकेत नहीं देते कि वह 294 सदस्यीय विधानसभा में 148 सीटों का आंकड़ा पार कर सत्ता तक पहुंच सकती है। बहुमत हासिल करने के लिए भाजपा को 2021 के अपने 38% वोट शेयर को बढ़ाकर लगभग 45% तक लाना होगा। साथ ही यह भी उम्मीद करनी होगी कि तृणमूल का वोट शेयर 48 से घटकर 42% पर आ जाए। कांग्रेस और वाम मोर्चे के एकल अंक में सिमटने की संभावना को देखते हुए चतुष्कोणीय मुकाबला भी ममता को सत्ता से बाहर करने के लिए पर्याप्त नहीं दिखता।

ममता अब 71 की हो चुकी हैं, लेकिन घुसपैठ के मुद्दे पर कोई जोखिम लेने के मूड में नहीं हैं। बांग्लादेश- जहां 12 फरवरी को चुनाव होने हैं- से आए घुसपैठिये और शरणार्थी उनके वोट बैंक का छोटा लेकिन निर्णायक हिस्सा हैं। यह समूह जीत और हार के बीच फर्क पैदा कर सकता है। इसको लेकर चिंता की झलक ही ममता की सुप्रीम कोर्ट में नाटकीय उपस्थिति में दिखाई दी थी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

दूरदृष्टि • फिलहाल धमकियों तक ही सीमित है यूएस

अमेरिका के पास ईरान पर हमले की ठोस वजहें नहीं हैं

भू-राजनीति

लेफ्टिनेंट जनरल
सैयद अता हसनैन
कश्मीर कोर के पूर्व कमांडर

क्या अमेरिका ईरान पर हमला करेगा? बहुत से लोग मानते हैं कि मौजूदा टकराव युद्ध की ओर बढ़ने के बजाय दबाव बनाने की रणनीति है, जिस पर निर्णायक कार्रवाई से अधिक संकेत देने की कोशिश भर दिखलाई देती है। यह धारणा निराधार नहीं है। अमेरिका और ईरान के टकराव पर अनिश्चितता ज्यादा हावी है। यही ईरान के अड़ियल रुख और अमेरिका की हिचकिचाहट, दोनों का कारण बताती है। प्रतिबंधों, आर्थिक कठिनाइयों और विरोध-प्रदर्शनों के बावजूद ईरान झुकने से इनकार कर रहा है। इसका कारण यह है कि ईरान के सत्ता-कुलीनों का मकसद अपनी हुकूमत को बनाए रखना है।

तेहरान में सत्ता पर काबिज नेतृत्व मानता है कि बाहरी दबाव में झुकना, अंदरूनी मुश्किलें सहने से कहीं अधिक खतरनाक होगा। वहां के राजनीतिक ढांचे में किसी भी समझौते को पतन की शुरुआत माना जाता है। इसलिए बार-बार यह नैरेटिव सामने आता है कि ईरान चाहे जितना घिरा हुआ हो, उसे हर हाल में टिके रहना होगा। यह भी उल्लेखनीय है कि विदेशी दबाव अक्सर सरकारों को घरेलू मोर्चे पर नजर आने वाली असहमतियों को बाहरी साजिश करार देने का मौका देता है। इस बहाने दमन को जायज ठहराया जाता है। ऐसी धारणा बनाई जाती है कि अपने लोगों पर चाहे जितना कठोर नियंत्रण बनाए रखना हो, विदेशी दबाव में ढील देने की तुलना में यह अधिक सुरक्षित विकल्प है।

क्या ट्रम्प को यकीन है कि ईरान में सत्ता-परिवर्तन वहां व्यापक विरोध-प्रदर्शनों के बिना संभव है? ऐसा मानने के पक्ष में न तो इतिहास में कोई ठोस आधार है, न ही वर्तमान वास्तविकताओं में। बाहरी ताकतों के जरिए कराया कोई भी सत्ता-परिवर्तन शांतिपूर्ण नहीं रहा है। वॉशिंगटन में चल रही मौजूदा बहस इस सच्चाई का सीधा सामना करने से बचती दिखाई देती है।

सबसे बड़ी कमी एक स्पष्ट रूप से परिभाषित राजनीतिक परिणाम की है। उसके बिना सैन्य धमकियां व्यावहारिक रणनीति कम और सौदेबाजी का औजार अधिक बन जाती हैं। इस तरह की अस्पष्टता आत्मविश्वास नहीं, हिचकिचाहट का संकेत देती है। ऐसी बयानबाजियों के नीचे एक कहीं गहरा नैतिक और रणनीतिक प्रश्न छिपा होता है कि क्या राजनीतिक और सैन्य उद्देश्यों को तब वैध माना जा सकता है, जब उन्हें हासिल करने की कीमत हजारों नागरिकों की जान हो?

आधुनिक युद्धों का अनुभव इस प्रश्न का उत्तर बार-बार 'नहीं' के रूप में देता रहा है। व्यापक मानवीय त्रासदी के जरिये हासिल की गई जीतें अक्सर अपनी ही वैधता को नष्ट कर देती हैं। वे समाजों को कट्टर बनाती हैं, क्षेत्रों को अस्थिर करती हैं और भविष्य के संघर्षों के बीज बोती हैं। इराक इसका सबसे सशक्त उदाहरण है। वहां तुरत-फुरत में हासिल की गई सैन्य सफलता के बाद लंबी राजनीतिक विफलता, सांप्रदायिक हिंसा और क्षेत्रीय अस्थिरता देखी गई। ऐसे मामलों में जीत का भ्रम, दरअसल रणनीतिक पराजय को केवल टालता है।

एक गलतफहमी यह भी है कि ईरान को अमेरिका के लिए गंभीर खतरा बनने के लिए उसकी सैन्य ताकत की बराबरी करनी होगी। जबकि ईरान की प्रतिरोधक रणनीति को जानबूझकर इस तरह से तैयार किया गया है कि वह राजनीतिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक नुकसान पहुंचा सके। होर्मुज की खाड़ी में जहाजों के आवागमन को बाधित करने की उसकी क्षमता, मिसाइलों और ड्रोन के जरिये नौसैनिक ठिकानों को निशाना बनाना या किसी बड़े पोत को क्षति पहुंचाना ऐसे कदम हो सकते हैं, जिनके परिणाम अपेक्षाकृत छोटे साधनों के बावजूद असाधारण रूप से बड़े हों।

अमेरिका के किसी विमानवाहक पोत या किसी

युद्ध ऊंची आवाज में दी गई धमकियों से नहीं शुरू होते। वे तब शुरू होते हैं, जब दोनों में से किसी एक पक्ष के सामने अपने लक्ष्य पूरी तरह से स्पष्ट हो जाते हैं। ईरान के मामले फिलहाल अमेरिका के लक्ष्य अभी पूरी तरह से अस्पष्ट हैं।

महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर ईरान का एक भी वार वैश्विक बाजारों को झकझोर सकता है, अमेरिकी प्रतिष्ठा को गहरी चोट पहुंचा सकता है, जनता के दबाव के तहत राजनीतिक और सैन्य उकसावे को मजबूर कर सकता है और ऐसे घटनाक्रमों को जन्म दे सकता है, जिन पर किसी भी पक्ष का पूरा नियंत्रण न रहे। ईरान को अमेरिका को सैन्य रूप से पराजित करने की आवश्यकता नहीं है। उसे केवल इतना भर करना है कि किसी हस्तक्षेप की राजनीतिक कीमत को असहनीय बना दे। और अमेरिका इस हकीकत को समझता है। इसीलिए फिलहाल दोनों पक्ष लड़ाई को बढ़ाने के लिए तैयार नहीं लगते हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

इस लेख को मोबाइल पर सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

दैनिक भास्कर
अब आप NYT के सभी आर्टिकल DB एप पर हर मंगलवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें डीबी एप।

© The New York Times

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

हड़ताल

अमेरिका में सरकारी शिक्षक हड़ताल पर

सौम्याकार्लमंगला

अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को राज्य के सरकारी स्कूलों के शिक्षक हड़ताल पर चले गए हैं। इससे 50 हजार छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। ऐसा वाकया करीब 45 सालों के बाद हुआ है। यूनाइटेड एजुकेटर्स ऑफ सैन फ्रांसिस्को और स्कूल डिस्ट्रिक्ट प्रशासन के बीच वेतन वृद्धि और बढ़ती हेल्थ केयर लागत पर करीब एक साल से चल रही बातचीत के बाद भी नतीजा नहीं निकल पाया। यूनियन का कहना है कि पारिवारिक हेल्थ कवरेज पर शिक्षकों को हर महीने करीब 1200 डॉलर देने पड़ रहे हैं, जो जल्द 1500 डॉलर तक पहुंच सकता है। यूनियन अध्यक्ष कासोंद्रा क्यूरियल ने एक बयान में कहा, अगली पीढ़ी के लिए काम करने वालों के लिए बढ़ती महंगाई एक सच्चा संकट है। अब बहुत हो चुका। यूनियन की मांग है कि स्वास्थ्य बीमा का पूरा खर्च डिस्ट्रिक्ट उठाए और दो साल में 9% वेतन वृद्धि दे। डिस्ट्रिक्ट प्रशासन ने 6% बढ़ोतरी और कुछ समय के लिए स्वास्थ्य खर्च उठाने का प्रस्ताव दिया है। डिस्ट्रिक्ट अधीक्षक मरिया सु ने प्रस्ताव को दोनों पक्षों के लिए फायदे का सौदा बताया, लेकिन समझौता नहीं हो सका। अभिभावकों ने शिक्षकों के मुद्दों के प्रति सहानुभूति जताई, पर बच्चों की पढ़ाई पर असर को लेकर चिंता भी व्यक्त की है। हड़ताल अनिश्चितकाल तक चल रही है। © The New York Times

ओपिनियन कुछ जगहों पर भीषण स्थिति, लोग संपत्ति बेचकर और पेट काटकर गुजारा कर रहे हैं

यूएसएड के बजट में कटौती से कई देशों के संकटग्रस्त क्षेत्रों में 'अकाल' की स्थिति, 2.5 करोड़ लोग प्रभावित

जेरेमीकोडिनिडिक

ट्रम्प प्रशासन द्वारा यूएसएड यानी यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलमेंट के फंड में कटौती से दुनिया के संकटग्रस्त इलाकों में परेशानी होने लगी है। असर ये हुआ कि पिछले साल 2024 की तुलना में 2.5 करोड़ कम लोगों तक सहायता पहुंची। 2,000 से अधिक क्लीनिक बंद हो गए हैं। 2024-2025 के बीच अमेरिकी वैश्विक खाद्य सहायता फंडिंग 40% तक घट गई। लाखों लोगों की एचआईवी उपचार व जांच तक पहुंच की सुविधा खत्म हो गई।

यूएसएड की फंडिंग कम होना व उसके असर की अनदेखी दिखाती है कि अमेरिका दुनिया को लेकर कठोर, निर्दयी और खुद में सिमटी हुई सोच अपना रहा है। ऐसी दुनिया, जहां नैतिक नेतृत्व नहीं बल्कि सिर्फ ताकत, दबदबा और अपने फायदे को ही प्राथमिकता मिलती है।

यूएसएड इस बात का प्रतीक थी कि अमेरिका दुनिया में खुद को कैसा देखना चाहता है। लेकिन ट्रम्प का नया सिस्टम अब अमेरिका की वैश्विक पकड़ और प्रतिष्ठा को कमजोर कर रहा है। इन कदमों से दुनिया अमेरिका को भरोसेमंद साथी नहीं, बल्कि एक अनिश्चित और अस्थिर विरोधी की तरह देखने को मजबूर हो रही है।

सोमालिया में डॉक्टर्स विदाउट बॉर्डर्स के अनुसार 2024 के बाद से गंभीर कुपोषण से पीड़ित बच्चों के भर्ती होने के मामले 73% बढ़े हैं। बांग्लादेश में शरणार्थियों के बीच सहायता घटने से बाल विवाह बढ़े हैं। अफगानिस्तान में महिलाएं खाना कम कर रही हैं। दक्षिण सूडान में स्वास्थ्य और स्वच्छता कार्यक्रम बंद होने के बाद हैजा से मौतें रिकॉर्ड स्तर पर हैं।

एक तरफ अमेरिका ने गरीब और संकट में फंसे लोगों की मदद के लिए पैसा काट दिया, दूसरी तरफ इजराइल सरकार के दबाव में अमेरिकी विदेश विभाग ने नियम तोड़कर 272 करोड़ रुपए ऐसी संस्था को दिए, जिस पर सैकड़ों फिलिस्तीनियों की जानें लेने का आरोप है। शरणार्थियों की मदद के लिए रखी गई 68 करोड़ रुपए भ्रष्टाचार के लिए बदनाम अफ्रीकी देश इक्वेटोरियल गिनीको दे दिए । ताकि वह देश अमेरिका से निकाले गए तीसरे देशों के नागरिकों को अपने यहां स्वीकार करने पर सहमत हो जाए।

विशेषज्ञ चेता रहे स्थिति और खराब हो सकती है

दुनिया के कई संकटग्रस्त इलाकों में परिवार अब जीवित रहने के ऐसे उपाय अपनाने को मजबूर हो गए हैं, जो आमतौर पर बड़े पैमाने पर अकाल जैसी स्थिति से पहले अपनाए जाते हैं। लोग पहले अपनी बची-खुची संपत्ति बेचकर गुजारा करने की कोशिश कर रहे हैं। इसके बाद कई परिवार भोजन छोड़ने लगे हैं और कर्ज में डूब रहे हैं। कुछ स्थानों पर लोग मजबूरी में अगले साल के लिए बचाकर रखे बीज तक खाने लगे हैं। कई इलाकों में हालात इतने खराब हो गए हैं कि लोग जीवन बचाने के लिए यौन संबंध बनाने को भी मजबूर हैं। राहत एजेंसियों ने चेतावनी दी है कि अगर जल्द सहायता नहीं बढ़ाई गई तो कई संकटग्रस्त क्षेत्रों में भुखमरी और मौतों का खतरा और गंभीर हो सकता है।

10 अरब डॉलर का बजट कम हुआ, सूडान से बांग्लादेश तक असर

अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो द्वारा अमेरिका के राहत और विकास कार्यक्रमों से 80% से अधिक को रद्द करने के बाद अब जीवनरक्षक मानवीय राहत पर कुल अमेरिकी खर्च 2024 में 14 अरब डॉलर (1.27 लाख करोड़ रु.) से अधिक था, जो कि घटकर 2025 में सिर्फ 3.7 अरब डॉलर (33 हजार करोड़) रह गया। वैश्विक राहत के लिए 10 अरब डॉलर रोक लेना संघीय बजट के लिए राउंडिंग एरर जितना ही है। सूडान, बांग्लादेश, गाजा, केन्या तथा चाड के शरणार्थी शिविरों तक में धन की जरूरत है। रुबियो ने कहा है कि इन कटौतियों से किसी की मौत नहीं हुई, इन दावों को पूरी तरह गलत साबित किया जा चुका है। केन्या में खाद्य सहायता कटौती के बाद शरणार्थी बच्चों की भूख से मौत, स्वास्थ्य कार्यक्रम बंद होने के बाद इलाज योग्य बीमारियों से लोगों की मौत और एचआईवी कार्यक्रमों में व्यवधान के कारण बच्चों के एचआईवी के साथ पैदा होने के मामले आ रहे हैं। © The New York Times

इस हफ्ते चर्चा में...

मस्क की स्पेसएक्स व एक्सएआई का विलय

11.34 लाख करोड़ रु.
बाजार मूल्य हो गया है इलॉन मस्क की स्पेसएक्स और एक्सएआई के विलय से बनी कंपनी का। एक्सएआई को अब स्पेस में डेटा सेंटर बनाने के साधन मिलेंगे।

19.95 लाख करोड़ रु.
के दांव हर साल अमेरिका में लगाए जाते हैं स्पोर्ट्स गैम्बलिंग पर।

2.35 लाख करोड़ रु.
का मूल्य कम कर दिया है यूरोपीय कार कंपनी स्टेलांटिस ने इलेक्ट्रिक वाहनों से जुड़े निवेश पर। कंपनी ईवी के कई प्रोजेक्ट बंद कर रही है।

रिसर्च

युद्ध से यूक्रेन में पालतू कुत्तों के बर्ताव में बदलाव आया

एंथोनी हैम

यूक्रेन पर रूसी हमले ने वहां के पालतू कुत्तों पर भी असर डाला है। इवॉल्यूशनरी एप्लिकेशन जर्नल में प्रकाशित एक स्टडी में पाया गया कि यूक्रेन में युद्ध से पहले पालतू रहे डॉग्स ऐसा व्यवहार करने लगे जैसा जंगली माहौल में रहने वाले कुत्ते करते हैं। वैज्ञानिकों ने यूक्रेन के नौ क्षेत्रों में 763 कुत्तों का डेटा दो साल तक जुटाया। एनिमल शेल्टर्स के अलावा सुरक्षित इलाकों और खतरनाक क्षेत्रों से वैज्ञानिकों, वेटरनरी विशेषज्ञों, स्वयंसेवकों ने जानकारी जमा की। डॉ. इहोर डाइकी का कहना है, हमारे साथ रहे कुछ पालतू कुत्ते बेहद डरे और आतंकित रहते थे। युद्ध के अग्रिम मोर्चे पर पाए गए कुत्ते बहुत कम समय में जंगली कुत्तों और भेड़ियों जैसे हो गए। उनका बर्ताव ज्यादा आक्रामक हो गया। अधिकतर डॉग्स फूड के लिए मानवों पर निर्भर रहे। वे कभी-कभार शिकार करते थे। कई बार तो उन्हें मृत सैनिकों के शव खाते देखा गया।

© The New York Times

फूड दही, ब्रेड स्वास्थ्य मानकों पर खरे, फोर्टिफिकेशन से बीमारियां रुकीं

फूड प्रोसेसिंग से हमेशा नुकसान नहीं, फायदे भी

जॉनदुत्कीविचऔर गेब्रियलएनरोसेनबर्ग

सोशल मीडिया पर स्थानीय, ऑर्गेनिक और नेचरल खाने को लेकर बढ़ते प्रचार और रियल फूड के नारे ने अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड को लेकर डर पैदा कर दिया है। ब्रेड, क्रीम चीज या पैक्ड भोजन को कई लोग सीधे स्वास्थ्य के लिए खतरनाक मानने लगे हैं। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड को एक ही नजर से देखना भ्रामक और अधूरा नजरिया है।

विशेषज्ञ याद दिलाते हैं कि आज जो औद्योगिक फूड सिस्टम आलोचना के घेरे में है, उसी ने बीती एक सदी में कुपोषण से लड़ने में निर्णायक भूमिका निभाई है। 20वीं सदी की शुरुआत में, जब लोग केवल तथाकथित 'रियल फूड' खाते थे, तब एनीमिया और आयोडीन की कमी जैसी बीमारियां आम थीं। आटे में आयरन और नमक में आयोडीन मिलाने जैसी फोर्टिफिकेशन तकनीकों ने इन समस्याओं को बड़े पैमाने पर खत्म किया। यानी फूड प्रोसेसिंग हमेशा नुकसान का कारण नहीं रही, बल्कि कई मामलों में यह सार्वजनिक स्वास्थ्य का आधार बनी।

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड को लेकर विशेषज्ञ यह भी स्पष्ट करते हैं कि सभी प्रोसेस्ड फूड एक जैसे नहीं होते। शक्कर और फैट से भरपूर जंक फूड स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, लेकिन दही, होल-ग्रेन ब्रेड और कुछ रेडी-टु-ईट प्लांट-बेस्ड खाद्य पदार्थ बेहतर स्वास्थ्य परिणामों से भी जुड़े पाए गए हैं।

औद्योगिक फूड सिस्टम को स्वास्थ्य केंद्रित बनाना है समाधान

स्टारबक्स का एग व्हाइट बाइट, ट्रेडर जो का पालक पनीर जैसे पहले से बने या फ्रोजन विकल्प बाजार में उपलब्ध हैं, जो कि ताजा बने खाने जितने ही पौष्टिक बताए जाते हैं। इसलिए पूरे औद्योगिक फूड सिस्टम को खारिज करना समाधान नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य-केंद्रित बनाने में है। ऐसी फूड टेक्नोलॉजी में निवेश की जरूरत है, जो पौष्टिक खाद्य पदार्थों को बेहतर प्रोसेस्ड विकल्पों में बदल सके। प्लांट-बेस्ड मीट विकल्पों, सेल्युलर कृषि पर्यावरण पर दबाव कम कर सकते हैं। कृषि सब्सिडी को पौष्टिक भोजन उत्पादन की दिशा में मोड़ना होगा। शुगर ड्रिंक्स पर टैक्स, स्कूलों में सोडा पर रोक, साफ पोषण लेबलिंग और खाद्य कंपनियों पर निगरानी स्वस्थ भोजन की आदतों को बढ़ावा दे सकते हैं।

टेक्नोलॉजी ऑटोप्ले से बच्चों को नुकसान

टिकटॉक में लत लगाने वाले फीचर्स टीनएजर्स पर खतरा, अब ईयू की सख्ती

एडमसटारिआनो

चीनी सोशल मीडिया एप टिकटॉक का प्रोग्राम इस तरह डिजाइन किया गया है कि लोग लंबे समय तक कंटेंट देखते रहें। लेकिन अब यूरोपियन यूनियन (ईयू) की नियामक एजेंसी का कहना है, टिकटॉक को कामयाब बनाने वाले फीचर गैरकानूनी हो सकते हैं। 27 देशों के यूरोपियन कमीशन का कहना है कि टिकटॉक का स्क्रॉल, ऑटो प्ले फीचर्स और प्रोग्राम की डिजाइन लोगों को उसका आदी बनाती है। यह ईयू के ऑनलाइन सेफ्टी नियमों के खिलाफ है।

कमीशन ने एक बयान में कहा है, टिकटॉक की सेवाएं बच्चों, कमजोर वयस्कों सहित यूजर के लिए शारीरिक और मानसिक तौर पर नुकसानदेह हैं। टिकटॉक को अपने बुनियादी फीचर्स में बदलाव करना चाहिए या भारी जुर्माने के लिए तैयार रहना होगा। बाइटडांस का कहना है, वह इन निष्कर्षों को चुनौती देगी।

खान-पान में गड़बड़ी, स्वयं को नुकसान पहुंचाने जैसी प्रवृत्ति बढ़ी

कमीशन की वाइस प्रेसीडेंट हेना विरकुनेन ने कहा, सोशल मीडिया की लत बच्चों और टीनएजर्स के विकसित हो रहे दिमागों पर खराब असर डाल सकती है। इससे युवाओं में अवसाद, खान-पान में गड़बड़ी और स्वयं को नुकसान पहुंचाने जैसी प्रवृत्तियां पैदा हो रही हैं।

© The New York Times

महंगाई • इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए चिप की सप्लाई घटी, 50% बढ़ सकते हैं दामः काउंटरपॉइंट

मेमोरी चिप की किल्लत; स्मार्टफोन, स्मार्ट टीवी, लैपटॉप की कीमतें 10% तक बढ़ सकती हैं

हर्ष शिवम | नई दिल्ली

एआई की तेज रफ्तार अब फोन, टीवी जैसे कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स महंगे कर सकती है। एआई इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए डेटा सेंटर्स और सर्वर्स को मेमोरी चिप्स की ज्यादा जरूरत पड़ रही है। इसके चलते कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए चिप की सप्लाई कम हो गई है। इससे चिप की कीमतें 50% तक बढ़ने की संभावना है। काउंटरपॉइंट रिसर्च की एक रिपोर्ट कहती है कि ऐसे में स्मार्टफोन, टीवी, कम्प्यूटर और अन्य कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स के दाम इस साल 7 से 10 फीसदी बढ़ सकते हैं।

दरअसल, मेमोरी चिप्स बनाने वाली कंपनियां हाई-बैंडविड्थ मेमोरी और सर्वर-ग्रेड डीआरएएम को प्राथमिकता दे रही हैं, क्योंकि इनमें मुनाफा ज्यादा है। काउंटरपॉइंट रिसर्च के मुताबिक, सैमसंग, एसके हाइनिक्स और माइक्रॉन जैसे प्रमुख सप्लायर्स बड़े एआई और सर्वर ग्राहकों को पहले सप्लाई कर रहे हैं। ऑर्डर कंट्रोल सख्त कर दिए हैं और स्टॉकिंग रोक रहे हैं। इससे कंज्यूमर-ग्रेड के मेमोरी चिप्स की उपलब्धता घट गई है।

मेमोरी चिप्स के दाम पहले ही 400% तक बढ़ चुके

ब्लॉपंक्ट और कोडक के ब्रांड लाइसेंसी सुपर प्लास्ट्रॉनिक्स के सीईओ अवनीत सिंह मारवाह ने कहा कि स्मार्ट टीवी में डीडीआर3 और डीडीआर4 मेमोरी इस्तेमाल होती है। लेकिन एआई डिमांड के चलते ये मेमोरी चिप्स सर्वर्स की ओर डायवर्ट हो रही हैं। नतीजतन अंतरराष्ट्रीय बाजार में मेमोरी चिप्स के दाम पहले ही 300-400 फीसदी बढ़ चुके हैं।

बढ़ती कीमतों के चलते बड़ी स्क्रीन का ट्रेंड पलटने की संभावना

- टीवी ग्राहकों का व्यवहार बदल सकता है। प्लास्ट्रॉनिक्स के मारवाह के मुताबिक, लोग 65 इंच टीवी की जगह 55 इंच लेंगे, या 55 इंच वाले 43-50 इंच पर शिफ्ट होंगे। बड़े स्क्रीन का ट्रेंड पलट सकता है।
- ग्राफिक्स सेगमेंट प्रभावित होंगे। मेमोरी की कमी से एनवीडिया जैसी कंपनियों ने कुछ गेमिंग चिप्स लॉन्च करने में देरी की है। ऑटो सेक्टर भी प्रभावित हुआ क्योंकि कारों में भी सेमीकंडक्टर्स और मेमोरी लगती है।

एपल 25% चिप इस्तेमाल करती है, सप्लायर्स पर दबाव बनाएगी

- **टीवी की कीमत इस साल 7-10% बढ़ सकती है** रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक, हालात ऐसे हैं कि इस साल मार्च तक मेमोरी चिप्स के दाम 40-50% और बढ़ सकते हैं। इससे टीवी की कीमतें 7-10% बढ़ सकती हैं। जल्द सुधार की उम्मीद भी नहीं है। भारत में जीएसटी 28% से घटकर 18% रह जाने के फायदे भी अब खत्म हो गए हैं।
- **एपल छोड़कर अन्य ब्रांड्स के फोन महंगे हो सकते हैं** स्मार्टफोन कंपनी नथिंग ने कहा है कि इस साल फोन के दाम बढ़ाएगी। हालांकि, विश्लेषक मिंग-ची कू के मुताबिक, एपल आईफोन 18 के दाम स्थिर रखने के प्रयास करेगी। एपल ग्लोबल मेमोरी चिप सप्लाई का 20-25% इस्तेमाल करती है। सप्लायर्स पर दबाव डाल सकती है।
- **कम्प्यूटर ब्रांड्स चीन से चिप्स लेने की सोच रहे** कुछ ग्लोबल कम्प्यूटर ब्रांड्स पारंपरिक चिप कंपनियों के विकल्प तलाश रहे हैं। एचपी, डेल, एसर और एसस जैसी कंपनियां सीएक्सएमटी जैसी चीन की कंपनियों से मेमोरी चिप्स खरीदने पर विचार कर रही हैं। यदि ऐसा हुआ तो लैपटॉप, पीसी और टैबलेट के दाम भी स्थिर रह सकते हैं।

इंटरव्यू | अरुण नारायण, सीईओ, टाइटन, ज्वेलरी डिवीजन

हम भरोसा करने के लिए कहते नहीं, बल्कि इसे साबित करते हैं: नारायण

मुंबई | सोना महंगा होने से ग्राहक भारी के बजाय हल्की और स्टाइलिश ज्वेलरी को तवज्जो दे रहे हैं। इस ट्रेंड को भांपते हुए देश की सबसे बड़ी ज्वेलरी विक्रेता टाइटन ने डायमंड ज्वेलरी पर फोकस बढ़ाया है। ज्वेलरी बिक्री में हीरों का हिस्सा 12% है, जो ग्रोथ की बड़ी संभावनाओं को दिखाता है। हीरों की खरीदारी में भरोसा और सही कीमत ग्राहकों की बड़ी चिंता रही है। कंपनी सभी स्टोर्स में हीरों की शुद्धता वैज्ञानिक तरीके से जांचने के लिए 'डायमंड एक्सपर्टाइज सेंटर' (डीएक्ससी) शुरू कर रही है। टाइटन कंपनी, ज्वेलरी डिवीजन के **सीईओ अरुण नारायण ने एन रघुरामन के साथ खास बातचीत** में कहा कि इससे ग्राहकों का भरोसा मजबूत होगा। बातचीत के मुख्य अंश...

हीरों पर अचानक इतना बड़ा दांव लगाने और सभी शोरूम में 'डीएक्ससी' लॉन्च करने की वजह?

सीधे शब्दों में कहें तो हम बाजार की मांग को पूरा कर रहे हैं। ठीक उसी तरह जैसे हमने कोविड के बाद गोल्ड कैरेटमीटर की स्थापना की। जब लोग हीरे का हार खरीदते हैं, तो वे मानसिक शांति भी चाहते हैं कि स्टोर हीरों की गुणवत्ता को प्रमाणित करे। एक हार में कई पत्थर होते हैं और जरूरी नहीं कि सभी एक ही मानक के हों। ग्राहकों की मदद के लिए हमने खुद ये मशीनें बनाना शुरू किया है। अभी 50 स्टोर्स में यह सुविधा है, जल्द ही 200 और इस साल के अंत तक सभी स्टोर्स में यह सुविधा उपलब्ध होगी।

- **हीरों के लिए सर्टिफिकेट प्रणाली पहले से मौजूद है। फिर डीएक्ससी की जरूरत क्यों?**
सर्टिफिकेट एक बात है और अपनी आंखों के सामने वैज्ञानिक तरीके से जांच करवाना अलग अनुभव है। पटना में हमारी एक ग्राहक थीं, जो पुराने हीरे के गहने बेचना चाहती थीं क्योंकि उन्हें लगता था कि वे नकली हैं। जब उन्होंने हमारी लैब में जांच करवाई, तो पता चला कि उनके सभी हीरे असली थे। वे शोरूम से संतुष्ट होकर गईं। अप्रत्यक्ष रूप से हमें भी एक संतुष्ट ग्राहक और मिला।
- **ज्वेलरी में हीरों का हिस्सा 12% है। इसे कैसे बढ़ाएंगे?**
सोलमेट कपल रिंग्स पेश की है। करोड़ों वर्ष पुराने हीरे को दो टुकड़ों में काटकर अंगूठियों की जोड़ी बनाई जाती है। बड़े हीरे वाली दुल्हन की उंगली पर चमकती है, जबकि उसी हीरे का छोटा सा हिस्सा दूल्हे की उंगली पर जगमगाता है। उम्मीद है यह युवा पीढ़ी के बीच लोकप्रिय होगी, जो नई शुरुआत को यादगार बनाना चाहते हैं।
- **आपका ब्रांड टियर 2, 3 शहरों में क्यों नहीं दिखता, जहां बैंकों ने कृषि आय को आकर्षित करने के लिए अपनी शाखाएं खोली हैं?**
आप कोई उदाहरण दे सकते हैं?
- **एमपी के हरदा जैसे शहर को लीजिए। दक्षिण के सहकारी बैंकों तक की शाखाएं हैं?**
मैं आपसे सहमत हूं। भारत में ऐसे कई शहर हैं जहां बैंकों ने अपनी पैठ बनाई है। हम अपेक्षाकृत नए हैं, फिर भी इन शहरों को योजना में शामिल किया है। हम जल्द ही वहां भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे।
- **लैब में बने हीरे (एलजीडी) उत्पाद के रूप में कहां खड़े हैं?**
भारतीय उपभोक्ता एलजीडी को प्राकृतिक हीरे के एक अतिरिक्त विकल्प के रूप में देखते हैं। जबकि अमेरिका में स्थिति अलग है। यही वजह है कि हम हर जगह डीएक्ससी ला रहे हैं, ताकि ग्राहक हीरे की सही कीमत अदा करें।

क्या आप जानते हैं?

1 नीले रंग की किरणें सिर्फ प्राकृतिक हीरे से निकलती हैं। कृत्रिम हीरे (एलजीडी) से नीले रंग को छोड़कर अन्य रंगों की किरणें निकलती हैं।

2 अंधेरे में कुदरती हीरा नहीं चमकता, जबकि एलजीडी की सीवीडी किस्म का हीरा रोशनी बंद होने के बाद थोड़ी देर के लिए चमकता है।

बिजनेस ब्रीफ

ग्रो ने नए ग्राहक जोड़ने में पूरी इंडस्ट्री को पीछे छोड़ा

मुंबई | देश की ब्रोकिंग इंडस्ट्री में ग्रो का दबदबा कायम है। एनएसई के आंकड़ों के मुताबिक, जनवरी 2026 में ग्रो ने अकेले 3.53 लाख नए ग्राहक जोड़े। यह पूरी ब्रोकिंग इंडस्ट्री की कुल नेट ग्रोथ (3.02 लाख) से अधिक है। अपस्टॉक्स ने इस माह 40 हजार ग्राहक गंवाए, जिससे यह चौथे से 5वें पायदान पर आ गया।

फर्म	ग्राहक	हिस्सेदारी
ग्रो	125	27.7%
जीरोधा	66.6	15.2%
एंजेल वन	67.4	15.0%
ICICI सिक्यु.	20.5	4.50%
अपस्टॉक्स	20.4	4.50%

ग्राहक लाख में, स्रोतः एनएसई

अंबुजा-सांघी इंडस्ट्रीज के विलय को कानूनी मंजूरी

मुंबई | अदाणी समूह की अंबुजा सीमेंट्स और सांघी इंडस्ट्रीज के विलय को राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) से मंजूरी मिल गई है। इस विलय से अंबुजा की उत्पादन क्षमता बढ़ेगी। पश्चिमी भारत में कंपनी की मौजूदगी मजबूत होगी। लागत दक्षता और लॉजिस्टिक्स तालमेल में सुधार की भी उम्मीद है।

मैरिको ने स्किनेटिक में 75% हिस्सेदारी खरीदी

नई दिल्ली | भारतीय एफएमसीजी कंपनी मैरिको वियतनाम की स्किनकेयर स्टार्टअप स्किनेटिक में 75% हिस्सेदारी खरीदेगी। अधिग्रहण के जरिये मारिको को डिजिटल-फर्स्ट स्किनकेयर ब्रांड 'कैंडिड' पर नियंत्रण और लग्जरी क्लिनिकल ब्रांड 'मुरड' के वियतनाम में एक्सक्लूसिव डिस्ट्रीब्यूशन हक मिलेंगे।

बीएसईः ऑप्शन ट्रेडिंग से मुनाफा 172% बढ़ा

मुंबई | बीएसई का दिसंबर तिमाही में मुनाफा 172% बढ़कर 603 करोड़ रुपए हो गया। डेरिवेटिव्स कारोबार में उछाल इसकी वजह रही। इक्विटी डेरिवेटिव्स सेगमेंट में ऑप्शंस का औसत दैनिक टर्नओवर दोगुना 210 लाख करोड़ हो गया। इससे ट्रांजैक्शन चार्ज से आय 86% बढ़कर 952 करोड़ रुपए हो गई।

भास्कर एनालिसिस | स्मॉलकैप 2.5%, मिडकैप 1.7% चढ़े

ट्रेड डील, बैंकिंग सेक्टर में मजबूती के दम पर सेंसेक्स फिर 84 हजार पार

कंपनियों का मार्केट कैप 6 लाख करोड़ रुपए बढ़ा

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

शेयर बाजार में सोमवार को तेजी रही। भारत-अमेरिका ट्रेड डील, मजबूत बैंकिंग सेक्टर और विदेशी निवेशकों की वापसी के बूते सेंसेक्स 485 अंक चढ़कर 84 हजार पार निकल गया। निफ्टी भी 173 अंकों की तेजी के साथ 25,867 पर बंद हुआ। इसके साथ ही बीएसई लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैप एक 6 लाख करोड़ बढ़कर 473 लाख करोड़ रुपए हो गया। जियोजित इन्वेस्टमेंट्स के रिसर्च हेड विनोद नायर ने कहा, 'निवेशक अब उन सेक्टरों में पैसा लगा रहे हैं जिन्हें बजट और ट्रेड डील से सीधा फायदा होने वाला है।' शुक्रवार को विदेशी निवेशकों ने 1,950 करोड़ रुपए की खरीदारी की। सेंसेक्स 0.58% ही चढ़ा, पर बीएसई के स्मॉलकैप इंडेक्स में 2.45% और मिडकैप इंडेक्स में 1.66% तेजी दर्ज की गई।

बैंकिंगः स्थिर आउटलुक, मुनाफे की उम्मीद में उछाल

- बाजार में तेजी का नेतृत्व बैंकिंग शेयरों ने किया। मूडीज ने भारत के बैंकिंग सिस्टम के लिए 'स्थिर' आउटलुक दिया। इस रिपोर्ट के मुताबिक, बैंकों का 'नॉन-परफॉर्मिंग लोन' अनुपात 2% से 2.5% के निचले स्तर पर बने रहने की उम्मीद है।
- बैंकों का 'रिटर्न ऑन एसेट्स' बढ़कर 1.2%-1.3% होने का अनुमान है। जमा लागत कम होने से बैंकों के प्रॉफिट मार्जिन में सुधार होगा। वित्त वर्ष 2026-27 में कर्ज देने की रफ्तार 11-13% के बीच रहने की संभावना है।
- रेटिंग एजेंसी इक्रा के अनिल गुप्ता के मुताबिक जोखिम आधारित जमा बीमा मानदंडों से मजबूत बैंकों के एसेट्स पर रिटर्न में 0.04% का सुधार हो सकता है। इसके चलते बैंकों की लाभप्रदता बढ़ेगी।

एक्सपर्ट व्यू | बाजार बड़े ब्रेकआउट की दहलीज पर... निफ्टी जल्द 26 हजार का स्तर टेस्ट करेगा

बाजार के जानकारों का मानना है कि निफ्टी अब एक बड़े ब्रेकआउट की दहलीज पर है। एसबीआई सिक्युरिटीज के सुदीप शाह के अनुसार,

'निफ्टी के लिए 25,970-26,000 का स्तर एक तत्काल बाधा है। इसके ऊपर टिकने पर बाजार 26,200 और 26,400 के स्तर तक जा सकता है। रेलिगेयर ब्रोकिंग के अजीत मिश्रा का भी मानना है कि निफ्टी जल्द ही 26,000 का स्तर दोबारा टेस्ट करेगा और एक निर्णायक ब्रेकआउट इसे नए रिकॉर्ड हाई पर ले जा सकता है।

टाटा ग्रुप के चेयरमैन का फोकस

टीसीएस को एआई पर जोर बढ़ाना होगाः चंद्रशेखरन

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन का मानना है कि टीसीएस को एआई अपनाने की गति और तेज करनी होगी। चंद्रशेखरन ने टीसीएस के कर्मचारियों से दैनिक कार्यों में एआई को शामिल करने, हालिया कमजोर प्रदर्शन पर विचार करने और टेक्नोलॉजी को तेजी से अपनाने पर फोकस करने को कहा।

चंद्रशेखरन दुबई में टीसीएस के आंतरिक वैश्विक नेतृत्व और रणनीति सम्मेलन, ब्लिट्ज में करीब 700 वरिष्ठ कर्मचारियों को संबोधित कर रहे थे। मामले से जुड़े लोगों के मुताबिक, टीसीएस में चंद्रशेखरन का दखल बढ़ रहा है। 2017 में टाटा संस का चेयरमैन बनने से पहले तक चंद्रशेखरन ने 2009 से टीसीएस का नेतृत्व किया था। अब वे 2026 की तकनीकी चुनौतियों के लिए फिर से आगे आए हैं। ऐसे समय में जब एआई स्थापित व्यापार मॉडलों के लिए खतरा बन रही है, उनका मकसद कंपनी को इस नाजुक दौर से उबारना और समूह के सबसे बड़े आय स्रोत को सुरक्षित रखना है।

ईपीएफओ • 100 डमी अकाउंट्स के साथ एप पर ट्रायल जारी

अब यूपीआई के जरिये निकाल सकेंगे पीएफ की रकम, अप्रैल में आएगा एप

एजेंसी | नई दिल्ली

ईपीएफओ के 8 करोड़ सब्सक्राइबर्स को एक बड़ी सुविधा मिलने जा रही है। अब आपको पीएफ से पैसे निकालने के लिए लंबे समय तक इंतजार नहीं करना होगा। ईपीएफओ एक नया मोबाइल एप्लिकेशन लॉन्च करने जा रहा है। इसके जरिये सदस्य सीधे यूपीआई पेमेंट गेटवे का इस्तेमाल करके बैंक खाते में पैसा ट्रांसफर कर सकेंगे। सूत्रों के मुताबिक, श्रम मंत्रालय एक विशेष प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है। इसके तहत ईपीएफ का एक निश्चित हिस्सा फ्रीज रखा जाएगा, जबकि एक बड़ा हिस्सा सदस्य अपने बैंक खाते में यूपीआई के जरिए निकाल सकेंगे। इस नई सेवा को इसी साल अप्रैल में बड़े स्तर पर लॉन्च किए जाने की तैयारी है।

भास्कर Q&A

- **कैसे काम करेगा सिस्टम?**
ईपीएफओ का नया एप खोलते ही बैलेंस दिखेगा, जिसे आप निकाल सकते हैं। यह भी पता चल जाएगा कि कितना पैसा आपके लिंक्ड बैंक खाते में ट्रांसफर हो सकता है। पैसे निकालने के लिए यूपीआई पिन इस्तेमाल करना होगा, जो बैंक खाते से जुड़ा है। यह ट्रांजैक्शन को तत्काल और सुरक्षित बनाएगा।
- **क्या यह एप बन चुका है?**
सूत्रों के मुताबिक सिस्टम में कोई गड़बड़ी न हो, इसके लिए ईपीएफओ अभी 100 डमी खातों के साथ ट्रायल कर रहा है।
- **कितना पैसा निकाल सकेंगे?**
हाल ही में सरकार ने ऑटो-सेटलमेंट की सीमा 1 लाख से बढ़ाकर 5 लाख रुपए कर दी है। बीमारी, बच्चों की शिक्षा, शादी या घर बनाने जैसे काम के लिए अब 5 लाख तक का क्लेम तेजी से प्रोसेस होगा। अगर आप पोर्टल या उमंग एप इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो ये विकल्प भी खुले रहेंगे।
- **इसकी जरूरत क्यों पड़ी?**
अभी पीएफ से पैसा निकालने की प्रक्रिया थकाऊ है। उमंग एप या यूएएन पोर्टल पर जाकर फॉर्म भरना पड़ता है। ऑटो-सेटलमेंट में 3 दिन लगते हैं। नए एप से ये परेशानियां दूर होंगी।
- **दुकान पर 'स्कैन पे' होगा?**
ईपीएफओ के पास बैंकिंग लाइसेंस नहीं है, इसलिए आप पीएफ बैलेंस से सीधे किसी दुकान पर क्यूआर कोड स्कैन करके पेमेंट नहीं कर पाएंगे।

सराफा बाजार में खरीदारी शुरू

डॉलर में कमजोरी से सोने के दाम ₹2,798, चांदी के ₹8,736 बढ़े

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

सोमवार को वीकेंड के बाद कमोडिटी मार्केट खुलते ही सोने-चांदी की कीमतों में तेजी देखी गई। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, डॉलर इंडेक्स में गिरावट और घटे भाव पर खरीदारी निकलने से कीमतों में तेजी देखी गई। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स (आईबीजेए) के आंकड़ों के मुताबिक, सोने की

कीमत शुक्रवार के बंद भाव 1,51,469 रुपए से 4,124 रुपए बढ़कर 1,55,593 रुपए प्रति 10 ग्राम पर खुली। हालांकि शाम को यह बढ़त 2,798 रुपए रह गई और सोना 1,54,876 रुपए पर बंद हुआ। जेवराती यानी 22-कैरेट सोना शुक्रवार के 1,39,303 रुपए के मुकाबले सोमवार को 1,41,866 रुपए पर बंद हुआ। चांदी की कीमत भी शुक्रवार के बंद भाव 2,44,929 रुपए के मुकाबले सोमवार को 8,736 रुपए बढ़कर 2,53,665 रुपए प्रति किलो पर बंद हुई। यह 2,61,755 रुपए पर खुली थी।

सर्वे • लेबर कोड से सकारात्मक बदलाव की उम्मीद

66 फीसदी कामगारों को रोजगार की शर्तें अब स्पष्ट होने का भरोसा

भास्कर न्यूज़ | नई दिल्ली

देश में लागू की गई चार श्रम संहिताओं को लेकर कामगारों और नियोक्ताओं दोनों के बीच शुरुआती स्तर पर सकारात्मक धारणा उभर कर सामने आई है। वीवी गिरी नेशनल लेबर इंस्टीट्यूट, नोएडा के एक सर्वे में शामिल करीब 60 फीसदी कामगारों का मानना है कि श्रम संहिताओं के लागू होने से कार्य परिस्थितियों में सुधार होगा। 64 फीसदी कामगारों को कार्यस्थल पर शिकायत निवारण तंत्र की जानकारी है। 63 फीसदी मानते हैं कि अनिवार्य सुरक्षा उपायों से हालात बेहतर होंगे। 66 फीसदी महिला कामगारों के मुताबिक सुरक्षा, परिवहन और निगरानी से जुड़े प्रावधानों से उन्हें अधिक संरक्षण मिलेगा। 64 फीसदी कामगारों को भरोसा है कि न्यूनतम वेतन और समय पर वेतन भुगतान जैसे प्रावधानों से आय सुरक्षा बेहतर होगी। 66 फीसदी का मानना है कि रोजगार की शर्तें और नियम अधिक स्पष्ट होंगे। 60 फीसदी को नौकरी की सुरक्षा बढ़ने की उम्मीद है।

73% नियोक्ताओं को भी पहले से बेहतर अनुपालन की उम्मीद

73 फीसदी नियोक्ताओं का मानना है कि श्रम संहिताएं लंबे समय में अनुपालन को सरल

बनाएंगी। 76 फीसदी का कहना है कि से बिजनेस की स्थिरता में बढ़ोतरी होगी। 64 फीसदी फिक्स्ड-टर्म एम्प्लॉयमेंट को विस्तार और रोजगार सृजन के लिए उपयोगी मानते हैं। इंस्पेक्टर-राज की जगह इंस्पेक्टर-कम-फैसिलिटेटर मॉडल को 74 फीसदी नियोक्ताओं ने बेहतर बताया।

टोक्यो में खुला दुनिया का पहला आउटडोर पोकेमोन पार्क टिकट 14 हजार रुपए, अप्रैल तक के सभी टिकट बिके

टोक्यो | यह तस्वीर जापान में खुले दुनिया के पहले आउटडोर पोकेमोन पार्क की है। अप्रैल की शुरुआत तक के सभी प्री-सेल टिकट बिक चुके हैं। 2.6 हेक्टेयर में फैले इस पार्क में 600 से ज्यादा पोकेमोन देखने को मिलेंगे। दो मुख्य राइड्स 'पिका पिका पैराडाइज' और 'वी वी वोयाज' हैं। टिकट 4,700 रुपए से 14 हजार तक हैं।

बिजनेस एंकर | दिलचस्प कानूनी बहस, वास्तव में खेल किसे माना जाए और जुआ किसे...

अमेरिका में खेल सट्टेबाजी का बाजार 20 लाख करोड़ का, इस पर कब्जे को लेकर प्रिडिक्शन मार्केट, कसीनो इंडस्ट्री आमने-सामने

© The New York Times
दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

न्यूयॉर्क | अमेरिका में खेलों से जुड़े सट्टे और अनुमानों का बाजार अब सिर्फ कमाई तक सीमित नहीं है। कानूनी वर्चस्व की लड़ाई में बदल चुका है। एक तरफ पारंपरिक कसीनो और स्पोर्ट्स बेटिंग कंपनियां हैं, तो दूसरी ओर कलशी और पॉलीमार्केट जैसे प्रिडिक्शन मार्केट प्लेटफॉर्म। अमेरिका में हर साल खेलों पर करीब 20 लाख करोड़ रुपए के दांव लगाए जाते हैं। हाल ही में हुए सुपर बाउल एलएक्स में ही लगभग 16 हजार करोड़ रुपए की सट्टेबाजी हुई। इस बढ़ते बाजार ने फैनड्यूएल, ड्राफ्टकिंग्स और बेटएमजीएम जैसी कंपनियों के बीच जबरदस्त प्रतिस्पर्धा पैदा कर दी है।

दुनिया के टॉप-4 इवेंट्स, जिन पर लगता रहा है सबसे ज्यादा दांव

इवेंट का नाम	सालाना सट्टा (अनुमानित)	सबसे ज्यादा दांव
सुपर बाउल	16,317 करोड़ रु. (एक वीकेंड)	अमेरिका, कनाडा, मेक्सिको
फीफा वर्ल्ड कप	13.60 लाख करोड़ रु. (पूरा टूर्नामेंट)	यूरोप, द.अमेरिका, एशिया
आईपीएल	10.88 लाख करोड़ रु. (प्रति सीजन)	भारत, यूके, यूएई
मार्च मैडनेस	90,650 करोड़ रुपए (बास्केटबॉल)	केवल अमेरिका

दांव पर लगने वाली रकम में तेज उछाल ने फैनड्यूएल, ड्राफ्टकिंग्स और बेटएमजीएम जैसी साइटों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। ये साइटें शीतकालीन ओलंपिक में कौन सा देश सबसे अधिक पदक जीतेगा से लेकर मास्टर्स गोल्फ टूर्नामेंट कौन जीतेगा, जैसे हर चीज पर दांव लगाती हैं। लेकिन पारंपरिक जुआ कंपनियों को कलशी और पॉलीमार्केट जैसे प्रिडिक्शन मार्केट (पूर्वानुमान बाजारों) से कड़ी चुनौती मिल रही है। ये पारंपरिक सट्टा कारोबार को प्रभावित कर रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार, ये बाजार हर साल खेल सट्टेबाजी कंपनियों से करीब 72 हजार करोड़ रुपए के दांव बटोर लेते हैं। कसीनो उद्योग इन्हें बंद कराने के लिए लॉबिंग कर रहा है। अदालतों में मुकदमों की बाढ़ आ गई है। इस मामले में अमेरिका के अलग-अलग राज्यों के अलग-अलग कानून और पेचीदगी पैदा कर रहे हैं। अब यह इस बात पर कानूनी विवाद में बदल गई है कि वास्तव में खेल और जुआ किसे माना जाए। कलशी और पॉलीमार्केट का कहना है कि उनके अनुमान का बाजार जुआ कानूनों और टैक्स के दायरे में नहीं आते। उनका तर्क है कि उनके एप के जरिये लगाए गए दांव (बेटिंग) कसीनो में लगाए गए दांव (गैम्बलिंग) से अलग हैं। इसीलिए उनके बिजनेस गैंबलिंग टैक्स या नियमों के अधीन नहीं हैं। अब तक 39 राज्यों और वाशिंगटन डीसी में खेलों पर सट्टेबाजी को कानूनी मान्यता मिल चुकी है। लेकिन पूर्वानुमान-बाजार साइटें उन राज्यों में भी सट्टे की सुविधा देती हैं जहां खेलों पर सट्टेबाजी गैर-कानूनी है। अब गैंबलिंग एप्स भी प्रिडिक्शन प्रोडक्ट लॉन्च कर रहे हैं।

आईबीएम इंडिया के एमडी ने जताई चिंता

एआई में डेटा स्टोर से ज्यादा गंभीर मसला इस पर नियंत्रण

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

एआई में अब सिर्फ यह देखना काफी नहीं है कि डेटा भारत में स्टोर है या किसी अन्य देश में।

ज्यादा अहम यह हो गया है कि उस डेटा से बनने वाले एआई मॉडल, फैसले और नतीजों पर किसका नियंत्रण है। आईबीएम इंडिया के एमडी संदीप पटेल के मुताबिक, एआई ने डेटा की वैल्यू और गवर्नेंस, दोनों को नया मतलब दिया है। पहले डेटा स्टोरेज पर जोर था, लेकिन अब भरोसा बनाए रखने और डेटा से होने वाला फायदा देश में ही रखने के लिए गवर्नेंस पर नियंत्रण भी स्थानीय होना जरूरी है।

अब तीन स्तरों पर सॉवरेन्टी का ध्यान रखना जरूरी

आईबीएम की रिपोर्ट के मुताबिक, कंपनियों को तीन स्तरों पर सॉवरेन्टी पर ध्यान देना चाहिए- डेटा सॉवरेन्टी, टेक्नोलॉजी सॉवरेन्टी और ऑपरेशनल सॉवरेन्टी। मतलब ओपन, पारदर्शी सिस्टम अपनाए जाएं, किसी एक टेक्नोलॉजी पर निर्भरता न हो और बाहरी दखल से बिजनेस प्रभावित न हो।

कल्याण ज्वेलर्सः शेयर में हेरफेर के शक की जांच

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) ने कल्याण ज्वेलर्स से कथित मार्केट मैनिपुलेशन (शेयर में हेरफेर) की मीडिया रिपोर्ट्स पर स्पष्टीकरण मांगा है। कंपनी ने बाजार नियामक सेबी को पत्र लिखकर अपने शेयर में अनियमित और मैनिपुलेटिव ट्रेडिंग की शिकायत की है। वायदा ट्रेडिंग पर अस्थायी रोक लगाने की मांग भी की है, जब तक जांच पूरी नहीं हो जाती। एनएसई ने सोमवार को एक्सचेंज क्वेरी जारी की, जिसमें कंपनी से इन आरोपों और एफएंडओ सस्पेंशन की मांग पर जवाब तलब किया गया है। कंपनी का जवाब अभी नहीं आया है। बीएसई ने भी इसी तरह का स्पष्टीकरण मांगा है। कंपनी ने अभी कोई विस्तृत आधिकारिक बयान भी जारी नहीं किया है।

कल्पमेधा

युवा पीढ़ी को इस काबिल बनाना कि वह जीवन भर अपने आप को प्रशिक्षित करती रहे, यही शिक्षा का असली उद्देश्य है।
– रोबर्ट मेनार्ड हुत्चिंस

हादसे के जिम्मेदार

किसी भी तरह के हादसे के बाद यह मान लिया जाता है कि इसकी वजह किसी की चूक या फिर कोई तकनीकी गड़बड़ी होगी और जांच का सिरा भी आमतौर पर इसी दिशा में आगे बढ़ता है। अगर कोई मामला तूल पकड़ लेता है, तब सरकार की ओर से कार्रवाई के नाम पर निचले स्तर के कुछ लोगों को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की जाती है और इसके लिए जिम्मेदार उच्च अधिकारियों या अन्य लोगों को प्रकारांतर से बख्श दिया जाता है। यह बेवजह नहीं है कि हादसे के मूल कारण बने रह जाते हैं और कुछ समय बाद फिर उसी तरह की घटना सामने आती है। हरियाणा के फरीदाबाद में सूरजकुंड मेले में जिस तरह एक विशाल झूले के टूट जाने से एक पुलिस निरीक्षक की जान चली गई और बारह अन्य लोग घायल हो गए, वह प्रशासनिक स्तर पर बरती गई घोर लापरवाही का एक और उदाहरण है। झूले पर गए लोगों ने यह सोचा भी नहीं होगा कि मनोरंजन के बजाय एक घातक हादसे का खतरनाक अनुभव उनकी जेहन में लंबे समय तक के लिए घर बना लेगा। हादसे के बाद झूला संचालक और एक अन्य कर्मचारी को गिरफ्तार किया गया, लेकिन क्या इस तरह नाममात्र के लिए की गई कार्रवाई यह सुनिश्चित कर सकता है कि भविष्य में ऐसा हादसा नहीं होगा?

ऐसा लगता है कि उदासीनता और लापरवाही सरकारी महकमों की कार्यशैली बन चुकी है। आमतौर पर निचले स्तर के कुछ आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करके मामले का हल मान लिया जाता है और शायद ही कभी हादसों के वास्तविक जिम्मेदार लोगों को कठघरे में लाया जाता है। नतीजतन, हादसे एक सिलसिले की तरह कायम रहते हैं। सूरजकुंड मेले में जो झूला टूटा, निश्चित रूप से चलाने के पहले उसकी जरूरी जांच में लापरवाही बरती गई होगी और किसी तकनीकी खामी को नजरअंदाज किया गया होगा। सवाल है कि किसी भी झूले के संचालन से पहले हर स्तर पर उसकी पुख्ता सुरक्षा जांच में खरा उतरने के बाद ही उसे चलाने की इजाजत देने के लिए क्या सरकार की ओर कोई तंत्र गठित किया गया है। मेले के आयोजन की इजाजत देते हुए उसमें होने वाली गतिविधियों का पूरी तरह सुरक्षित संचालन सुनिश्चित करना किसकी जिम्मेदारी थी? क्या सरकार ने इसके लिए जवाबदेह किसी उच्च स्तर के अधिकारी को भी कार्रवाई के दायरे में लाने की कोशिश की?

अब मामले की गंभीरता के मद्देनजर एक विशेष जांच टीम (एसआइटी) का गठन किया गया है। जांच के दायरे में झूला लगाने, उसका रखरखाव, निरीक्षण और संचालन से जुड़े लोगों से पूछताछ हो सकती है। मगर इस तरह की जांच के निष्कर्ष इस बात पर निर्भर करते हैं कि इसके लिए तकनीकी प्रमाणपत्र जारी करने वाले अधिकारी से पूछताछ, झूले के सभी कल-पुर्जों के सही होने की रपट और सुरक्षा मानकों के अनुपालन से जुड़े दस्तावेजों की पड़ताल में कितनी पारदर्शिता बरती जाएगी और असली दोषियों को कानून के कठघरे में लाने को लेकर कितनी ईमानदार इच्छाशक्ति दिखाई जाएगी। जब भी कोई हादसा होता है या किसी की लापरवाही की वजह से कुछ लोगों की जान चली जाती है, तब सरकार की ओर से उदासीन रवैया अपनाया जाता है। जबकि अगर इसकी जड़ में जाकर वास्तविक दोषियों का पता लगाया जाए और कार्रवाई का सिरा उन तक भी पहुंचे, तब इस बात की संभावना बन सकती है कि अगले आयोजन सुरक्षित हो सकेंगे।

तकनीक का जाल

आधुनिक तकनीक के रूप में मोबाइल या स्मार्टफोन जितना उपयोगी साबित हुआ है, उसके समांतर अब उसके ऐसे खमियाजे भी सामने आ रहे हैं, जो कई बार व्यक्ति को बहुस्तरीय मानसिक परेशानियों के संजाल में फंसा लेते हैं, तो कभी वह उस चक्र में फंस कर अपनी जान भी गंवा बैठता है। स्मार्टफोन में कोई गेम खेलते हुए बच्चों के आत्महत्या कर लेने की खबरें अक्सर सामने आती रही हैं। मगर इसके अलावा आजकल सोशल मीडिया के अलग-अलग मंचों पर संक्षिप्त वीडियो या रील बना कर प्रसारित करने की प्रवृत्ति जिस तेजी से बढ़ती देखी जा रही है, उसने एक नई चिंता पैदा की है। हालत यह है कि सोशल मीडिया पर ज्यादा से ज्यादा लोगों तक अपनी बात या किसी मनोरंजक गतिविधि को पहुंचाने के लिए लोग अजीबोगरीब तरीके भी अपनाने लगे हैं। इस क्रम में सामग्री तैयार करने के लिए वे किसी तरह के औचित्य के प्रश्न से नहीं जूझते, बल्कि उनके दिमाग में सिर्फ लोकप्रिय होने या ज्यादा से ज्यादा दर्शक हासिल करने की बात हावी रहती है।

गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में एक महिला अपने घर में साड़ी से फंदा बना कर लटक गई, जिससे उसका गला कस गया और आखिर उसकी जान चली गई। खबरों के मुताबिक, वह सिर्फ दिखाने के लिए रील बनाने की कोशिश कर रही थी। हाथ में स्मार्टफोन होने और उसके इस तरह के इस्तेमाल की यह अति है कि कोई सिर्फ शौक और लापरवाही की वजह से अपनी जान गंवा बैठे। रील बनाने के क्रम में हादसे का शिकार होकर मौत की घटनाएं पहले भी सामने आ चुकी हैं, जो लोगों के बीच चर्चा और चिंता का कारण बनीं। ऐसे किसी हादसे का सबक यह होना चाहिए था कि लोग इस तरह के बेलगाम मनोभाव का शिकार न हों। मगर विडंबना यह है कि पिछले कुछ समय से स्मार्टफोन से रील बनाने का शौक अब विवेक और सुरक्षा के तमाम तकाजों को धता बताने की ओर बढ़ता लग रहा है। केवल दिखावे के लिए आधुनिक तकनीक हासिल करना एक बात है और विवेक तथा उचित प्रशिक्षण के साथ उसका उपयोग करना दूसरी बात। स्मार्टफोन में रील देखने से लेकर बनाने के संजाल में गुम होने के दूरगामी नुकसान अब सामने आने लगे हैं।

सुरक्षा कवच सशक्त बनाने की कोशिश

इस बार के आम बजट में रक्षा क्षेत्र के लिए आबंटन में पिछले वर्ष की तुलना में करीब 15 फीसद की बढ़ोतरी की गई है। इससे निश्चित रूप से सेना को आधुनिकीकरण के जरिए सशक्त बनाने के प्रयासों को बल मिलेगा।

नंदकिशोर सोमानी

वर्ष 2026-27 के आम बजट में रक्षा क्षेत्र को बड़ी सौगात मिली है। इस क्षेत्र के लिए 7.8 लाख करोड़ रुपए का आबंटन किया गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में करीब 15 फीसद अधिक है। पिछले वर्ष रक्षा क्षेत्र के लिए 6.81 लाख करोड़ रुपए का आबंटन किया गया था। पिछले कुछ वर्षों में संभवतः यह पहला अवसर है, जब रक्षा क्षेत्र के लिए आबंटन में इतनी बड़ी वृद्धि की गई है। इस बजट की खास बात यह है कि सेना के आधुनिकीकरण के लिए 2.19 लाख करोड़ रुपए अलग से रखे गए हैं। माना जा रहा है कि यह पैसा नई मिसाइलों, लड़ाकू विमानों, पनडुब्बियों और ड्रोन की खरीद पर खर्च किया जाएगा। पिछले बजट में रक्षा क्षेत्र के आधुनिकीकरण के लिए 1.80 लाख करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया था। सरकार ने देश को रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए आयात घटाने के साथ-साथ शोध एवं विकास को बढ़ावा देने की दिशा में जो पहल की थी, बजट में उसकी छाप भी साफ तौर पर देखी जा सकती है।

समुद्री और जमीनी सीमाओं पर बढ़ती चुनौतियों के बीच सामरिक जरूरतों की लिहाज से यह उम्मीद की जा रही थी कि बजट में रक्षा क्षेत्र के लिए कुछ खास प्रावधान किए जा सकते हैं। इस बजट में किए गए प्रावधानों से साफ है कि भू-राजनीतिक परिदृश्य में हो रहे परिवर्तनों के दृष्टिगत भारत अपनी सुरक्षा तैयारियों के प्रति कितना गंभीर है। इसके अतिरिक्त पिछले छह-सात वर्षों से जिस तरह से रक्षा बजट में लगातार वृद्धि हुई है, उससे स्पष्ट है कि भारत रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता एवं निर्यात को बढ़ावा देने के दोहरे उद्देश्य के साथ आगे बढ़ रहा है। जैसे-जैसे देश में आधुनिक रक्षा प्रौद्योगिकी का विस्तार हो रहा है, उससे उत्पादन और गुणवत्ता की क्षमता में इजाफा होने के साथ ही रक्षा निर्यात में भी धीरे-धीरे बढ़ोतरी हो रही है।

वर्ष 2020 में संसद की एक समिति ने रक्षा क्षेत्र की जरूरतों को ध्यान में रखकर बजट का आबंटन न किए जाने को लेकर सरकार की आलोचना की थी। इसके बाद से रक्षा क्षेत्र के बजट में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। पिछले पांच वर्षों के बजट पर नजर डालें तो सकल रक्षा बजट (बीई) में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2021-22 में 4.78 लाख करोड़, 2022-23 में 5.25 लाख करोड़, 2023-24 में 5.94 लाख करोड़, 2024-25 में 6.22 लाख करोड़ रुपए और 2025-26 में 6.81 लाख करोड़ के रुपए का आबंटन रक्षा क्षेत्र के लिए किया गया है। पिछले एक दशक में भारत एशिया-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा सैन्य खर्च करने वाला देश बन गया है। बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों में भारत की सुरक्षा चिंताओं की लिहाज से यह जरूरी भी था।

गौरतलब है कि चीन लगातार अपनी सेनाओं का आधुनिकीकरण कर रहा है। वह रोबोट सेना और मानव रहित वाहन जैसे विकल्पों को अपना रहा है। अमेरिका के बाद चीन दूसरा ऐसा देश है, जो रक्षा क्षेत्र पर सबसे ज्यादा खर्च करता है। उसने वर्ष 2025-26 के बजट में रक्षा क्षेत्र में 7.2 फीसद का इजाफा कर 1.81 ट्रिलियन युआन (करीब 249 बिलियन डालर) का आबंटन किया था, जो भारत के रक्षा बजट से चार गुना अधिक है। इस मामले में चीन के बाद रूस का स्थान है। भारत रक्षा क्षेत्र में खर्च के मामले में दुनिया का चौथा बड़ा देश बन गया है और अपनी तीनों सेनाओं के आधुनिकीकरण की दिशा में प्रयासरत है। ऐसे में रक्षा मंत्रालय के लिए पर्याप्त बजट की मांग उठ रही थी। अभी भारत अपनी जीडीपी का लगभग दो फीसद रक्षा क्षेत्र में खर्च करता है, जबकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह कम से कम तीन फीसद होना चाहिए। अमेरिका अपनी कुल जीडीपी का चार फीसद, जबकि चीन जीडीपी का तीन फीसद रक्षा पर खर्च करता है। हालांकि, भारत के रक्षा मंत्रालय को आपातकालीन खरीद के लिए धनराशि के विशेष आबंटन का प्रावधान है, जिसके जरिए वह बजट के अतिरिक्त भी धन खर्च कर सकता है।

> **इस बार के आम बजट में सीमावर्ती इलाकों में ढांचागत सुधार पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। इसके लिए सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) को सात हजार करोड़ रुपए से अधिक आबंटित किए गए हैं, जो पिछले वर्ष की तुलना में कहीं अधिक है। भारत, चीन के साथ तीन हजार से अधिक किमी सीमा साझा करता है। ऐसे में बीआरओ की ओर से यहां कई तरह के निर्माण कार्यों की योजना बनाई गई है। खासतौर से लद्दाख में न्योमा एअर फील्ड का विकास, अंडमान-निकोबार द्वीप में स्थायी पुल संपर्क, हिमाचल प्रदेश में शिकू ला सुरंग और अरुणाचल प्रदेश में नेचिफू सुरंग सहित अन्य परियोजनाओं को विकसित किए जाने की योजना है।**

भारतीय रक्षा मंत्रालय के पास इस समय कई ऐसी बड़ी परियोजनाएं हैं, जो हमारी सेना की ताकत को कई गुना बढ़ा देंगी। मौजूदा बजट में 26 अतिरिक्त राफेल-एम लड़ाकू विमानों के सौदे को अंतिम रूप मिलने की उम्मीद है। साथ ही प्रोजेक्ट-751 के तहत छह नई स्टील्थ पनडुब्बियों का निर्माण शुरू होगा, जो पानी के नीचे लंबे समय तक छिपकर वार करने वाली एआइपी तकनीक से लैस होंगी। वायु सेना के लिए तेजस लड़ाकू विमान के उत्पादन में तेजी लाई जाएगी। इसके अलावा, एलसीएच प्रचंड हेलिकाप्टर, ब्रह्मोस मिसाइल के उन्नत संस्करण तैयार करने और रूस से मिलने वाली एस-400 वायु रक्षा प्रणाली की अगली खेप के लिए रास्ता खुल सकेगा। डोकलाम विवाद और आपरेशन सिंदूर के बाद चीन तथा पाकिस्तान के मोर्चे पर भारत को और ज्यादा सतर्क एवं सशक्त होने की जरूरत है। इसके अलावा भारत को आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए भी प्रभावी रणनीतिक प्रयास करने होंगे। सीमावर्ती राज्यों में कई चरमपंथी संगठन सक्रिय हैं। ऐसे में भारत ने भी दुनिया के दूसरे देशों की तरह सेना के आधुनिकीकरण तथा परंपरागत शस्त्रों के बजाय भविष्य की तकनीक को ध्यान में रखते हुए निवेश करने की जो योजना शुरू की है, जिसके आने वाले दिनों में सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे।

इस बार के आम बजट में सीमावर्ती इलाकों में ढांचागत सुधार पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। इसके लिए सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) को सात हजार करोड़ रुपए से अधिक आबंटित किए गए हैं, जो पिछले वर्ष की तुलना में कहीं अधिक है। भारत, चीन के साथ तीन हजार से अधिक किलोमीटर सीमा साझा करता है। ये सीमा जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश से होकर गुजरती है। ऐसे में बीआरओ की ओर से यहां कई तरह के निर्माण कार्यों की योजना बनाई गई है। खासतौर से लद्दाख में न्योमा एअर फील्ड का विकास, अंडमान-निकोबार द्वीप में स्थायी पुल संपर्क, हिमाचल प्रदेश में शिकू ला सुरंग और अरुणाचल प्रदेश में नेचिफू सुरंग सहित अन्य परियोजनाओं को विकसित किए जाने की योजना है। ये परियोजनाएं सामरिक दृष्टि से विशेष महत्त्व रखती हैं। बजट में बड़ी धनराशि का आबंटन किए जाने से बीआरओ को इन परियोजनाओं को पूरा करने में मदद मिलेगी।

सेना के आधुनिकीकरण के लिए रक्षा खरीद में 75 फीसद से ज्यादा सामान भारतीय कंपनियों से लेने की नीति को आगे बढाया जा रहा है, जिससे घरेलू रक्षा उद्योग को मजबूती मिलेगी और आयात पर निर्भरता भी कम होगी। एक समय हम अपनी सुरक्षा के लिए दूसरे देशों पर निर्भर थे, लेकिन आज भारत दुनिया के कई देशों को हथियार बेच रहा है। कुल मिलाकर कहा जाए, तो वर्ष 2026-27 के आम बजट में रक्षा क्षेत्र के लिए आबंटन में जो इजाफा किया गया है, वह बहुत ज्यादा नहीं, तो कम भी नहीं है। इससे सेना के आधुनिकीकरण और मजबूती की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को निश्चित रूप से बल मिलेगा।

रफ्तार का जीवन

दुनिया मेरे आगे

तनुजा चौबे

देश की सबसे मजबूत इकाई युवा पीढ़ी है, जिसकी सक्रियता, चिंतनशीलता और भावनात्मक समझ ही देश का भविष्य निर्धारित करती है। युवा पीढ़ी की रफ्तार का वेग बहुत प्रबल है। लगातार प्रतिद्वंद्विता और प्रत्याशा के कारण खुद को बेहतर रूप में प्रस्तुत करने का मानसिक दबाव उन्हें विचलित कर देता है और मन में सुरक्षा की कमी उत्पन्न कर देता है। आधुनिक युग में प्रवेश ने उन्हें आत्मविश्वास दिया है, लेकिन करिअर, रिश्तों और सामाजिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाना उनके लिए मुश्किलें खड़ी कर रहा है। सोशल मीडिया के मंचों पर हर अभिव्यक्ति को साझा करने की आदत ने अवसर तो दे दिया है, लेकिन सामाजिक मानदंडों के कारण तुलना की प्रवृत्ति भी विकसित हो गई है। इसके कारण उन्हें थोड़ी हताशा और निराशा भी होती है और जीवन मार्ग असमंजस में पड़ जाता है। उनके आत्म-मूल्य अब सोशल मीडिया की पसंदगी के चटके या फिर 'फालो' करने वालों तक सिमट कर रह गए हैं।

मानसिक रूप से विकसित यह पीढ़ी उलझन में उलझ जाती है। कई सवाल ऐसे होते हैं, जिनका जवाब नहीं मिलता। सुनने और समझने के लिए भी कोई उपस्थित नहीं होता। कई बार वे संवाद या अन्य माध्यम से बात करने की कोशिश करते हैं, पर वास्तविक मानवीय संवाद नहीं मिलता। आज के बच्चे और युवा अब संवाद के लिए डिजिटल माध्यमों की ओर अधिक झुक गए हैं। वे अपने प्रश्नों, उलझनों और जिज्ञासाओं के उत्तर पाने के लिए 'चैटजीपीटी' जैसे मंच और अन्य डिजिटल साधनों से संवाद करने लगे हैं, क्योंकि वहां उन्हें तुरंत उत्तर तो मिल जाते हैं, पर मानवीय संवेदना का स्पर्श आमतौर पर अनुपस्थित रहता है। यह भावनात्मक थकान उनकी मानसिक स्थिति को प्रभावित करने लगती है।

> **तकनीकी संसाधनों के कारण युवा वर्ग के पास जानकारी तो बहुत है, लेकिन वे संवेदनात्मक और भावनात्मक संचार से दूर हो गए हैं। इसका प्रभाव उनकी सृजनात्मक क्षमता पर पड़ता है। सभी दुष्प्रभाव जानने के बावजूद उन्हें उपदेश नहीं दिया जा सकता। केवल सहानुभूति दिखाकर, उन्हें समझकर संवाद करना ही प्रभावी होता है।**

आधुनिक संसाधनों के कारण युवा वर्ग के पास जानकारी तो बहुत है, लेकिन वे संवेदनात्मक और भावनात्मक संचार से दूर हो गए हैं। इसका प्रभाव उनकी सृजनात्मक क्षमता पर पड़ता है। सभी दुष्प्रभाव जानने के बावजूद उन्हें उपदेश नहीं दिया जा सकता। केवल सहानुभूति दिखाकर, उन्हें समझकर संवाद करना ही प्रभावी होता है। जब वे समझ जाएं, तो उनकी ऊर्जा प्रगति के मार्ग पर लग जाती है। युवा मन स्थिर नहीं है और अप्रत्यक्ष मार्ग पर चल रहा है। विकल्प बहुत हैं, इसलिए वैकल्पिक भ्रम भी बना रहता है। प्रतिद्वंद्विता में खुद को सिद्ध करने का प्रयास और सामाजिक तुलना में स्वयं को सिद्ध करने की प्रवृत्ति उन्हें चिड़चिड़ा बना देती है। धैर्य की कमी और त्वरित निर्णय, जो कभी-कभी सही नहीं होते, उन्हें अनजान रास्तों पर ले जाते हैं। मंजिल नहीं मिलने पर हताशा होती है।

आत्म-चिंतन से आत्म-संघर्ष उत्पन्न होता है, जो उनके लिए लगातार चुनौती बनता जा रहा है। युवा पीढ़ी की स्थिति गंभीर सामाजिक मुद्दा बन गई है। उनकी क्षमताएं असीम हैं और उन्हें समझ, संवेदना और भावनात्मक मार्गदर्शन की आवश्यकता है। अगर उन्हें विश्वास, सहयोग और संसाधनों के माध्यम से मार्गदर्शन मिले, तो उनकी अत्यधिक विकसित मानसिक क्षमता राष्ट्र की सशक्त युवा शक्ति में परिवर्तित हो सकती है।

डिजिटल माध्यमों में व्यस्त रहना, रात में देर तक जागना, सुबह देर से उठना या अंतरराष्ट्रीय कंपनियों में काम करने के बाद रात में जागकर दिन में सोना, इन सबका प्रभाव उनकी दिनचर्या पर पड़ता है। इसलिए युवाओं को चाहिए कि वे अपनी दिनचर्या में संतुलन बनाएं। उन्हें देरी और संयम से, पारिवारिक मूल्य और अपने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की चिंता के प्रति जागरूक करना बहुत आवश्यक है। वर्तमान में युवा अंधाधुंध भाग रहे हैं और कभी-कभी अपनी योग्यता का सही दिशा में उपयोग नहीं कर पाते। ऐसा नहीं है कि उनमें क्षमता नहीं है। बहुत अधिक योग्य होने के बावजूद, उनका मस्तिष्क कभी-कभी गलत दिशा में सक्रिय हो जाता है। मस्तिष्क जितना अधिक सक्रिय होता है, उसे उतनी ही अधिक मानसिक खुराक की आवश्यकता होती है। इसे वे रचनात्मक चीजों की ओर मोड़कर नया आकार देने का प्रयास कर सकते हैं। अगर युवा अपने समय और ऊर्जा का सही प्रयोग करें, तो उनकी क्षमता न केवल व्यक्तिगत विकास, बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति में भी योगदान दे सकती है।

पहले के समय में उपवास केवल शरीर को विषरहित करने का साधन नहीं था, बल्कि इसे आध्यात्मिक दृष्टि से भी देखा जाता था। यह शरीर और मन दोनों को संतुलित रखने का तरीका था। आजकल के युवा न तो आध्यात्मिकता को अपनाते हैं और न ही उन्हें पूजा-पाठ और संस्कारों का अनुभव मिल रहा है। आधुनिक दिखावे या आधुनिक जीवन शैली के कारण वे अपने मूल जड़ों से दूर हो गए हैं। ऋषि-मुनियों के देश में, जहां ध्यान और योग के माध्यम से स्वयं को स्वस्थ रखा जाता था, आजकल युवा कृत्रिम औषधियों और पोषण-साधनों से शरीर बनाने की कोशिश कर रहे हैं। यह उन्हें प्राकृतिक जीवनशैली और प्राकृतिक साधनों से दूर कर रहा है। प्राकृतिक चीजों से दूरी, उनके तन-मन के लिए हानिकारक है। ऐसे में उनकी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की वास्तविक देखभाल नहीं हो पा रही है और उनकी जीवनशैली असंतुलित होती जा रही है। दूसरी ओर, आज की युवतियां अपने शारीरिक सौंदर्य के लिए तरह-तरह की औषधियां और साज-सज्जा संबंधी पदार्थों का उपयोग कर रही हैं। इसके कारण त्वचा संबंधी रोग, गर्भाशय का कैंसर और अन्य प्रकार की बीमारियां बढ़ रही हैं! युवा शरीर बनाने के लिए कृत्रिम तरीके और प्रोटीनयुक्त औषधियां लेते हैं, जिससे उनके शरीर पर दुष्प्रभाव पड़ता है। सुंदर दिखने की चाह उन्हें कभी-कभी किसी भी मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर देती है, जो उनके स्वास्थ्य और जीवन के लिए हानिकारक हो सकता है।

ऊर्जा और लक्ष्य

किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में ऊर्जा की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का जो लक्ष्य निर्धारित किया गया है, उसी दिशा में केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय विद्युत नीति 2026 प्रस्तुत की है। इस नीति का उद्देश्य देश के सुदूर ग्रामीण इलाकों तक भी शहरों की तरह निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना है। निस्संदेह, विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह नीति सार्थक पहल है, लेकिन इसके साथ ही केंद्र सरकार को ध्यान रखना होगा कि कई राज्यों में कमजोर आय वर्ग के लोगों के लिए मुफ्त या रियायती बिजली योजनाएं लागू हैं। देश की कुल आबादी का आधे से अधिक हिस्सा आज भी सरकारी विद्युत व्यवस्था पर निर्भर है। मगर आधुनिक सुरक्षा तकनीक के बावजूद यदि बड़े पैमाने पर बिजली चोरी जारी रहती है, तो यह पूरे सुरक्षा तंत्र की कमजोरी को दर्शाता है। दूसरी ओर, महंगाई के इस दौर में गरीब और मध्य वर्ग पहले से ही आर्थिक दबाव झेल रहा है। ऐसे में यदि नई विद्युत नीति के लागू होने से बिजली दरों में वृद्धि होती है, तो उसका सबसे अधिक बोझ इन्हीं वर्गों पर पड़ेगा।

– अरविंद रावल, गोपाल कालोनी, झाबुआ

पारदर्शी सत्यापन

'पुनरीक्षण की परतें' (संपादकीय, 5 फरवरी) प्रासंगिक है। यह सच है कि मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण लोकतांत्रिक प्रक्रिया की शुचिता के लिए आवश्यक है, लेकिन इसकी सफलता पारदर्शिता और निष्पक्षता पर ही निर्भर करती है। बड़ी संख्या में लोगों के नाम बिना स्पष्ट कारण बताए सूची से हटाए जा रहे हैं, तो स्वाभाविक है कि नागरिकों का विश्वास डगमगाएगा। यह नागरिक के अधिकारों को छीन लेने जैसा होगा। चुनाव आयोग का उद्देश्य भले ही अपात्र मतदाताओं को छांटना हो, लेकिन प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए कि एक भी पात्र नागरिक मताधिकार से वंचित न हो। किसी त्रुटि की वजह से उनको सूची से बाहर नहीं किया जाना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय का यह कहना महत्त्वपूर्ण है कि हर समस्या का समाधान संभव है बशर्ते संवाद और सत्यापन को प्राथमिकता दी जाए। समय पर सूचना, आपत्ति दर्ज कराने का अवसर और पारदर्शी सत्यापन ही इस विवाद का स्थायी समाधान हो सकते हैं।

– अमृतलाल मारू 'रवि', इंदौर

शुचिता का सवाल

'कसौटी पर चुनाव' (संपादकीय, 7 फरवरी) पढ़ा। इसमें उठाया गया मुद्दा लोकतंत्र की बुनियाद से जुड़ा है। चुनाव की शुचिता पर प्रश्न उठना ही चाहिए। दुर्भाग्य से कोई भी दल इस पर बात नहीं करना चाहता, क्योंकि चुनावों के दौरान सभी की कोशिश होती है कि किसी भी तरह सत्ता हासिल की जाए। वे लोकलुभावन घोषणाओं से जनता को अपने पक्ष में करने की कोशिश करते हैं। चुनावों के समय मुफ्त उपहारों और योजनाओं की घोषणाओं ने स्वस्थ राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को प्रभावित किया है। मतदाताओं को अल्पकालिक लाभ का लालच देकर वोट हासिल करना लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है। यदि सत्ताधारी दल चुनाव से ठीक पहले आर्थिक लाभ पहुंचाने वाली योजनाएं लागू करते हैं, तो निष्पक्षता पर सवाल उठना स्वाभाविक है। इस पर रोक के लिए स्पष्ट कानूनी ढांचा और सख्त दिशा-निर्देश आवश्यक है।

– वेदिका मनोज सावल, जम्मू

सम्मान और सौहार्द

तमिलनाडु के कृषि मंत्री ने पिछले दिनों कहा कि उत्तर भारत के लोग केवल हिंदी जानते हैं और इसी कारण उन्हें अच्छी नौकरियां नहीं मिलतीं तथा ये तमिलनाडु आकर मजदूरी करते हैं। जबकि तमिलनाडु के लोग तमिल एवं अंग्रेजी भाषा जानने के कारण विदेश में करोड़ों कमाते हैं। यह एक तरह से करोड़ों हिंदी भाषियों का अपमान भी है। भारत विविध भाषाओं और संस्कृतियों का देश है। हिंदी, तमिल, अंग्रेजी या कोई भी भारतीय भाषा हमारे राष्ट्रीय ताने-बाने का अभिन्न हिस्सा है। किसी एक भाषा या क्षेत्र को श्रेष्ठ और दूसरे को निकृष्ट बताना देश में वैमनस्य, राग-द्वेष और सामाजिक तनाव को बढ़ावा देता है। जब इस प्रकार के बयान जिम्मेदार पदों पर बैठे लोग देते हैं, तो उनका प्रभाव और भी घातक हो जाता है। तमिलनाडु हो या उत्तर भारत, हम सभी पहले भारतीय हैं। आपसी सम्मान और भाषाई सौहार्द ही देश की वास्तविक शक्ति है।

– अरविंद जैन 'बीमा', उज्जैन

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

संवाद
जनसत्ता | 10 फरवरी, 2026

कला महोत्सव

ओड़ीशा : खुर्दा में 22वें धौली-कलिंग महोत्सव के मौके पर नृत्य प्रस्तुत करते कलाकार।

बोल

मैं पुतिन के साथ मिलकर चीन-रूस संबंधों का एक नया खाका तैयार करना चाहता हूं। मैं और पुतिन द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने की योजनाओं पर चर्चा करेंगे और बड़े रणनीतिक मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान करेंगे।
– शी जिनपिंग, चीन के राष्ट्रपति

बोल

दुनिया में बढ़ती उथल-पुथल के बीच रूस और चीन में विदेश नीति का तालमेल स्थिरता लाने वाला अहम कारक बना हुआ है। हमारे देशों की संप्रभुता, सुरक्षा और अपने विकास के साझा प्रयासों को मेरा दृढ़ समर्थन है।
– व्लादिमीर पुतिन, रूस के राष्ट्रपति

सम-सामयिक

हरित ऊर्जा : सस्ती, फिर भी खरीदारों तक पहुंच की चुनौती

जनसत्ता संवाद

भारत में सबसे सस्ती स्वच्छ ऊर्जा तैयार है, लेकिन खरीदार अभी पीछे हैं। बिजली के क्षेत्र में भारत दशकों तक उत्पादन की कमी और उचित दाम की समस्याओं से जूझता रहा। हालांकि, इस दौरान विद्युत क्षेत्र में कुछ जटिल और महत्त्वाकांक्षी सुधार भी हुए। आज हम हर साल 40 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता जोड़ते हैं जो ज्यादातर विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में कहीं अधिक है, और सस्ती भी। अब लक्ष्य है बाजारों, संस्थानों और मांग को व्यवस्थित करना।

लगभग 42 गीगावाट नवीकरणीय क्षमता नीलामी के जरिए निर्धारित होने के बावजूद अवशोषण एक चुनौती बन रहा है। वितरण कंपनियां अतिरिक्त स्वच्छ ऊर्जा प्रतिबद्धताओं के प्रति सतर्क हैं। ऐसे में स्वच्छ ऊर्जा की गति बनाए रखने के लिए, खरीदारों की संख्या बढ़ानी होगी।

दो संरचनात्मक बदलावों से यह संभव हो सकता है। पहला कारण, अक्षय ऊर्जा की कीमतों में गिरावट है। सौर ऊर्जा और इनके भंडारण का खर्च औसतन लगभग तीन रुपए प्रति यूनिट माना जाता है। ये कीमतें 12 से 25 साल तक नाममात्र रूप में स्थिर रहीं हैं। ये परियोजनाएं चौबीसों घंटे बिजली की आपूर्ति इसी कीमत पर दे सकती हैं। दूसरा कारक संस्थागत सुधार का परिणाम है। बड़े औद्योगिक और वाणिज्यिक उपभोक्ता सिर्फ नेटवर्क फीस का भुगतान करके पूरे देश में कहीं से भी बिजली खरीद सकते हैं। भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता वृद्धि का लगभग एक चौथाई हिस्सा अब इससे संचालित होता है। यह बदलाव उपयोगिताओं को मजबूत ग्रिड और विश्वसनीयता मंच में विकसित होने की अनुमति देगा, जबकि नई मांग कम लागत वाली स्वच्छ ऊर्जा की खपत करेगी।

सवाल है कि नई मांग कहां से आएगी? पहला रास्ता यह है कि औद्योगिक उत्पादन केंद्र, निर्यात-उन्मुख उद्योग और डेटा केंद्र खुले तौर पर या व्यक्तिगत इस्तेमाल वाले संयंत्रों के जरिए स्वच्छ बिजली प्राप्त कर सकते हैं। इससे दीर्घकालिक लागत प्राप्ति की निश्चितता मिलती है और बड़ी मात्रा में नई क्षमता को समायोजित किया जा सकता है। दूसरा, भारत की औद्योगिक ऊर्जा मांग का लगभग आधा हिस्सा उन संयंत्रों के लिए है, जिसमें बड़ी मात्रा आयातित तेल और गैस से आती है। तीसरा रास्ता यह है कि उर्वरक और इस्पात महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं, लेकिन ये भी आयातित गैस और कोकिंग कोयले पर निर्भर हैं। हाल में हुई हरित अमोनिया नीलामी से पता चलता है कि स्वच्छ बिजली का इस्तेमाल करके उर्वरक उत्पादन में लागत कम आती है। लागत में लगातार गिरावट के साथ, हरित इस्पात एक समान मार्ग अपना सकता है। चौथा रास्ता यह है कि बसों, ट्रकों या मालवाहक बेड़ों का विद्युतीकरण घरेलू स्वच्छ ऊर्जा के लिए एक बड़ा और लचीला मांग स्रोत पैदा कर सकता है। पांचवां- वाणिज्यिक भवनों, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) और घरों की छतों पर लगे सौर ऊर्जा के बिलों को कम करता है। इससे बिजली का नुकसान और सबसिडी का बोझ कम होता है।

अगर दीर्घकालिक स्वच्छ ऊर्जा अनुबंधों को समर्पित वित्तीय मंच और तंत्र के माध्यम से सुरक्षित किया जाए, तो बड़े खरीदार तेजी से आ सकते हैं। छोटे उपभोक्ताओं के लिए लेन-देन आसान बनाने के लिए भारतीय कंपनियों के फिनटेक उत्पादों की जरूरत होगी।

भारत की पहल

वर्ष 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से 50 फीसद बिजली और 2070 तक शुद्ध शून्य के आंकड़े को प्राप्त करना भारत का लक्ष्य है। राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के अंतर्गत वर्ष 2030 तक प्रतिवर्ष पांच मिलियन मीट्रिक टन क्षमता का उत्पादन हो सकता है। वर्ष 2022 में बायोमास से ऊर्जा (जैसे कृषि अपशिष्ट, लकड़ी, ताड़ के पत्ते, कोको शेल, हस्क, और ठोस अपशिष्ट) प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय जैव ऊर्जा कार्यक्रम लागू किया गया था।

शोध

हिमालय : हर साल घट रहा 2,400 करोड़ टन भूजल

जनसत्ता संवाद

हिमालयी क्षेत्र में जिस तरह से भूजल गायब हो रहा है उसकी वजह से भारत सहित क्षेत्र के कई अन्य देशों पर जल संकट बढ़ सकता है। हिमालय को एशिया की जल जीवनरेखा कहा जाता है। यह सूख रहा है। उपग्रह से किए गए अध्ययन के अनुसार, एशिया के ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों में हर साल 2,420 करोड़ टन भूजल गायब हो रहा है।

सबसे ज्यादा गिरावट उन निचले इलाकों में दर्ज की गई जहां आबादी घनी है और सिंचाई का भारी दबाव है। इनमें गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन, सिंधु बेसिन और अमू दरिया बेसिन जैसे क्षेत्र शामिल हैं। हालांकि इसके उलट कुछ ऊंचाई वाले आंतरिक क्षेत्रों में भूजल के स्तर में थोड़ी बढ़त भी देखी गई है।

जाहिर है, जिस हिमालय को सदियों से पानी का अटूट स्रोत माना जाता रहा है, वहां अब भूजल का खजाना तेजी से खाली हो रहा है। वैज्ञानिकों ने आशंका जताई है कि यह संकट करोड़ों लोगों की कृषि, पीने के पानी और पर्यावरणीय सुरक्षा पर भारी पड़ सकता है, क्योंकि यहीं से निकलने वाला पानी भारत समेत दर्जनों देशों की नदियों, खेती और करोड़ों लोगों की जीवनरेखा है। हर साल करीब 2,420 करोड़ टन की दर से भूजल में गिरावट आने वाले वर्षों में भारत सहित दक्षिण और मध्य एशिया के कई देशों के लिए बड़ा संकट बन सकती है।

यह अध्ययन चीन की 'एकेडमी आफ साइंसेज' के 'एअरोस्पेस इंफार्मेशन रिसर्च इंस्टीट्यूट' के प्रोफेसर वांग शुडोंग के नेतृत्व में किया गया है। इसके नतीजे प्रतिष्ठित जर्नल 'एनवायरमेंटल रिसर्च लेटर्स' में प्रकाशित हुए हैं। वैज्ञानिकों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) आधारित नए माडल के जरिए अध्ययन किया है।

इस माडल में कई स्रोतों से मिले उपग्रह के आंकड़े, पृथ्वी प्रणाली के माडल और कृत्रिम मेधा के जरिए वैज्ञानिकों ने पिछले 20 वर्षों (2003-2020) में भूजल में बदलावों का विश्लेषण किया है। इससे न केवल भूजल में गिरावट की तस्वीर सामने आई, बल्कि इसके पीछे के मुख्य कारण भी स्पष्ट हुए हैं।

अध्ययन में पाया गया कि एशिया के ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों के करीब दो-तिहाई हिस्से में भूजल लगातार घटा है। सबसे ज्यादा गिरावट उन निचले इलाकों में दर्ज की गई जहां आबादी घनी है और सिंचाई का भारी दबाव है। इनमें गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन, सिंधु बेसिन और अमू दरिया बेसिन जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

भूजल में बदलाव के पीछे करीब आधा योगदान जलवायु कारकों का है। इसमें हिमनदों और बर्फीले क्षेत्रों (क्रायोस्फीयर) की भूमिका अहम है। बढ़ते तपमान के साथ ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। सबसे बड़ी चिंता यह है कि मानव गतिविधियां, खासकर सिंचाई के लिए पानी की बेतहाशा होता दोहन, भूजल संकट को लगातार बढ़ा रहा हैं।

अगर पानी के इस्तेमाल की मौजूदा आदतें और नीतियां नहीं बदली गई, तो भूजल में गिरावट आगे भी जारी रहेगी। हिमनदों के पिघलने से 2060 के आसपास कुछ इलाकों में भूजल में आ रही गिरावट थोड़े समय के लिए धीमा हो सकती है। लेकिन यह राहत स्थाई नहीं होगी। इसके बाद भूजल के स्तर में गिरावट और तेज हो सकती है, जिससे निचले इलाकों के कृषि क्षेत्रों पर भारी संकट मंडराने लगेगा। शोधकर्ताओं ने अपने निष्कर्षों की पुष्टि हजारों भूजल कुओं के वास्तविक माप और स्वतंत्र आंकड़ों से भी की है, जिससे अध्ययन की विश्वसनीयता और मजबूत हो जाती है।

चीन की 'एकेडमी आफ साइंसेज' के 'एअरोस्पेस इंफारमेशन रिसर्च इंस्टीट्यूट' के प्रोफेसर वांग शुडोंग के नेतृत्व में किए गए अध्ययन के नतीजे प्रतिष्ठित जर्नल 'एनवायरमेंटल रिसर्च लेटर्स' में प्रकाशित हुए हैं। वैज्ञानिकों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) आधारित नए माडल के जरिए अध्ययन किया है। जिस हिमालय को सदियों से पानी का अटूट स्रोत माना जाता रहा है, वहां अब भूजल का खजाना तेजी से खाली हो रहा है।

(फाइल फोटो)

विश्व परिक्रमा

परमाणु हथियार : वैश्विक समझौते की अवधि खत्म

जनसत्ता संवाद

अमेरिका और रूस नई परमाणु हथियार नियंत्रण संधि पर बातचीत के लिए सहमत हुए हैं। दोनों देशों के बीच परमाणु हथियार नियंत्रण से जुड़ा आखिरी समझौता, 2010 में 'न्यू स्टार्ट' संधि के रूप में हुआ था। पांच फरवरी 2026 को इसकी समयसीमा पूरी हो गई, या दूसरे शब्दों में कहें तो इसकी अवधि पूरी हो गई।

वर्ष 1970 के दशक के बाद यह पहला मौका है जब दुनिया की दो सबसे बड़ी परमाणु शक्तियों के बीच हथियार नियंत्रण पर कोई संधि नहीं हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप चाहते हैं कि इसमें चीन को भी शामिल किया जाए। इस बीच रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने संकेत दिए हैं कि अगर अमेरिका, 'न्यू स्टार्ट' संधि के खत्म होने के बाद भी उससे जुड़े वादे निभाता है तो रूस भी ऐसा ही करेगा। इसके बाद जिनेवा में हथियारों से जुड़े सम्मेलन को संबोधित करते हुए एक वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि भविष्य की संधि में चीन को भी शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने चीन पर गुपचुप तरीके से परमाणु परीक्षण जारी रखने का आरोप भी लगाया। चीनी विदेश मंत्रालय ने भविष्य की किसी संधि में चीन के शामिल होने से स्पष्ट इनकार किया।

इस बीच, सिपरी की रपट कहती है कि दुनिया के कुल नौ परमाणु हथियार संपन्न देशों में से लगभग सभी ने अपने परमाणु हथियारों को बेहतर बनाने का काम तेज कर दिया है। स्टाकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (सिपरी) हर साल हथियारों, निरस्त्रीकरण और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा की स्थिति का आकलन करता है। साल 2025 की अपनी रपट में उसने बताया है कि 1980 के मध्य में दुनिया भर में परमाणु हथियारों की संख्या लगभग 64,000 थी, जो कि अब घटकर करीब 12,241 हो गई है। यह गिरावट अब रुकने की कगार पर है और भविष्य में संख्या फिर से बढ़ सकती है।

जानें-समझें

भारत-अमेरिका : अलग कार्यकारी आदेश

ऊर्जा सुरक्षा के साथ नई लीक पर संतुलन

जनसत्ता संवाद

व्यापार समझौते को लेकर भारत और अमेरिका ने संयुक्त बयान जारी किया। इस बयान में तेल खरीद के मुद्दे का जिक्र नहीं था। साथ ही, इसमें शुल्क को 25 फीसद से घटाकर 18 फीसद करने की बात की गई। संयुक्त बयान से इतर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कार्यकारी आदेश जारी किया गया, जो कहता है कि भारत ने रूस से तेल का आयात रोकने, अमेरिका से खरीद बढ़ाने और रक्षा संबंधों को आगे बढ़ाने पर सहमति जताई है। ट्रंप के आदेश में 25 फीसद अतिरिक्त शुल्क (रूसी तेल खरीद पर) की वापसी की घोषणा की। भारत अब नई लीक पर सामन्जस्य बिठाते हुए ऊर्जा सुरक्षा के कारोबारी माडल पर काम कर रहा है।

कार्यकारी आदेश में क्या है

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कार्यकारी आदेश में कहा, 'भारत ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रूसी संघ का तेल आयात करना बंद करने की प्रतिबद्धता जताई है। यह वादा किया है कि वह संयुक्त राज्य अमेरिका से ऊर्जा उत्पाद खरीदेगा। संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ अगले 10 वर्षों में रक्षा सहयोग को बढ़ाने के लिए एक ढांचे पर प्रतिबद्ध हुआ है।' अमेरिकी अधिकारी यह निगरानी करेंगे कि क्या भारत सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से रूसी संघ के तेल का आयात फिर से शुरू करता है। अगर अमेरिकी अधिकारी पाते हैं कि भारत ने रूसी तेल का आयात फिर से शुरू कर दिया है, तो वे सिफारिश करेंगे कि ट्रंप को भारत के खिलाफ अतिरिक्त कदम उठाना चाहिए, जिसमें भारत पर 25% दंडात्मक शुल्क को फिर से लागू करना शामिल हो सकता है। इसके बाद भारतीय सरकार ने रूसी तेल के दावे पर सीधे टिप्पणी नहीं की। विदेश मंत्रालय ने भारत की घोषित स्थिति दोहराई कि 1.4 अरब भारतीयों की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना सरकार की मुख्य प्राथमिकता है।

तेल आयात की स्थिति

अप्रैल से अक्तूबर 2025 के बीच भारत के तेल आयात में अमेरिका की हिस्सेदारी 7.48 फीसद तक बढ़ गई है, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह 4.43 फीसद थी। इसके विपरीत, रूस की हिस्सेदारी समान अवधि में 37.88 फीसद से घटकर 32.18 फीसद रह गई है। भारत का रूसी तेल आयात लगातार घटकर तीन साल के न्यूनतम स्तर पर आ गया है। यह रूस के प्रमुख तेल उत्पादक और निर्यातक रोसनेफ्ट और लुकआइल पर अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद हुआ। कमोडिटी मार्केट एनालिटिक्स फर्म केप्लर के अनुसार, जून 2025 की 2.09 मिलियन बैरल प्रति दिन (बीपीडी) की उच्चतम सीमा से, भारत का रूसी तेल आयात जनवरी 2026 में 1.16 मिलियन बीपीडी तक गिर गया।

पहले से तय सौदे

रूस से आने वाला तेल अगले 8-10 सप्ताह के लिए पहले से ही तय है और यह भारत की तेल शोधन प्रणाली के लिए आर्थिक रूप से महत्त्वपूर्ण है। उसके बाद नए आर्डर नहीं दिए जाएंगे। हिंदुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल), मंगलोर रिफाइनरी एंड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (एमआरपीएल) और एचपीसीएल-मित्तल एनर्जी लिमिटेड (एचएमईएल) ने पिछले साल अमेरिका द्वारा रूस के प्रमुख निर्यातकों पर प्रतिबंध लगाए जाने के तुरंत बाद वहां से तेल खरीदना बंद कर दिया था। अब इंडियन आयल कारपोरेशन (आइओसी) और भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) भी अपनी खरीद धीरे-धीरे बंद करेंगे। सबसे बड़ी खरीदार कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड भी अगले कुछ हफ्तों में 1,50,000 बैरल की खेप प्राप्त होने के बाद रूसी खरीद बंद कर सकती है।

रूसी तेल का विकल्प

अमेरिका से भारत तक तेल भेजने की लागत वर्तमान में पश्चिम एशिया से तेल लाने की लागत से दोगुनी से अधिक है। भारतीय कंपनियां वर्तमान में रूस और पश्चिमी एशिया के मध्यम-खारे कच्चे तेल से परिचित हैं। हालांकि उनके पास लगभग सभी प्रकार के कच्चे तेल को संशोधित करने की क्षमता है। अमेरिकी से आयातित कच्चा तेल हल्का होता है।

(फाइल फोटो)

अमेरिका एक वर्चस्ववादी शक्ति है और उसके पास ऐसी शर्तें लागू करने की क्षमता है। भारत को बहुध्रुवीय विश्व की अपनी दृष्टि और अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को देखते हुए वर्चस्ववादी प्रयासों के प्रति हमेशा सतर्क रहना चाहिए। रूस या ईरान के साथ भारत के तेल कारोबार का अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते से कोई लेना-देना नहीं है। *– मनजीव पुरी, यूरोपीय संघ और नेपाल में पूर्व राजदूत*

भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार (लगभग 120 अरब डालर) और भारत-ईरान के बीच (तेल को छोड़कर) द्विपक्षीय व्यापार (3-4 अरब डालर) में भारी असमानता है। कुल मिलाकर, भारत की रणनीति अमेरिका-रूस और अमेरिका-ईरान वार्ताओं के नतीजों का इंतजार करना होगी। हमें अभी इंतजार करना होगा और सतर्क रहना चाहिए। *– गद्दाम धर्मेंद्र, ईरान में भारत के पूर्व राजदूत*

'पैक्स सीलिका' में न्योता

अमेरिका ने कहा है कि आपूर्ति शृंखला सुरक्षा से जुड़ी 'पैक्स सिलिका' पहल में शामिल होने के लिए वह जल्द ही भारत के साथ हस्ताक्षर करेगा। अमेरिका के आर्थिक मामलों के अवर सचिव जैकब हेलबर्ग जल्द ही भारत की यात्रा करेंगे। अमेरिका ने पिछले साल दिसंबर में 'पैक्स सिलिका' की शुरुआत की थी। यह एक रणनीतिक पहल है, जिसका उद्देश्य एक सुरक्षित और नवाचार आधारित सिलिकान आपूर्ति शृंखला बनाना है। इसमें महत्त्वपूर्ण खनिजों और ऊर्जा इनपुट से लेकर उन्नत विनिर्माण, सेमीकंडक्टर, एआइ बुनियादी ढांचे और लाजिस्टिक तक सब कुछ शामिल है। आस्ट्रेलिया, ग्रीस, इजराइल, जापान, कतर, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, संयुक्त अरब अमीरात और ब्रिटेन इसके शुरुआती हस्ताक्षरकर्ता हैं। शुरुआत में भारत इसमें शामिल नहीं था।

व्यक्तित्व

देविका सिहाग : बैडमिंटन में देश की नई उम्मीद बनी पंचकूला की बेटी

जनसत्ता संवाद

हरियाणा के पंचकूला की 20 वर्षीय देविका सिहाग ने थाईलैंड मास्टर्स जीतकर अपना पहला सुपर 300 सिंगल्स खिताब अपने नाम किया है। शुरुआत में पढ़ाई और खेल का दबाव होने के कारण उन्हें बैडमिंटन खास पसंद नहीं था, लेकिन राज्य स्तर पर अच्छे नतीजे आने के बाद उनका भरोसा इस खेल में बढ़ता गया। बेहतर प्रशिक्षण के लिए बंगलुरु जाना और परिवार से दूर रहना आसान फैसला नहीं था, लेकिन मां के समर्थन और कोचों की मेहनत ने उन्हें आगे बढ़ाया। चोटों और आत्मविश्वास की कमी से जूझने के बाद देविका ने थाईलैंड मास्टर्स में संयम, तेज खेल और समझदारी का शानदार मेल दिखाया। फाइनल मुकाबले में उन्होंने बढ़त बनाई, जिसके बाद उनकी प्रतिद्वंद्वी के चोटिल होने पर खिताब देविका के नाम रहा।

इस जीत के साथ देविका पीवी सिंधु और साइना नेहवाल के बाद सुपर 300 सिंगल्स खिताब जीतने वाली चुनिंदा भारतीय महिला खिलाड़ियों में शामिल हो गई हैं। यह उपलब्धि भारतीय महिला बैडमिंटन के भविष्य के लिए एक मजबूत संकेत मानी जा रही है। देविका ने कहा, 'सिंधु दीदी के खेल को करीब से देखना और उनके साथ अभ्यास करना मेरे लिए बहुत मददगार साबित हुआ। वह अनुशासित और मेहनती हैं और इससे मुझे भी बेहतर प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिली। मैं पिछले कुछ महीनों से उनके साथ अभ्यास कर रही हूं।'

उन्होंने इंडोनेशियाई कोच इरवानस्याह की भूमिका को भी सराहा, जिन्होंने इससे पहले जोनाथन क्रिस्टी और एंथोनी सिनिसुका गिंटिंग जैसे शीर्ष अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ काम किया है। देविका ने कहा, 'वह बहुत अनुभवी कोच हैं। वह बड़ी स्पर्धाओं के अपने अनुभव साझा करते हैं और हमें बताते हैं कि खेल में मानसिक और शारीरिक रूप से क्या बदलाव करने की जरूरत है। हर सत्र के बाद वह इन बातों पर चर्चा करते हैं और मैं उन्हें आत्मसात करने का पूरा प्रयास करती हूं।' देविका ने कहा कि वे चीनी-ताइपे की पूर्व विश्व नंबर एक खिलाड़ी ताई त्जु यिंग और सिंधू के खेल की प्रशंसक रही हैं और उनसे प्रेरणा लेती रहती हैं।

देविका ने कहा, 'इस साल मैंने शीर्ष 30 में पहुंचने का लक्ष्य रखा है। मुझे उम्मीद है कि मैं हर स्पर्धा में अच्छा प्रदर्शन करूंगी।' देविका सिहाग हमेशा कोर्ट पर अपना काम करने और फिर अगले मुकाबले की ओर बढ़ने में विश्वास रखती हैं। जब उन्होंने दिसंबर 2024 में राष्ट्रीय चैंपियनशिप जीती और पिछले कुछ वर्षों में अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सफलता हासिल की, तब देविका ने अपने तरीके से जमकर काम करना जारी रखा।